नेव निवाळी

(कहाणी-संग्रै)

सूर्य प्रकाशन मन्दिर

बीकानेर (राजस्थान)

नेव निवाळी

(कहाणी-संग्रै)

किरण राजपुरोहित 'नितिला'

ISBN :

© किरण राजपुरोहित 'नितिला'

छापणहार	:	**सूर्य प्रकाशन मंदिर** दाऊजी रोड, बीकानेर (राजस्थान) 334001
पूठै रो चितराम	:	गौरीशंकर आचार्य
पैलो फाळ	:	2020 ई.
आखरसाज	:	रोहित राजपुरोहित
मोल	:	दो सौ पचास रुपिया
छापाखानो	:	सत्यं शिवं सुंदरम् प्रिंटर्स, बीकानेर (राजस्थान)

Nev Niwali (Stories)
by Kiran Rajpurohit 'Nitila'

₹ 250

आदरजोग मात-पिता

मदन कंवर अखेराजोत—श्री लालसिंहजी मनणा

रै सारू

नेव निवाळी

काचा कंवळा : 9

तिरसी नेव : 19

सीली संद जमीं : 41

उधड़्यो चंदोवा : 51

चांदा ऊपर कणी : 56

रतन दीवां म्हैल : 62

थळगट मत डाक आगळ : 73

बरंगो तावड़ो : 84

खिरता लेव : 94

सरकती व्हैल : 102

हिरदै न्याळी राख : 111

❖❖

काचा कंवळा

जित्ती वा बारै ही, लोग कैवता कै उत्ती ई जमीं मांय बसै। आपरै मांय रै मांय वा केई रूपां मांय जीविया करै, अैड़ो उण गांव रा, आसै-पासै रा मिनख कैया करता। आ बात कैवती वेळा वै कोई अणदेख्यो सानो करता थकां आपसरी मांय कैवता। सुणण आळा अर कैवण आळा इण साना नै समझ लेवता अर अेक फीकी-सी मुळक न्हाख देवता, जाणै कोई कसक सूं पीड़ नै मैसूस करता होवै। उण साना मांय कोई डोढा भाव नीं हुया करता, ना कोई घणो दुख अर अफसोस। तो ई पण वै यूं बातां करयां बिना नीं रैवता।

वा उडती बात सांभळती तो उण बातां माथै फिक्क-सी हंसी री पिचकारी न्हाख देवती। उण सारू लोग कित्ती बातां करै! ''दूजो कोई काम-काज कोनी कांई? बीजी कोई बात सारू टेम कोनी जको म्हारै सारू टेम खरचै?'' कैवती अर खिल करती हंस पड़ती। पण आं लोगां नै जबान सूं कीं नीं कैवती। उण कनै तो इत्ती वेळा ई नीं ही कै उणां री बातां पर मगज लगावै। बस सुणती अर हवा मांय उडा देवती।

आ ईज उणरी निस्फिकरी लोगां नै जचती नीं ही। लोग चावता कै वा चिंता में रैवै, सोच में जीवै अर अैड़ा ईज सोच-फिकर मांय रैवती-खपती अेक दिन मर जावै। दुनिया सारू दुखिया रैवण आळा लोग दुखियारां नै ईज दाय करता। कोई नै दुखी देखनै जीव सोरो करता अर थ्यावस पण देवता। ज्यूं ई कोई सोरो-सुखी मिनख दीखै, वै दूबळा होवण लागै। उणां सूं औ स्हैन नीं होवै। दुखियारा सूं ईज उणां लोगां री पूछ ही अर इण पूछ सूं ईज उणां रै काळजै सोराई रैवती। नींतर वै ठाला-होय जावता—नाकारा दांई। पछै वै निकामा करै तो कांई करै? कीं घड़णै अर भांगणै सारू तो चाईजै नीं! औ छातीकूटो नीं पाळै तो आ लांबी जूण किण विध पार पड़ै। ठाला बैठा लोगां सारू अैड़ी दांताकिची सूं चोखो कोई काम नीं है। आं बातां सूं उणां नै ऊरमा मिळै। अै बातां केई दिनां तांई लोगां नै रंजकता सूं भरया राखै। अै बातां जबान-जबान घमका देवती उडै। या यूं कैवां कै लोग अैड़ी बातां सूं आखै जमारै आपरो हियरंजण करता रैवै।

कंवळा : *घर री पोळ रै बारलै कांनी दोनूं पासै दीवटिया राखण खातर आळा या थंबा।*

पण वा छोरी अैड़ी नीं ही। आ कांई बात व्ही कै सगळा फिकर मांय रैवै, उठतां-बैठतां फिकर, सूतोड़ा नै फिकर अर जागतां ई फिकर। परभात वेळा पैली बात फिकर री ईज। जिनगाणी फिकर सूं सरू व्है अर फिकर पर आयनै इति व्है जावै। थ्यावस देवण आवै जका वै ओरूं फिकर मांय पजता जावै। चारूंमेर चिंत-फिकर ईज बिखरी पड़ी रैवै। चिंता मांय सांस लै अर चिंता मांय खपै। चिंता करता राजी-राजी चिता तांई पूगै। पछै अैड़ा लोगां नै औ कियां स्हैन व्है कै उण सारू सगळा चिंत्या मांय दूबळा होवता रैवै अर वा अैड़ै मिनखां री फिकर ईज नीं करै। जदकै वै लोग उण सारू कित्ती चिंत्या मांय रैवै। कित्तो समै देयनै दांताकिची करता ऊरमा री खपत करै। हर मिनख कीं-न-कीं कैयनै फिकर करै। उणरी चाल-ढाल, बातचीत, गाभा-लत्ता, उठणो-बैठणो, चालणो-फिरणो, सोचणो-विचारणो, हंसणो-मुळकणो हरेक बात माथै निंगै राखै अर कीं-न-कीं कैवता सोच करै। आ सोच उणां री फितरत है। सोच्यां बिना रैय ई नीं सकै।

पण वा तो साव निसफिकर रैवती!

फगत आ ईज बात लोगां रै दोराई करती रैयी अर इणीज बात रै कारणै वा दुनिया सूं बेखबर, मगन, आपोआप मांय पजती-गमती रैयी... जीवती रैयी। वा आपरै अंतस री दुनिया मांय अपणै आपनै सोधती, बुणती, आपरै जीव मांय ईज मगन ही। निज सूं उणनै इतरो मोह हो, प्रेम हो कै वा सोचती कै म्हैं दुनियादारी रै खटकरम मांय क्यूं गमूं? जीवती जीव क्यूं इण मांय पजूं... ? इणीज बातां रै कारण वा आपरी जिनगाणी रो तानो-बानो कीं दूजी भांत रो सोच्यो अर साच्याणी उण मांय जीवण लागी।

यूं आपोआप रै मोह मांय पजियां आपरै होवण रै अैसास नै जीवती ही अर इणी गतागम मांय कद उण सूं प्रीत बांध ली जको खुद ई दुनिया सूं बेखबर हो। वो निज नै ठाह नीं किण कामां मांय खरच करतो हो कै लोग उणनै चोखो ई कैवता अर भूंडो ई। किण सींव मांय उणरो मिनखपणो हो, औ उणनै ई ठाह नीं अर ना वो इण बात री गिनार करतो।

पण उणरै जीव मांय कांई ठाह कणै छानै-सी दाखल दी कै वा खुद अचूंभो करती रैयी। कियां अेक निसफिकर छोरी अधफिकर छोरै मांय मगन होय उणरो गीत हियै मांय गावण लागी। वा खुद ई खुद माथै रीझगी। अहा! कितरो फूटरो रंग हुवै इण प्रीत रो— इकेवड़ी... इककानली प्रीत उणरै रूं-रूं मांय अेक निरवाळो फुटरापो उकेर दियो। नूंवै रूप सूं वा निहाल व्हैती जावै है। निसफिकर छोरी रो वो अधफिकरो पीव उणरै बेफिकरै जीव नै ईज फिकर रै खाडा मांय धकेल दी। उणनै देखतां ईज अंतस मांय खळबळाटी मच जावती अर वो पसवाड़ै सूं बेखबर नीसर जावतो, बिना कीं मैसूस कर्‌यां। उणनै उणरी धड़क कियां नीं सुणीजै? जकी उणरै मांय सूं निसरती इयां लागी कै जाणै आखी दुनिया

सुण ली है। सकल दुनिया उणरै हियै सागै हिलोळा खावै है। जमीं-आकास तांई उणनै उण वेळा धड़कता दीस्या हा पछै वो अणसुण्यां कियां रैय सकै ?

कॉलेज री हर छोरी उण सूं बात करै पण वा नीं कर सकै। मूंढा मांय मूंग ऊरया होवै जियां ऊभी रैवै। वो बोलै जद टगर-मगर उण साम्हीं देखै। पण उणनै कोई परवाह ई कोनी। वा उणनै देखण में ही सुख मैसूसै। अेकैलाग देखतां अंतस सोराई पावै। सोचै कै वो अणजाण है, इण कारण वा उण पर निजर टिकायां सपनां री सवारी कर आवै। इण में असींव सुख है। पण इण मांय पूरंपूर कसक है। प्रेम मिळाप चावै। फगत अेकालाप सूं सार नीं। अै बातां मथती रैवे उणनै। हजार सोचै अर हजार विचारै। केई घड़ै अर केई भांगै। भांग अर घड़त रो कारोबार चालै। मन केई कारीगरां सागै रळतो सपना री तस्वीरां त्यार करै। मन बडो कुसल कारीगर। हर कला रो खास कलाकार। छिण भर मांय वा चावै जको सीन त्यार कर दै। चावै जको करवावै अर चावै जकी बात उणरै मूंढै कैवाय दै। कल्पना रा कारीगर उण रै सारै में है। पण अैड़ी धड़क सूं उणरी पैली ओळख है। कीं निकेवळी भांत री ईज धुकण लागी रैवै हर छिण, ज्यूं कै आलौ छांणौ धुकै। जीव कीं चावै अर कीं सोचै। कदी अंजाम चावै कदी आराम चावै।

इण दोनूं ई भांत री अेकै सागै री पीड़ सूं वा अब पैला दांई सोरी नीं रैयी ही। आं दिनां मांय वा खुद री इत्ती पारख कर ईज ली जदकै वा आपमें, अंतस रै उंडै कठैई और ई पावंडा भरती जाय रैयी ही। इणसूं वा कित्ती मांय है अर कित्ती बारै, उणनै खुद नै बेरो नीं हो, पण मिनखां उणरै जीव री पाती कियां ई करनै बांच ली ही। उणरो जीव कांई ठाह कद ओ मजमून उणियारै उकेर नै चौड़े-धाड़ै कर दियो। इत्ती बात रो उणनै खुद नै ई औसको नीं पड़्यो। लिफाफा रो रंग देखनै लोग उणरै जीव री तपास कर ली ही अर केई बातां हवा मांय घोळ न्हाखी। वै नित नूंवी बात बणावता अर फूंक देयनै उडाय न्हाखता। बातां च्यार दिस नीं आठूं दिस बे-लगाम उडती। बातां जठै जावती केइयां री नींद हराम कर देवती। केइयां रै काळजै काळियो लोटतो।

आं केई भंतीली बातां-बगत सूं वा दर ई सोरी नीं रैयी। बेकल... उदास ... ठगजोरी-सी रीती ही। आजकालै इयांकली बातां सोचै। इयां सोचतां घणो बगत नीं हुयो। पण वा गतागम मांय पजी है कै जीव री हालत कद तांई इयां रैयसी ? इसै जीव नै कियांकर सांवटै , जोड़ै... ? इयां रैयां सूं उणरो जीव कांई दूजी भांत रो हुय जासी... ? आ खामखयाली उणरी आतमा नै परस करण लागी है... इण सूं सुख पावै, पण इणसूं उग्योड़ी दाझ नीं झेलीजै। अैड़ी मोकळी बातां सूं वा दुमणी होयनै रैय जावै। केई-केई बातां आयनै उणनै चिंता मांय डुबोय न्हाखै जदकै वा तो बेफिक्र कैफियत जीवण आळी है।

इण कारण चांणचकै होयी इयांकली बातां-घातां सूं वा अळघी ई रैवण री चावना राखै। आं घातां-बातां माथै उणनै अबै पतियारो नीं रैयो। इणसूं कीं भिड़क जावै। केई वार

अै बातां जिनगाणी नै छिण भर मांय पलटनै न्हाख दै या पछै जिनगाणी अैड़ी बंद गळी होयनै रैय जावै जठै सूं पाछो घिरणो नामुमकिन। काळी भींत बणनै साम्हीं ऊभ जावै अर जीवण यू टर्न लेयनै दूजो रंग ओढ लै। फेरूं ई अै यू टर्न ठाह नी कांई-कांई बदळाव कर देवै कै खुद नै परस करनै जोवणो पड़ै कै औ जीव वो ईज है या कोई बीजी जीयाजूण मांय जाय परो पूगो। आ जूण केई परतां मांय चालती जावै। जकी सोरी लागै वा परत बेगी सिरक जावै अर जकी दोरी लागै वा परत छाती माथै भारी सिलाड़ी बणनै ऊभ जावै।

...केई बातां याद आवण लागै... केई यू टर्न...

बाळपणै सूं सरू हुया अै टर्न उमर री हर औस्था सूं भिड़ जावै। सड़क माथै भाजती दोय कारां रै भिड़ंत दांई। कोई दिन अैड़ी ईज बात हंसती-रमती बालकड़ी नै जिनगाणी रै कोई नूंवै ईज पगोतियै माथै चढाय दियो हो। जदकै वा तो बाळपणै मांय मस्त मगन साथी-भायलां सागै पकड़म-पकड़ाई रमती चौक री नाळ सूं छात कानी ऊची भाजती जावै ही। आ नाळ कोई हजारूं वार ई भाजती चढी है। ...अणगिण वार। चंचळ फुंदी दांई उछळती न्हाठती-दौड़ती रैयी है। जद पापा अर दादीसा लाड लडावता। भाई-बैनां सूं नित मसखरी-झड़प करया करती तद वा अणूती राजी रैवती। अैड़ा केई बरस वा मस्ती में रैयी। दुनिया रो अंतिम साच आ खुसी ईज ही। वा नीं जाणी अर नीं चावी कै दूजी कोई दिसा, दुनिया, जगत अर जमारो है जको इणसूं चोखो व्है सकै। अस्टपौर रमणो ईज अेक फगत काम हो। सातूं दिन अर हर छिण। साल दर साल। खिन-खिन हंसता कद डगडग-सी हंसी बैय जावती ठाह नीं। सखियां-साथणियां, भायलां-भायां सूं इतर ओरूं कांई है वा कदी नीं सोच सकी अर ना अैड़ी कोई अड़ी ई ही सोचण री। इत्तो फूटरो निसफिकर, भोळो जमारो, पछै मिनख नै भळै कांई चाईजै ?

इण सोच मांय विघन आवतो तो फगत मां री गैरी-ऊंडी निजरां सूं जद वा आसंकै सूं जोवती रैवती जणै ई वा खुद रै छोरीपणै नै बिसरायनै भाजती, रमती या भायलां सूं झगड़ पड़ती। मां फगत यूं ईज कोई न कोई बात नै लेयनै सोच में पड़ जावती अर कीं अजीब ई निजरां सूं बरजती। उण वेळा मां उणनै चोखी नीं लागती। मां उणरी साथण होय सकती ही, पण नीं व्ही। भाई-साथणियां ईज साचा साथी लागता जका उण जैड़ा ईज हा अर उण ज्यूं ईज सोचता। उणरी हां में हां मिलावता। उणरी रजा सगळां री रजा। मां अेकैटग उणनै देखती तो अणमणी व्है जावती। कनै बुलायनै अणसुणीजता बोलां सूं कीं कैवती अर कीं पूछती। वा फगत घूरती, ऊंडो-ऊंडो भाळती। दूजो कीं उणरै पल्लै नीं पड़तो। यूं ईज नीची धूण करयां माथौ धुणनै नकार करती तद मां रै उणियारै सांयती बापरती। आ सांयती दूजी किणी चीज री सोध सारू धकै टंग जावती। हवळै-सी मां रै बास्यां सूं सरकती पाछी न्हाठ जावती चौंवटै साम्हीं, जठै मां री निजरां अर टिचकारी नीं पूग सकै।

केई बार अैड़ो हुयो कै अेक दिन कोई साथण अेक कानी छानी-मानी बैठी लाधती—विलखी, दूमणी सी। रमणो तो अळघी बात। वा जगै सूं उठणो ई नीं चावती। अैड़ी गत दूजी साथणियां रै समझ सूं बारै व्हैती। केई नेवरा-मनुहारां करयां पछै ई वा नीं रमती तो अेकर तो ग्रुप सूं बारै व्है जावती। पण दोय-चार दिनां पछै ईज पाछी व्हैती जैड़ी व्है जावती। आ बात फगत दो-चार बार ईज दोवड़ाईजती। पछै ठाह नीं क्यूं वा घर सूं बारै आवणो कम कर देवती। कीं दिनां पछै पैला जैड़ी बालक नीं लागती। कीं स्याणी-सी व्हैती जावती, जाणै उमर में अेकाअेक केई बरस जीय लिया होवै। पैला जिसी बेफिकरी, मस्ती नीं रैवती। हरेक सूं बात करतां ई संकीजती। वा अळूझा में पड़ जावती कै चाणचकै ई इणरै कांई होयग्यो? जिण साथियां सूं बेधड़कै हंसती बात करती उणां सूं आजकाल टाळा क्यूं लेवै? वै साथी ई बाको फाड़्यां छोरयां रै वैवार माथै हैरान होवता। इण बाबत बूझणै सूं अेक ईज जवाब मिळतौ कै—अजै थूं नीं समझै अै बातां!

वा सोचती 'अजै' मतलब? अजै नीं तो कद? अर अब कांई है जको नीं समझ सकै? थूं अर म्हूं हां तो सांयना, पछै कांई कारण है? वा जिरह सारू उळझणनै कीं बोलण सारू मूंडो खोलती जित्तै साथण उणनै पाळा मांय खांच लेवती। उण भायली नै स्याणैपण री अबखी डगर पर छोडनै वा पाछी बाळपणै रै समुंदर मांय गम जावती। अै बातां बेगी ईज लारै रैय जाया करती। टोळी हवळै-हवळै पांतर जावती अर दिन-महीना आपरी गत सूं धकै धिकता।

अेक दिन इणीज सुख अर खुस रै समुंदर री ल्हैर दांई दौड़ती पगोतियां चढणै रो ताब कम पड़तो-सो लखायो। आज दिनूगै सूं ई पेट सूं कीं नीचै कानी हवळै-हवळै दरद चसै हो। अैड़ो दरद जको बेचैन नीं करतौ, पण जक ई लेवण नीं देय रैयो हो। छानां-मानां बैठण सूं दरद बधतो लागतो, पण कोई खेचल सूं थोड़ो-सो कम मैसूस व्हैतो। उणरी सदा आळी हरकतां उण मीठै दरद रै कारण थम तो नीं रैयी ही, पण रोज आळी उछाळ नीं लेय सकी। कीं हो जको उणरी पांख्यां नै रोक रैयो हो। वा बिसरायनै न्हाठती-भाजती जावण री पूरी खेचल मांय ही, पण उणनै कीं उतरतो-सो लाग्यो, जाणै दरद री सीळ सागै सांप री कांचळी छूटती जावै है। डील री अेक परत जाणै धरती हिलै अर रिसै ज्यूं रिसती जावै है। पेट मांय... पेडू मांय दरद भरी कीड़ियां उणनै सावळसर नीं रैवण देवै। भूलतां-भाळतां ई ठाह नीं क्यूं ध्यान उठै ईज जावै। केई बार लारै जोय-जोयनै देखती रैयी कै कांई छूट रैयो है। रै-रैयनै भींनो-सो लागतो अर वा अपरोको मैसूस करती ।

बैठणो चावती पण ठाह नीं क्यूं वो भींजापणो, वो रिसाव विसांई नीं लेवण देवै। बैठ्यां सूं स्यात धरती ई भींज जावैला अर दूजां री निजरां मांय आय जावैला। अेक डर-सो जीव मांय पैठतो जावै हो। आ किसी बिमारी हुयी आज? कियां कैवै कोई नै? कुण

है जिणनै कैय सकै आ बात। जीजी ? मां ? बडी मां ? काकीसा या साथणियां ?... केई नांव है पण उळझण अजब है। ठाह नीं क्यूं लागै कै आ बात कोई नै नीं कैय सकैला। आ बात हुयी ईज तौ पैली वार है!

छाळा-दुखणियां सूं रस्सी रिसै, खून आवै पण उण जागां अैड़ो तो कठैई कीं नीं हुयो, तो पछै औ कांई रिसतो जावै है ? बिना घाव-चोट रै ई अेकाअेक कियां दरद हुवै अर तन ढीलो-ढालो व्हैतो जावै। कीं ताबै नीं आवै... कीं समझ में नीं आवै। ध्यान रम्मत में नीं रैयो। बार-बार भींजापण सूं वा बेचैन होवण लागी। नीं बैठतां बणै नीं ऊभतां अर नीं भाग-दौड़ सळै आवै। हर पांवडो अजब-सो उठै। मन करै कै हिलकै ई नीं, बस माचै पर जायनै पड़ जावै। अेकदम छानी-मानी सूती इण दरद में डूबनै रैय जावै। ना तो अब बोलणै रो मन रैयो अर ना ई रमणै रो। फराक नै हाथां सूं भेळी करी अर लारै हाथ फेरनै मैसूस करणो चायो कै कीं गड़बड़ तो नीं है। हर रमत री पक्की खिलाड़ी है, पण साथ आळा आज उणनै साव आळसी करार दैयी है।

''मांदी व्है ज्यूं रमै है!''

औ सुणतां-सुणतां उण रो मन अब रोवणखारो होवण लागो। इण कारण ईज आज थाकती जावै है। दोय बर गुसळखाना में जाय जोयो तो डरगी।

ओह! यूं क्यूं ? अैड़ो पैला कदी नीं हुयो। आ कणै चोट लागी... ठाह ईज नीं पड़्यो! अब कांई करै ? अठै चोट अर खून री बात किणनै अर कियां बतावै ? कैवतां ई लाज-सी आवै है... क्यूं ? चोट रो कैवतां लाज क्यूं ? घाव, पीड़, दरद तो कठैई व्है सकै तो आज कैवूं क्यूं कोनी कोई नै ? इण जगै रै घाव सूं चुप क्यूं हूं ? थोड़-सी पीड़ सूं सगळा घरआळां नै नचावण आळी आज यूं बोलीबाली क्यूं स्हैन करूं हूं ? दरद री जगां अर बात कैयनै सदां दांई रोळा क्यूं नीं मांडिया अर क्यूं अजेस कोई नै भणकारो ई नीं पड़ण दियो।

उळझती जावै है । दोय-चार घंटा मांय ई जाणै बदन खिंड्यो-बिखर्‌यो होयग्यो। सावळ क्यूं नीं हुवै पाछौ ? कांई ठाह कितरी जेज इयां भींनो-भींनो लागतौ रैवैला। कियां संभाळै खुद नै... इण अजाणी, अणचायी जगै री पीड़ नै। अणमणी-सी रमत में लागण री खेचल करै, पण जीव गतागम मांय पजियो है।

मन उणी पीड़ मांय बर-बर धंस जावै। मांयली अेक-अेक हलचल रो भान हुवै। नसां टूटती सी चर्र-मर्र आंटीजै, सरणां सूं पग झन्न-झन्न करै, पेढू पर चसर-चसर कीं चालै अर... अर... अेक निवायो पाणी ऊंडै सूं खाली हुवै। अेक थंब ऊभ जावै। निजरां अर हाथ सगळां सूं निजर बचायनै लारै देखण री खेचल करै। दिनूगै सूं उळझती, पीड़ रै अळूझा में उळझी कीं घड़ी बिसांयत लेवण सारू भींजपण सूं अणकणाई रै कारणै बैठण

लागी, पण डाम आवण रै डर सूं अधबैठी ईज ऊभी व्ही अर दूजै ई छिण नाळ रा पगोतिया पगां हेठै सूं नीचा भाजण लाग्या अर मांय सूं अेक ऊना पाणी री ल्हैर डील सूं बेदखल होवती पगां तांई पूगी... मुड़नै जोयो तो मां संका री गैरी निजरां अर डर सूं जोवती दीसी... अर दूजै ई छिण वा खाताई सूं उण साम्हीं आवती निंगै आई।

''नंदिता...! ढब तो... अठी आव...'' हवळी-सी उण पुकार मांय ठाह नीं कित्तो तेज, मरम हो कै उणरा पग उठै इज थमग्या।

चार-चार हेला नै अणसुण्या करण आळी आज अेक बोल सूं स्याणी ऊभी है। कदैई ऊंचै सुर में बात नीं करण आळी मां आज ई धीमै इज बोली ही, क्यूंकै दादोसा-बाबोसा घरै ईज हा, जिण कारण घर री बींदणियां आंछै बोलणो तो अळघो, आंछो सोचै ई कोनी। इण धीमै सुर रो वा मोकळी वार फायदो उठायो है। पण आज पगोतिया उणनै मां रै दांई झालनै ऊभा है ज्यूं कै मां री डावड़ी है। वा सोच्यो कै आज ई मां कीं पूछ नै छोड दैई सदा ज्यूं? ना... आज वा छूटणी नीं चावै। तन अर मन दोनां सूं वा रिस रैयी है— टपो-टपो। रेला-रेला बैवती जावै है खुद सूं बारै। मां नै नैड़ा आवतां देख लाग्यो कै मां रै खोळा मांय इज सरण लेय सकूं... मां नै कीं कैय सकूं स्यात... मां ईज समझ सकै म्हारी बात... म्हारी पीड़! ओऽ मां!! आज आप सदा सूं दूजा अर जीव रै घणा नैड़ा लागो हो। मां! मां!! ... अंतस मांय गूंज्यो अर मां उणनै खुद मांय सांवटनै छाती सूं चिपाय ली। वा रेत री ढेली दांई मां री बास्यां मांय बिखरगी... आपरी पीड़ अर अळूझा मां नै सूंप दिया। उण घड़ी मां रो रूप, मां रो चिंत्या सूं भर्‌यो मुखड़ो, गाभां सूं आवती वा भीनी सौरम जकी नैनी ही जद सूंघ्या करती, बिना सवाल रो उणियारो अर भरोसै सूं भर्‌योड़ी वै कंवळी-कंवळी बास्यां, आज जाणै कंवळापण मांय उण सारू मीनार री मजबूती लियां ऊभी है... उणरी सरणगाह है... मां अणूती व्हाली लागी अर वा खोळा मांय लुकती जावै है। इत्तो भरोसै आळो दूजो कोई जीव नीं है दुनिया मांय...। तेरहा बरस री उण कन्या नै आपरै ओढणा सूं यूं ढक्यो जाणै अेकर फेरूं आपरै मांयनै लुकोय लेसी। ठाह नीं किणसूं उणनै लुकावती साळ मांय लेयगी अर वा अजबपणै सूं दब्योड़ी गऊ दांई चालती गयी... बगर कोई सवाल रै।

सवालां सूं मिनख नै गैलो करण आळी, रमत मांय सगळां सूं पाकी खिलाड़ी, झौड़ मांय सांयनिया रा कान कतरण आळी, पिदावण में उस्ताद, आज मेमनो बणी मां रै खोळै मांय माथो घाल्यां छानी-मानी पड़ी है। बस अेक ईज बात हियै मांय ही कै मां नै कियां ठाह पड़्यो कै वा दोराई सूं झरै है? मां कान में कीं कैयो। सिनान करायो... अणूती लाज आई... पण लाग्यो कै मां सूं कांई लाज... बाळपणै मांय तो हमेस ही मां ईज सिनान कराता हा। पण इण चार-पांच बरसां मांय वा खुद ईज नहाया करै जद सूं उणनै लाज आवण लागी है। आज ई वा छाती आडा हाथ राख दिया।

खासा दिनां सूं छाती उणरै लाज री कारण बणगी है। साची पूछो तो केई दिनां सूं मन पजोपज में है। उभरतो उभार सुहावै कोनी। कोई साम्हीं देखतो तो लाज आवती। हाथ राखती बटण टमटोळण रै बहानै सूं। दौड़-भाज में कीं संको आवण लाग्यो। आडा हाथ राखनै कद तांई भाजै। मन करै पैलां दांई बेलौस दौड़े, बिना कोई संकै रै। फराकां ई गोडा सूं नीचै सारू बार-बार खांचणी पड़ै। मां नवी फराक नी सिंवावै। केई वेळा जिद करी नूंवी अर लांबी फराक सारू, पण कान ई नीं देवै। घणी जिद करण सूं घाघरै-जंपर साम्हीं आंगळी करै। घाघरै-जंपर साम्हीं जोवै जद उणनै लागै कै औ कोई दूजा जमारा रो खोळियो है। डर-सो लागै उण वेस सूं। जीजी औ वेस पैरै जद फूटरा लागै। गोरो-निछोर गोळ मूंडो, काळी भंवरा जैड़ी आंख्यां, पण वा खुद सारू वो वेस नीं चावै। मन मांय आ तमन्ना नीं है। घणकरी अेकांत मांय वा भगवान सूं अरज करै कै कियां ई करनै छाती रो सोजो रोक दै। सायनां री निजर केई बार अठै पड़ै तो उणनै रीस आवण लागै। अठै क्यूं देखै? लुकावै कियां? कदी मन करै जाडो खेसलो ओढलै अर न्हैछो कर लै। पण हर बगत नीं लुकाय सकै। रमती बगत ई सावचेती राखणी पड़ै। बांडी बांहा री फराक अबै कीं अणखावणी लागै है। खाकां हेठै काळा रोयां दीसता...

...मां नै आज कैवणी चावै, पण मां तौ ठाह नीं किण सोच मांय गुम व्हियोड़ी उणनै सिनान करावै है। नाळी साम्हीं जोयो तो लाल रंग री धार रळती बैवती दीसी। सवालिया निजरां सूं मां नै पूछण सारू हिम्मत करणी चायी, पण व्ही कोनी। वा अब सांयत है। मां है नीं... सो क्यूं सावळ कर देयसी।

साच्याणी मां जाबतो करयो अर उणमें कीं सोराई वापरी। रुई अर कपड़ो हाथ मांय लेयर जाबतो करणो सिखायो... केई बातां कैयी... उणनै लाज, संको आवतो रैयो, जावतो रैयो अर रीस भी आई कै ओ आज यूं क्यूं हुयो। ...हर महीनै आ बिमारी व्हैला, औ सुणनै वा धम्म करनै हेठै बैठगी। अेक दिन मांय ओ हाल हुयो है तो हर महीनै औ कियां झेलीजसी... अर कद पार पड़सी।

मां मुळकी, ''...गैली ...इयां चिंत्या में क्यूं है... आ बिमारी नीं है। अेक खास जरूरी बात है जकी हरेक छोरी में इण उमर मांय हुया करै अर होवणी ई जरूरी है। वेळासर आ नीं हुयां घणी चिंत्या री बात है। इण बात री ईज उडीक ही... इणी कारण म्हैं थनै नित कीं सवाल करती रैयी ही।''

''पण मां, म्हनै चोखो नीं लागै...'' वा रोवणकी होयनै कैयो अर गोडां बिचाळै मूंढो घालनै साची ई रोवण लागी।

''अरे... म्हारी लाडली नंदिता! ...इयां नीं रोवणो... औ तो हर छोरी साथै हुया करै। ...अर म्हैं हूं नीं, थूं क्यूं चिंत्या करै... औ कित्तो जरूरी है, औ तो टेम आयां ठाह पड़ैला... अजै नीं...''

सुणतां ई वा माथो ऊंचो करयो, फेर 'अजै नीं' सबद आयो। अजै नीं तो कदै? अर वो समै कद आवैला? हाल कांई-कांई बच्या है जको उणनै टेम आयां ठाह पड़सी? इण दोराई सूं आज सुबै सूं दूमणी है। वा उसांस न्हाखती मां साम्हीं जोयो।

मां उणनै जोवती रैयी। खुद रो टेम याद आवण लाग्यो... मां याद आवण लागी... मां साची कैवती ही कै बेटियां नै कितरी कंवळै भांत सूं संभाळणी पड़ै... अजै नीं, टेम आया ठाह पड़सी... आज औ टेम आयग्यो। म्हारी नंदिता आज उणीज पगोतिया माथै ऊभी है अर वा ई कोई दिन इणी भांत कंवळा मेमना दांई नाजुक बेटी ऊभी ही मां रै साम्हीं अर आज वा खुद आपरी बेटी रै कंवळापणै नै सांवटती कठोर भींत दांई स्यारो दियां ऊभी है। अेक जुग रै बदळाव साम्हीं वा निंवण करै... पीढियां नै निंवण करै... अर धकली पीढ़ी नै सनेव सूं सांवट लियो खुद मांय।

''...कोई बात व्है तो म्हनै कैवणी बेटी! म्है समझूं थारी हर पीड़ नै...''

सुणतां ई वा मां नै कसनै भींच ली। अंतस औ ईज सुणणो चावै हो। औ ईज पडूत्तर हो उणरी हामी रो।

मां, दादीसा, भाभीसा, जीजी अर केई बडेरियां री हजारूं-हजार सीखां री बातां उणनै उदास कर देवती। कित्ती बातां वै बतावती। हर लुगाई कनै न्यारी बात, न्यारी सीख। ओह! मुलक भर री सीखां कांई उण सारू ईज है? वा पाछी फुंदी होवणौ चावै पण पाछो पैला ज्यूं क्यूं नीं हुयीजै? वा उडाण कांई ठाह कठै गमगी? कांई बात है जकी रोकै उणनै। ठाह नीं कठै सूं धोबा भर-भर लाज उण माथै कोई फेंकतो जावै है। वा लगोलग दबती जावै है। टोळी सागै केई बार रमण री खेचल करती, पण पैला वाळी ताब नीं आवती। संको-सो बड़ग्यो। जिण सूं इतरी बेबाकी सूं बात करती, झगड़ो कर लेवती, आंटी घालनै हेठै पटक देवती, उण छोरा साम्हीं अब आंख मांय आंख घालनै नीं जोय सकै। झट निजर अठी-उठी सरक जावै। अर वो आपरी भारी हुवती अजब-सी भूंडी हंसी हंस पड़ै। वा सोचती कै औ काल रो छोरो इयां ऊंट जियां कीकर हुयो है? केई छोरा टोळी आळा पैलां तो भरपूर लांबा अर पतळा हुया अर अब मुंबई कमावण नै गया परा।

पूरी म्रिस्टी मांय ई बदळाव हुवै है। औ कांई हुयग्यो पूरी दुनिया नै अेकै सागै। देखो जकी चीज बदळ्योड़ी लागै। हर चीज बदळ रैयी है। हवा, पाणी, निजर, अंतस तकात बदळतौ निंगै आवै... जद वा विलखी अेक कानी बैठी रैवती तो नैनी साथणियां इणरो म्यानो पूछती... चाणचक ई मूंडा सूं निसर जावतो कै ''थूं नीं समझैला अजै'' ...सांमली भायली मांय उणनै खुद रो अक्स दीसतो... वै ईज सवाल दीसता... वा अेकटग उण मांय नंदिता नै देखती... कैवती, ''थोड़ा-सा दिन है बावळी! रम लै मन भरनै... जी भरनै... पछै तो...''

इत्तो कैवती अेक उसांस न्हाखती, पण वा छोरी अबूझ दांई जोवती डाम रै डर सूं पाछी पाळा मांय उड जावती।

हवळै-हवळै सांयनी-साथणियां री टोळी कमती होवण लागी। घणकरा उणियारा अबै नवा हा। जिण टाबरियां नै वा गोद्यां रमावती वै अबै चौंवटा मांय रस्सीकूद रमण लागी है। दिन पर दिन वा विलखी व्हैती गई अर पाछी फुंदी बणनै वायरै ज्यूं उडणै री, ल्हैरावण री इच्छा अर मंसा दोनूं कमती व्हैती गई। वा नित नवा अचूंभा देखण लागी। साथै आळा छोरा मांय ई कांई बदळाव आयो कै वै उणरो नांव लेवता अटकता अब। सगळा रै ई नाक नीचै सांवळोपण उभरण लागग्यो। साद ई खासो भारी अर खरखराटी आळो हुयग्यो लागै।

चावतां थकां ई पैला दांई बात नी करीजती। सगळा ई आपसरी मांय संकीजण लागा। उणनै लाग्यो कै वा अबै पैला दांई कदैई नीं होय सकै। निसंक... मस्त... भोळी... निस्फिकर...। अै बातां उणनै अेक अजब दुख सूं भर देवती। तद लागतो कै साच्यां ई उणरी जूण सूं सांप री कांचळी-सी उतरती जावै है। वै दिन उतरता जावै है। वा टेम गमती जावै है। वै बातां कदैई पाछी नीं बावड़ सकै। उणरी साथणियां गुड्डू, चंदा, भूरी, बिंनू, ललिता, वंदना सगळी अबै घरघुसैड़ी व्हैती जावै है। आखो दिन धींगा-मस्ती करण आळी छोरियां आजकालै घर मांय बुहारी लगावती दीसै का रोटियां पोवती दीसै।

यूं टर्न आपरो काम करनै दूजै रस्ता माथै चलाय दी ही जठै सूं जूनो रस्तो दिखतो रैवतो अर जीव बाळतो। हाथ धकै करनै उणनै सोच तो सकै, पण उण लारै रैया रस्ता माथै चाल नीं सकै।

...उमर रो डिवायडर काचो कोनी रैयो।

मन, तन अर उमर—सगळा कीं-न-कीं भांत री पलटी खाई अर उणनै नवी दुनिया मांय पूगाय दी। मन री केई परतां सिरकती ऊपरै आई। मन री टैक्टोनिक प्लेट्स पर कीं बाता उघड़ण लागी अर वा नवी भांत री हुवती गई। अपनै आप मांय कीं रचती रैयी। दुनिया री परवाह नै उणरो मन परै सिरकावतो गयो अर वा नवी धुन मांय रमती गई।

उण दुनिया मांय अधफिकरै छोरै पर निजर पड़ी अर...

❖❖

तिरसी नेव

कॉलेज री छुट्टी होवतां ई गाडी-स्कूटरां री रोक्योड़ी नदी बारै उळीच पड़ी। कार-स्कूटी, स्कूटर, लूना पर छोरयां सवार यूं फुर्रर होवती दीसी जाणै पुसप रै झाड़ सूं फुंदियां-तितलियां रो फव्वारो छूट्यो व्है। पलक झपकतां ही रंग-बिरंगी सौरम री बयार पाणी रै रेलै पर सवार आ जा-वा जा। छोरयां री कॉलेज होवो या स्कूल, पल-छिण में दरसाव अैड़ा रंग बदळै कै मिनख ठग्या-सा ऊभा जोवता ईज रैय जावै। रंगीन चिड़कोल्यां रो झूलरो हड़डड़ करतौ नीसरै अर आपरै मादा होवण रै गुमेज सूं भर्‌यो उडतो जावै। अर जे आसै-पासै छोरा-छपाटा दीस ज्यावै तो उणां पर कीं दूजी ई तरन्नुम छा जावै। आ ईश्वर री ही लीला है। उण टोळ्यां सूं कदै खिलखिल करती हंसी झर पड़ै, तो कदैई खुद ई चुप्प लगायनै आंख्यां री लोच सूं केई बातां सिरकाय दै। अैड़ै झूलरै साम्हीं लगोलग देखणो हीमती काम अर निजरां फेरणो मानखै सारू घणो ई दोरो।

कोई-कोई छोरयां इयां छूट भाजै कै जाणै कैद सूं नीसरनै बारै धावै है। इण सगळां रै बिच्चै कीं छोरयां सुस्त चाल सूं बारै आवै ज्यूं कै आजादी सूं छूटनै कैद में जावै। उणां खातर घर रो मतलब सोराई सूं थोड़ो कीं नैरो होय सकै। आं बातां नै समझणो अबखो है। हर घर री न्यारी रामायण। पण उणरै घर रो भाव छोरी रै उणियारै पढ्यो जा सकै। उणरी जोवणी, बात-बंतळ, बैग-पर्स नै झालणै री ताब, चाल री गति सूं अणभवी जाण सकै कै घर अर घरआळां सारू उणरो कांई भाव है। जकी जितरी उमाव सूं भरी उणरो घर बित्तो ई प्रेम सूं भर्‌यो। जकी जितरी कमती उमायी उणसूं लागै कै घर कम खांचै या कदाच बारै धकेलै या दूजी कोई अबखायी।

केई छोरयां मोड़ै तांई कॉलेज मांय ईज धूम-धड़ाका करती। अै घणकरी जींस-पैंट आळी अर बडा ऑफिसरां री बिगड़्योड़ी परीयां गिणीजती। आं रै बिचाळै जे कोई सलवार-सूट आळी होवती तो बेमेळ लागती। सही टेम पर कॉलेज सूं निकळण आळी नै समझणी-स्याणी मान्यो जावतो। अै कायदा कुण थरपिया, औ तो ठाह नीं, पण वो समै अैड़ो ईज हो। पण इण हेरफेर रै पछै ई हर छोरी आपरी जूण रौ अेक फूटरो दिन तो बितायो

नेव निवाळी : *थेपड़ा या काचै घरां री छात सूं बण्या छाजा जिण सूं मेह-बरसात रो पाणी झरै।*

होवै ईज है। कॉलेज रै दिनां रै पछै हरेक छोरी री जिनगाणी पसवाड़ो फोरै अर वा किणी नवै ट्रैक पर चाल पड़ै। नवै रस्तै पर जिनगाणी पछै कैड़ी बीतसी, आ भविस रै गरभ में है। इणी कारण कियां ई हुवो, छोरयां कोई न कोई तरै सूं इणनै भुनावणी चावै। मौजां लेवणी चावै। वै परीयां कीं न्यारी हुया करै जकी जिंदगी नै टुकड़ां मांय बांटै अर हर टुकड़ा-बटका रो भरपूर स्वाद लेवै। जिंदगी नै गुठली दांई चूस-चूसनै जीवै। पण अेक हिस्सा नै दूजां सूं हिचका नीं खावण देवै।

कॉलेज रै फाटक बारै ट्रैफिक जाम जैड़ी हालत है। छोरयां रो कॉलेज है तो छोरा-भंवरा रो भीड़ो अर अर उणां री तरंगित होवती निजरां नीं होवै, अैड़ो तो असंभव है। होवणा ईज चाईजै। छोरयां री कॉलेज में छोरा नीं होई तो कांई कोर्ट-अस्पताळ में छोरा लाधसी! फूलां पर भंवरा री तो रीत है। जुग-जुग री ईज नीं, बल्कै प्रकृति री। औ रुझान दुनिया रै ठीक-ठाक चालण रो संकेत है। जिण तरै धरती अेक आंगळी टिकाव माथै टिकी है उणी तरै धरती माथली दुनिया अेक आंगळी टिकाव सबद जुगल 'नर-नारी' पर टिकी है। अर औ जुगल तूटणो, बिखरणो या अळघो तकात ई नीं हुवणो चाईजै। इण मांय चिन्नी'क फौरा-फौरी ब्रह्माजी री बणायी धरती पर भूचाळ लाय देवै। इणी कारण प्रकृति सगळां नै 'लीला रै आणंद' रो सांवठो हक दियो है। जे कोई मिनख जमारै आयनै अैड़ी देव ललचाऊ देह पायनै ई इण इंद्रियां रो उपभोग-भोग नीं करै तो जमारो बेजां है, धूड़ है। तो पछै इणी बात सूं जुड़्यो दरसाव जे कॉलेज रै बारणै दिखै तो कांई अबखायी... ?

कॉलेज री छुट्टी होयी है।

कॉलेज रो फाटक जद खासा रंगबिरंगा कुरपण उळीचनै बारै उडाय दिया, खासा छोरा आप-आपरी मंगेतर या प्रीतेरण्यां नै लेयनै उड गिया। उण पछै जकी छोरयां बची, वै साव स्याणी। मां री धीवां... राजल बेटियां। आपरै पापा, भाई या ड्राईवर अर लोकल बसां नै उडीकती ऊभी रैयी। अठीनै-बठीनै आपरै घरआळां नै जोवती, सोधती, औ पुख्ता करती रैयी कै वै पैला आळी जैड़ी चंचल तितलियां नीं है। स्याणी अर संस्कारी है। यूं तो पैला आळी ई संस्कारी है, भरोसैमंद है, पण कदै संस्कार हेठै दब जावै अर मोह-माया रो बॉण्ड तगड़ो होयां पलड़ौ कीं ऊंचो-नीचो हो जावै। इण सतरंगी उमर मांय थोड़ो-कीं तो खटै ईज है—आटै में लूण जित्तो। औ वाजब है। होणो भी चाईजै। छेवट अेक इंसान अेक ई खोळियै मांय जमारै रा सगळा चैप्टर जीवै तो कांई छटपटायनै अधमर्‌यो नीं हो जावै! इणरो मतलब औ मत काढजो कै वै आपरै मायतां रै माजनै मांय धूड़ घाल देयसी। ना सा, ना! वै फगत जूण रा आणंद रा पल भोगै अर टेम आयां भूल जासी। कॉलेज रै इण समै री बातां नै गांठ बांधनै सिला हेठै धरनै पांतर जावैला अर जिनगाणी नै सुख सूं बितावैला। औ जवानी रो अणलिख्यो कानून है। दुनिया री घणकरी सज्जनता इण बात पर ईज टिकी है। मानो या न मानो।

...वामा कांधा पर लटकायोड़ै बैग नै झालती नीची धूण घाल्यां हवळै-हवळै बारै आई। दुनिया सूं बेखबर वा सड़क रै डावै-जीमणै छितरयोड़ी भीड़ में अळघै तांई निजर रा घोड़ा छोड्या अर उणी टेम पाछा खांच लिया। ...घरै बेगो ईज पूगणो है। मां रोज ताकीद करै कै बेगी घरै आईजै। इयां ना ताकीद करै तो ई वा तो बेळासर सदां ई घरै पूग जावै। मोड़ो करणै रो कोई कारण उणरै जीवण मांय है कोनी, क्यूंकै वा महास्याणी बेटी है अर मन रा घोड़ां नै टेम आयां ईज लंबरावैला। बेटेम, बेबात करणी उणनै दाय कोनी। सकल जीवण नै अेक संस्कार रै भांत जीवणी चावै, जठै सो क्यूं सही-सही होवै। आंगळी उठाव काम उणनै दर ई जचै कोनी।

वामा फूटरी-फर्री है। गेहूंओ गैरो वरण अर लांबा केश है। उठाव लेवतै नाक अर रंगभीना होठां पर आंख्यां घणी मींची लागै, पण नाक-होठ उण कमी नै ढक देवै। औ पक्कायत है कै कोई उण साम्हीं जोवै तो वा निजर उणरै दब्यै रंग पर नीं, पैली निजर नाक अर होठां पर जावैली अर देखण आळो बंध जावैला। कोई छोरो उणनै देख्यां बिना धकै नीं बध सकै, इतरो ताब तो है उण में। मां-बाप री महास्याणी बेटी होवण री अेक निरवाळी छाप अर नारी सुभाऊ झिझक उणरै रूप मांय कीं बधापौ करै। क्यूंकै स्याणो छोरो होवो या लफंगो छोरो, प्रेम पींगा दस जगै न्हाखै पण छेवट अैड़ी छोरयां नै ईज दाय करै अर जिम्मेवारी आळी पूरी जूण उण जैड़ी सागै गुजारणी चावै। वै औ मानै कै सांयती आळी जिनगाणी तो अैड़ी जोड़ीदार सागै ईज है, बाकी मौज-मस्ती, प्रेम-क्रश सै बातां कोई समै री चावना है, जकी रुत गयां जावै परी। इणी कारण फेयर एंड लवली अर ब्लीच रै इण जुग मांय उणरा मां-बाप साव नचींता है।

अठी-उठी निजर टपकावती जिणरी तलास में वा है वो आज फेर निजर नीं आयो। इण साल वो जित्ती छुट्टियां लेवै, लारलै दो सालां में कदैई नीं ली अर आजकालै तो मोकळी ई छुट्टियां करण लाग्यो है। अब तो ओळमो देवणो पड़सी। पण आज फेर ई लाल रंग री मारुति आवती दीसी, जिणनै अळघै सूं ओळख ली ही अर नैड़ै आयां देख ई लियो कै संजय ईज है ।

आज फेरूं संजय! भाई भी तो लेवण नै आय सकतो। मां संजय नै क्यूं तकलीफ देवै हर बार?

जित्तै नै गाड़ी अैन कनै आय थमी ।

खिड़की रो काच सर्रर्र करतो नीचै आयो अर वो आपरो काळो चस्मो उतारतो कैयो, ''हैलो!... थारो टैक्सीआळो आज फेर ना देयनै गयो कै कॉलेज नीं जा सकैला। आंटी म्हनै फोन करयो कै वामा नै कॉलेज सूं लेवतो आईजै।''

कैवतो-कैवतो वो आपरी निजरां अठी-उठी फोरतो-लुकावतो झट चश्मो पाछो पैर

लियो, पण वामा उणनै अचरज भरी निजरां सूं बूझ्यो—टैक्सीआळो आजकालै नितका ई ना क्यूं देवण लाग्यो है? बोलनै कीं नीं कैयो। छानी-मानी ई ऊभी रैयी।

संजय आपरै कनली सीट रो पल्लो खोलनै अरज भरी निजरां सूं वामा नै देखी। पण वा बिना देख्यां ई लारली सीट मांय धंसगी। धड़कतै दिल सूं उडीकतो मिरर में देखतो रैयो, जाणै अजै ई कीं मनचाया री उडीक है। वामा नीची नस करयां बैठी रैयी। पल... दो पल... चार पल निकळग्या। धकली फाटक अजै ई खुल्ली ही। मायूस संजय मिन्नतां आळी निजरां सांवटली अर अेक लांबी उसांस न्हाखतो पल्लो बंद करण सारू खांच्यो। वामा फुरती सूं लारली सीट सूं निकळनै धकलै आडा नै बंद होवतां रोक्यो अर धकै आय बैठी। सीट बैल्ट बांध्यो। अेक ठंडी मुळक वा आपरै जींवणै कानी मैसूस करी, पण जाण करनै उठीनै जोयो कोनी। संजय में ई इत्ती ताब कोनी कै कनै बैठी री आंख्यां मांय जोय सकै। अेक मधरी ल्हैर रै सागै प्लेयर में गीत चालू होयगो हो अर गाडी ई।

चौराहा, मोड़ आवता रैया, जावता रैया। आसानी सूं पार होया। वामा अेक गैरी निजर सूं उणनै देख्यो, क्यूं कै संजय बार-बार छानै-छानै कनखियां सूं जोवै हो। वा सोच्यो, संजय बातचीत सारू कीं स्पेस चावै। उणनै ससै-पसै सूं बारै काढण सारू सवालूं निजरां सूं देख्यो अर जाणै वौ ई इणी री उडीक में हो। तुरंत बोल पड़्यो, ''...वामा...!''

''हां...''

''...म्हैं कीं कैवणो...चावूं...''

''चार दिन पछै म्हनै छोरै आळा देखण नै आवै है। ठाह है नीं थनै?'' अेक सवाल री अमूंझ मांय बसबसीजता सवालां रै ढिगला पर अेक पड्डूत्तर कांकरा दांई न्हाख दियो।

''... ...''

गीत रा बोल खतम होयग्या अर पछै फगत म्युजिक बाजतो गीत ई समाप्त होयग्यो।

''...फेर भी?''

''...हम्म्मम... अैसास है म्हनै, पण फेर भी कैवणी चाहूं...''

''...मत कैय कोई सबद अैड़ा जकां यूं ई बायरा सागै बीत जावै।''

''...कैयां बिना नीं रैय सकूं वामा!... स्यात जीव ई नीं सकूं...''

''अर अैड़ा सबद तो हरगिज नीं कैवणा जका... जका थां सूं सुणणा वाजब नीं है अर थनै कैवणा ई वाजब नीं है।''

''वामा! प्लीज कैवण दै म्हनै...''

''...नीं संजय, नीं... जकी नै इणरो हक है उणनै कैयजै अर म्हैं ई उण सूं सुणणी चावूंला जिणनै इणरो हक होवैला...''

''...म्हारो मन औ हक थनै देवै... वामा!...''

'' पण म्हैं औ हक उण सूं चावूंला जिणनै म्हारा मां-पापा देयसी। म्हारो जीव म्हनै अैड़ी कोई बात सुणण री मौहलत नीं देवै... संजय...!''

''...म्हनै कैवण दै... इत्तो मत बरज कै म्हैं घुटण सूं मर जावूं... थारै इलावा कोई नै नीं सोचूं... स्यात कदैई नीं सोचूं। ब्याव तो थारो होवैला, पण म्हारो मन फगत थारो परणेत है...''

''...यूं नीं होवै ... म्हैं थनै कदैई इण निजरां सूं नीं जोयो। थूं भायलो है, औ मानूं... बालपणै सूं सागै रमिया, ओ मानूं.... औरूं कांई भी नीं..''

''...हम्म्मम... आ बात में समझ ली कद की ही। पण फेर ई मन ठाह नीं क्यूं इण बात सूं कोई लत्तो नीं राखै। औ आपरी धुन मांय बैवतो गियो इकेवड़ी प्रीत में...''

''...अै सबद थारै सूं नीं सुण सकूं... संजय!'' वा कीं परेशान अर अणमणी-सी होयी।

''...पण सोच नै देख वामा!... अै कीं सफर जका म्हैं थारै सागै कॉलेज सूं घरै तांई करयां हूं, मूंढै मांगी नैमत है म्हारी... अणमोल है... म्हनै सदा याद रैवेला... अै जिंदगी रा फूटरा पल है। थूं म्हारी चावना है बस... थारै सूं इण बदळै कीं नीं चावूं...''

''इतरो हेत क्यूं बांध्यो संजय? थूं जाणै है कै म्हैं हर कानी सूं मजबूर हूं। चावूं तो ई कीं नीं होय सकै... तो अैड़ो चावूं ही क्यूं, जको हासिल नीं होवै...।'' वै डबोडब आंख्यां संजय सूं छानी नीं रैयी।

''विलखी मत व्है!... थारी आंख्यां में पाणी तो हरगिज नीं देख सकूं। थारो सुख म्हारी सोराई! अर म्हारी सोराई थूं... अर थासूं प्रेम। जिण पर अब वस कोनी। म्हैं इणसूं परै होयग्यो हूं... पण थासूं कोई चावना नीं राखूं बदळै मांय।''

''...रोक लै संजय... बिना मंजल रै इण सफर नै। इण माथै फगत अंधारो है। म्हारी इण घड़ी री आ छटपटाहट थूं नीं समझ सकै। इण बोझ नै लेयनै म्है नवै सफर पर नीं चाल सकूंला संजय...!'' कैवतां मूंढो ढांप लियो।

''...औ बोझो नीं, म्हारो साच है गैली! इणनै बोझ कैयनै फौरो मत कर। ...हां, वो अवस भागसाली है जिणनै थूं वरण करैला, पण म्हारै मन री परण हमेस थूं ईज रैवैला...।''

''... ...''

''आंसू ना बैवाय गैली... आज कैय दियो तो जीव हळको होयग्यो। अंतस री अमूंझ लेयनै म्हैं ई नीं जीव सकतौ। थनै चोखो घर-वर मिलै, आ कामना है... हर कामना पूरी व्है थारी... बाकी तो जियां भाग्य करसी, वो मंजूर है।''

''...छोरांआळां सूं जे सैंग बातां तय होयगी तो चार महीनां मांय म्हारौ ब्याव होय जासी।''

''... ...''

''...संजय, सुण लै! म्है सांयती सूं जीवणी चावूं...।'' वामा उण सांमी देखती कैयो पण संजय निजरां नीं मिळायी।

''...छि ...वामा! तरस आवै थारी सोच पर... थूं म्हनै कांई समझ लियो? सदा सूं सागै रैयां हां आपां, फेर भी अैड़ी बात! म्हनै साव फोरौ ई समझ लियो कांई? मां रो संस्कारी बेटो हूं। पापा नीं रैया तो ई मां म्हनै चोखो मिनख बणायो है। अेक इंसान नै गमायनै अब हर इंसान री कीमत चोखी तरयां जाणूं हूं अर साच बात तो आ है कै म्हारै सूं बत्तो थनै कोई समझ नीं सकै... प्रेम नीं कर सकै... पण चिंता ना कर भायली... थारै आडी तो कदैई नीं देवूंला, पण हां, कदै दुख-दरद में याद करैली तो खरो दोस्त बणनै हाजिर जरूर होवूंला...''

तेजी सूं ब्रेक लाग्या अर गाडी भारी झटको खायनै रुकगी। पीं-पीं, पौं-पौं री अेक सागै सैकडूं आवाजां कानां मांय तीर चुभावण लागी। संजय माजरौ समझण री आफळ करी। धकै नैनो-सो साइन बोर्ड दिख्यो—'धकै मारग बंद है'। ...यू टर्न लेवणो पड़सी अर पछै लांबी दूरी आळौ मारग तै करणो पड़सी। वामा रै मोड़ो हो जावैला, पण मोड़ो या बेगो। घरै राजी-खुसी पूगणो जरूरी है।

...इण तरै री केई प्रेम कहाणियां पाणी रै बुड़बुड़ियै दांई जलमै अर काची ई मर जावै। इणसूं स्रिस्टी थमै कोयनी। कीं फरक नीं पड़ै। अैड़ी हजार घटनावां-बातां मिळनै स्रिस्टी रौ बाळ ई बांको नीं कर सकै। धरती रै बौत बडै भू-भाग माथै मध्यम वर्ग है अर इण वर्ग री बातां-चीतां अर जीवण न्यारै भांत रो है। अैड़ी दुख-सुख भरी बातां होवती रैवै अर दुनिया चालती रैवै।

...अर इणीज रीत-रिवाज में मरती-खपती दुनिया मांय आणा-टाणा होवै ज्यूं वामा री सगाई रो दिन ऊगग्यौ।

सगाई सूं पैलड़ी रात अेकाअेक उणनै ज्वर चढ्यो। रातो लाल मूंढो अर अेक सौ दो डिग्री ताप। उणनै लेयनै अस्पताळ भाज्या। दवा सूं कीं फरक पड़्यो, पण अेक बुखार सूं ई कमजोरी आयगी।

सिंझया रा दस्तूरी है अर घर मैमानां सूं भर्‌यो थको। काकियां, मामियां, मासियां, भुआवां सगळां री लाडल है वामा। हिवड़ै मांय घुळै जैड़ी वामा। घर री छेकड़ली सगाई

अर ब्यांव है। सगळा में उमाव-कोड भर्‌यो है। कांई कसर नीं राखणी चावै। आज सगाई अर चार महीनां पछै ब्यांव। कित्तोक समै है ब्यांव आडी। चट करती दिन नीसरता जावैला अर ठाह नीं लागैला। धीव रै ब्यांव में काम हजार होवै। दज-दायजा, कपड़ा-गाभा, गैणा-गांठा, लेण-देण, नेग-दस्तूर, रीत-सीख। हजारूं-हजार काम बाको फाड़्यां रैवै। वामा रा मां-पापा आपरी सगळी मंसा पूरणी चावै, जकी कोई जमानै मांय इण घर में शेष पड़ी है, अडीकै है। समै री भींत माथै सूं अेक लेवड़ो कुसमै खिरग्यो हो। जीयाजूण नै अजेस ई सालै है। इयां तौ पैलड़ा दोय बेटा परणाया जद घणी ई मन री काढी, पण अब काळजै री कोर परणीजै है। केई बातां सूं जीव घबरावै अर यूं केई अधवीटी इंछावां पूरण होवतां देखणी चावै। कोई समै री उण घटना नै इण मिस सदा सारू बिसरावणी चावै। दोय-दोय भाभियां री लाडकी, तीन काकियां री लाडकी अर...अर... सगळां सूं खास... रमा भुआसा री लाडकी।

...रमा भुआसा इण घर में, सगळां रै जीवण मांय घणा महताऊ। पैंताळीस नैड़ा लिया रमा आपरै मां-बाप री छेहली बेटी। टाबरां री अब आळी पीढी जलम सूं लेयनै आज तांई रमा भुआसा नै इण घर मांय चकरघिन्नी दांई भंवता देखता मोटी होयी है। वां बिना घर रो पत्तौ नीं खड़कै। रमा भुआसा बगर दिन कैड़ो होवै वै नीं जाणै। हर ऊगतै अर ढळतै दिन मां-पापा नै भलांई नीं देख्या होवैला पण रमा भुआसा नै नीं देख्या होवै, अैड़ो याद ही कोनी आवै।

केई परिवारां मांय अैड़ा चरित हुया करै जका जिनगाणी रै विरोधाभास सूं जलमै। अैड़ा ईज रमा भुआसा। रमा अर उणरो भाई अेक ईज मौरत में सागै परणीज्या। रमा अर रमा री भाभी रौ आम्हीं-साम्हीं सगपण। मतलब सो क्यूं सावळ रैवतो तो आज दोनूं अेक-दूजै री भाभी अर नणद दोनूं होवती। इयां अबै ई है ईज, पण फगत कैवत में। क्यूंकै इण हिसाब सूं रमा नै आपरै सासरै मतलब भोजाई रै पीहरै भोजाई बणनै रैवणो चाईजतौ हो। सोच्यो, पण अैड़ो होयो कोनी। वै उठै नीं बल्कै आपरै पीहरै रैवै।

कोई समै जिंदगी अर मौत मांय तकड़ो विरोध होयो अर मौत जीतगी ही।

जिण जमानै मांय छोरा-छोरी अेक-दूजै नै अेक निजर देख नीं सकता उण समै मांय रमा आपरै मंगेतर नै,भाई रै साळै नै, आपरै प्रेमी नै केई बार देख्यो। निजरां सूं निजरां रो प्रेम परवान चढग्यो हो अर ब्यांव ई मंडग्यो। वै सुखदायी रातां री कल्पना मांय गम्योड़ा रैवता। नैण मिलता, धड़कनां गावती अर... अर... केई बातां निजरां रै पुळ सूं अेक-दूजै रै हियै मांय उतर जावती। सपना सजिया अर मन बावळा हुया। प्रीत बावळा। केई मीठी-मधरी कल्पनावां सूं वै पसेवा सूं भींज जावता। रात आंख्यां मांय कटती। भर सियाळै जीव बसबसीजतौ। दिनूगै आंख्यां रातीबम लाधती। वै विरह रा मार्‌या मां-बापां रै साम्हीं नीं

पड़ता अर सखियां-भाभियां छेड़ में कसर नीं राखती। ब्यांवली सखियां रा अनुभव सुण-सुणनै केई मधुर कल्पनावां रच न्हाख्या। ब्यांव रा दिन नैड़ा ईज हा, पण उणां नै अै दिन अबखा लागता। कद फेरां री रात आवै अर वै आपरै राजकुमार रै छाती माथो राखनै नचींता होय सपना नै साकार करै। उण जीवण नै बेगो जीवणौ चावता जिण मांय प्रकृति रो सगळो राज छुप्यो है, जीव री सनातनता छुपी है, जीवण रा सगळा रंग छुप्या है। ...पण रमा री मन री मन में रैयगी, लालसा लालसा ईज रैयगी अर फगत दस रातां रो ईज सुख भरयो जीवण जीय सक्या। फगत दस दिनां रै हथळेवा रो पाप लाग्यो। रमा नै दूजै आणै लेवण आवतां गाडी रो अैक्सीडेंट होयो अर सो-कीं खलास। उणां री खुशियां कीं दिन ढबी अर उणां रै मन अर तन नै दोजख में बळतो छोडनै उडगी। सो-कीं ठहरग्यो। घर थमग्यो, परिवार बिखरग्यो अर जिंदगाणी पटरी सूं उतरगी।

केई साल लागग्या इण दुख रो ताप कम होवण में। अै दुख खतम तो कदी होवणा ही नीं व्है। बेमाता लुगाई रा दुख भाटा पर लिखै जका कदैई हळका नीं पड़ै। मेह, आंधी, तावड़ो, आंसू-अवळा उणरै करमां री तासीर नीं बदळ सकै। जका लिखीजै वै ईज भोगणा पड़ै। इण में कारी नीं लागै। माईत बावळा होयग्या। भाभी, भाई रै दुख में आधी होयगी अर बाळविधवा भौजाई रै दुख में साव गमगी ।

भाई-भाभी री गिरस्थी दोरी-सोरी ठाणै आई, पण रमा भुआसा रो जीव कदैई ठाणै नीं आयो। वै रातां-बातां उणां रै हिवड़ै मांय खुबगी। वो परस प्रकृति री लीला पर तो चलायो, पण सागो नीं निभायो। केई साल उण बातां नै, उण मुखड़ै नै याद करनै बाको फाड़, हियो फाड़ै जैड़ा रोवता। छाती कूटी, बाल नोच्या, बेचेतै में गाभा फाड़्या, पण कीं कारी नीं लागी। नीं दिखै जैड़ो दरद सालतो तद मावठ न्हावता, सावण छात पर भींजता आंसुड़ां री नदियां बैवावता पर कीं थाह नीं लाग्यो। जूण रो सूळ सदा बधतो ई गियो।

केई बार रमा आपरी भौजाई सूं गळै लागनै बिना कीं कैयां रोवता। भौजाई कांई समझती कोनी ? छेवट वा ई तो लुगाई ही रमा री सांयनी-सरीखी, जोध-जवान। सुख री साथण होवती तो केई मसखरियां करती। रंगभरी-मदभरी बातां कैयनै मूंढो ढांपनै लजखाणी पड़ती, पण वै सास्वत दुख री साथणियां ही। दुख भरिया बयन सूं हजार दुख बयन करती पण तो ई केई दुख अणकैया रैय जावता। साचो साथी दुख भरी बातां नै सबदां में नीं सुणनी चावै। वो सो-कीं समझ ई लेवै। पल-छिण पसवाड़ा फोरती, रात्यूं छात जोवती, छात पर अेकली डोलती नणद रै दुख नै भोजाई उणरै भाई साम्हीं बयान नीं कर सकती। बगर बोल दबी रुलाई रोवती, कीं कैवणो चावती, पण कैवीजतो कोनी... जबान आंटीज जावती... काळजो धड़क जावतो। भाई नै उणरै बहन री बात कियां कैवै ? रमा रै नारीपण री पीड़ कमती नीं व्ही, वा तो उमर परवाणै बधती ई गई।

सांयनी सखियां नै साल-दर-साल पुसप दांई खिलतां देखनै उसांस न्हाखता, सैंजोड़ै सखियां नै सासरै आवतां-जावतां देख दांतुड़ जुड़ जावता। गांव में ब्यांव रा दिन होवता तद ऊंडी ओरकी मांय बड़नै किंवाड़ जड़ देवता.. केई-केई दरसाव है उणरै हरयै दुख रा।

दुख री गळ्यां सूं जीवण दोरो घणो पार होयो, पण छेकट चालतो अठै पूग्यो, क्यूंकै धरती भमती ढबै कोनी, रुत बदळती रुकै कोनी अर बरस कदैई बिसांई लेवै कोनी, तो पछै जीवण क्यूं थमै... वो निरमोही तो चालतो रैवै... फगत चालतो रैवै...।

रमा कांबळ अळघी करनै वामा रै माथै पर हाथ रो परस करयो। कीं निंवास है अजै। हथाळ्यां जोई।

''अरे! हाथां मेंहदी नीं लगाई... ?''

''भुआसा... रात ताव रै कारणै... नीं लगा सकी।''

''छौ बेटा छौ... ताव में हाथ ठंडा करणा ई नीं चाईजै। पण बेटी सुगनां रो काम है, मेंहदी बिना नीं सरै... अजै सगाई रो मौरत अळघो है। मेंहदी तो आजकालै मिनटां में लागै अर सूखै। थूं सोच ना कर। अबार इंतजाम करूं...''

''मेंहदी आळी तो रात नै आयी ही। पाछी गयी परी। अब कुण लगासी ?''

''हम्मम... चिंता क्यांरी... अबार बाजार जायनै लगवाय आवां। चाल, उठ! म्हैं चालूं थारै सागै। ड्राईवर नै गाडी बारै काढण रो कैय दूं...''

''वो तो सगाई आळो बेस लेवण नै बुटीक आळी रै गयौ है।''

सोच-विचार चालै ई हो, जित्तै संजय हाय-बाय हुयो कमरा मांय बड़तां कैयो, ''म्हैं सुण्यो रात थनै ताव आयग्यो अर अस्पताळ जावणो पड़्यो ?... अब ठाह पड़तां ई भाजतो आयो... कीकर है अबै ?''

अेक निजर वामा पर न्हाखी, पण बात रमा भुआसा सूं पूछी अर उणां सूं ईज मुखातिब रैयो। वामा उण पर उडती निजर न्हाखनै निजरां गोदी में राख्यां बैठी रैयी। पडूत्तर वा ई कोनी दियो।

''हां संजय बेटा, देख तो... ताव नै ई अबै ईज आवणो हो।...पण थूं वामा रै ताव नांव सूं इत्तो मूंढो क्यूं उतार लियो रे ? देख तो, थूं खुद कित्तो घबरायो-सो है। मौसम है ताव-तप आयां बिना रैवै कोनी। थूं सोच ना कर... सावळ है अबै।'' वामा साम्हीं देखतां कैयो अर पछै उणसूं मुखातिब होया, ''अर हां... आज बातां में खोटी करै जित्ती बिसांई कोनी... संजय बेटा! अेक काम कर दै। वामा रै मेंहदी लगावण नै जाणो है। सोचूं कै अब पार्लर जायनै लगावणो ईज ठीक रैयसी। है कै नीं... ?''

''हां सा भुआसा, चालौ... अबार ले चालूं आप दोनां नै।'' कैवतो वामा साम्हीं देखणी चायो, पण हीमत नीं पड़ी। कनखियां सूं जोयो कै वा थाकी-सी छानी-मानी बैठी हथाळ्यां नै जोवै है।

''...हां बेटा! थूं है तो अब चिंता री कोई बात कोनी। ...यूं करो... थूं अर वामा जायनै मेंहदी लगवाय आवो। म्हैं जितरै फेरूं कोई काम कर लूं। ...ठीक है वामा बेटा!''

दोनूं अेक झटकै अेक-दूजै साम्हीं भाळ्यो।

पडूत्तर में वामा नस हिलावती हवळै-सी पलंग सूं उतरी। मांदी वामा नै संजय स्हारो देवणो चायो, पण कीं सोचनै ढबग्यो अर जद वा मत्तेई हवळै-सी चाल पड़ी तद उणसूं अेक कदम लारै चालण लाग्यो। जरूरत पड़सी तो वा खुद ही सहाय मांग लेयसी। उणरी कोई तरै री मदद करनै उणरो जीव सोरो होवैला!

संजय गाड़ी चालू कर दी, पण आज आपरै कनली सीट रो पल्लो नीं खोल्यो। उणरो वामा पर हक दिन पर दिन कम होवै है। वामा नै कोई तरै रो दुख नीं देवणो चावै। उणरी सगाई हो जावै, पछै मुंबई जाणै री सोचै है। धकली पढाई पूरी करणी है। चार महीना वामा अठै है जित्तै मां रै बंतळ रैय जासी। जित्तै वो ई मुंबई सांयती सूं रैय सकैला पण पछै तो...। मन अर जीवण, दोनूं सूना होय जासी... सोचतां वो दरद भरी उसांस न्हाखी। उण खातर वामा रा ब्यांव रा दिन अजब-सा होवैला। दोस्त रो ब्यांव अर वो आपरै अंतस मांय उळझियो रैवैला। ना! हरख री बात है कै उणरो ब्यांव चोखै घर मांय होवै है। सुखमय भविस है उणरो। अब खुद नै वसु राखणो चाईजै पण... पण औ मन कांई ठाह किण माटी रो है। हजार मार मारै, पण तो ई खुद रै सुख री टेव नीं छोडै। रे मतलबी मन! अब थूं चाल दूजड़ै देस रे...

अेकै झटकै सागै विचारां सूं बारै आवणो पड़्यो। जोयनै अचंभै में हो। आज वामा खुद चाहनै उणरै गोढै आयनै बैठी है। अैड़ी आस नीं ही। अैड़ा उण रा भाग है! कदैई सोची ई कोनी। वो तो वामा नाम रै स्हारै ई जीव लेयसी। इण उपहारां री आस कदकी ही बिसार दी है, फेर ई चाणचक आयै सुख रै कारण अब हरख सूं छाती धड़कण लागी है। पण उणियारै फीकी-मरी सी मुळक ईज आयी। इण चिन्नै-सै सुख सूं वो छिण मांय आणंद में हींडण लागो हो, पण सावचेत होयनै जीवड़ै नै खांच'र पाछो ठाणै लायो। अै बातां सोचणी नीं चावै अब। अै पल अब उणरै नाम रा कोनी तो क्यूं आंधी रोहियां भाजै। इण खुशियां सूं दूरी वापरणी भली है। अब सूं ई आदत पड़ जासी तो सोराई रैयसी। इधकी आस उणनै फोड़ा घालैला।

इण धड़क पर झट धूड़ न्हाखी अर गाडी स्टार्ट करी। अेक मन उणरी आंख्यां मांय झांकणी चावै, पण अेक मन बरजै। इण कारण काठो सो रैयो। नीं देख सकै। कांई ठाह आंख्यां कीं चुगली कर न्हाखै। कांई सोचैला वामा आपरै दोस्त रै बारै मांय। ना! ना! इयां

कमजोर नीं होय सकै। आज खुसी रो मौको है। आज वो ई तो खुस है... पण वामा रै अेकैलाग खुद साम्हीं जोवतां नै घणी जेज दरकिनार कर ई नीं सक्यो। नीं चावतां थकां ई देखीजग्यो। परिणाम... उफ! दोनूं री आंख्यां डबोडब।

अै आंसू किण कारण आया अर क्यूं फगत कोर आयनै अटकग्या। औ कुण समझ सकै! किण में ताब है इण प्रेम नै समझण री। कुण कांई चावै... कोई जाण सकै?

रस्तै मांय संजय हजार सीखां देवतो रैयो। जिंदगी री भोळावण, नेक बातां, नसीहतां, फरज, प्रेम री केई बानगियां दी। वामा सोचै... साचो भायलो इण सूं कांई दूजो होय सकै! ब्यांव रै पछै ई इण दोस्त नै नीं भूलणी चावैला। बालपणै रो सखा है। उणरो दुखनिवारक बणनै हमेस ऊभो रैयो है। साचै दोस्त रै रूप मांय प्रयाग सूं संजय रो परिचै जरूर करावैली।

गाजै-बाजै सूं दस्तूरी होई। फोटो-सेल्फियां रै बिच्चै सै लाड-कोड करया गया। संजय रो प्रयाग सूं परिचै करायो। संजय हंस-हंस नै बातां करी अर पछै अेकदम कोई बहानो बणायनै उणसूं अळघो गयो परो। वा केई बार देखणो चायो उणनै, पण वो उच्छब में आयोड़ा लोगां री मनवारां करतो रैयो।

नवै बंध्यै जोड़ै री फोन पर घंटां मद भरी बातां होवण लागी। संजय रै मुंबई कॉलेज अेडमिशन री बात सुणतां ई भाजती गयी अर पूछणो चायो, पण वो मौको ईज नीं दियो अर ना फोन-मैसेज रो रिप्लाय। जद भी दिख्यो, सगळां सूं घिरयोड़ो। उणनै चैन नीं अर संजय आम्हीं-साम्हीं होवै ईज नीं। पूछणी चावै कै हर बात बतावण आळो भायलो आ बात उणसूं लुकोय क्यूं राखी? पण पूछै कियां? जद ई दिखै दो-पांच जणा रै बिच्चै। इत्ती हंस-हंसनै बात करै कै लागै इण सूं सोरो इंसान दुनिया में कोई कोनी। चार जणा बिचाळै अठी-उठी देखतां उणसूं ई बात करै, पण उण बात मांय भयंकर इग्नोर रो भाव। जाणै उणरो कोई वजूद ई कोनी। दूध मांयली माखी ज्यूं निकाळ फेंकी उणनै। औ वैवार बोत दुख देवै। आवतै-जावतै ताव-बुखार रै सागै आ बात उणनै साव निचोड़ न्हाखी।

संजय रो मुंबई व्हीर होवण रो दिन हो। वामा उण दिन सुस्त ही। उठ्यो नीं जावै हो। मन अर तन दोनूं बेकल अर थाकल। खिड़की सूं देखती रैयी। उणनै भरोसो हो कै उणसूं मिल्यां बिना संजय जाय ई नीं सकै। पण वा गलत ही। कांधै बैग लटकायां गाडी री फाटक खोल ली ही अठीनै जोवतां-जोवतां। वा जाणै है कै आ जोवणी उण खातर है पण उण खातर फगत निजर ईज पांती आई? उणरो कांई दोख कै संजय सफा मूंढो ई मोड़ लियो। अंतर री गैराई सूं पूछ्यो कै म्हासूं मिल्यां बिना जाय सकैला थूं? अरे! साच्याणी जा रैयो हो! अंतस सूं तास रै पत्ता दांई कीं धुड़ रैयो हो। सागीपणो इत्तो मद्दो तो कोनी कै याद ई नीं रैयी मिलणै री! इतरी बेरुखी क्यूं संजय! दुख अर रीस सूं हियो उबचूब होवण लाग्यो। ओळमै रा तरकस तणग्या—हुंऽह!

...चाणचक...अठीनै फाटक सूं... खिड़की कानी आवतो दीख्यो। घड़ी मांय मन लहरग्यो। औ ईज चावती ही वा केई दिनां सूं... केई दिनां री घाण-मथाण ही... अठीनै आवतां देख धारोधार दुख अर रीस आंख सूं बैवण लाग्या। ठाह हो। कितरो ई इग्नोर करै, पण म्हासूं मिल्यां बिना नीं जा सकै। आंसू लूंछनै मुळक री खेचल करी। मांय आवै तो अैड़ा-अैड़ा हजार ओळबा देऊं कै सारी उमर नीं भूल सकैला। बेरुखी रो कारण बूझैला... पूरी खबर लेवैला... पण... सावळ जोयो... अरे! संजय तो पाछो मुड़ग्यो—गाडी कानी। क्यूं? वा बाको फाड़्यां ठस्स व्हैगी। भरोसो नीं होवै! दुख अर अणदेखी सूं हियो बसबसीजण लाग्यो। कांई करै अर कांई नीं! लारै सूं हेलो कियां पाड़ै... कियां रोकै... किणनै कैवै... उफ! मूंढै हाथ देयनै रोवणपण नै ढाबण लागी कै... गाडी री फाटकां बंद होवण री आवाज आई... आवतोड़ो रोवणो अेक भारी डूंचा सागै थमग्यो... उणसूं मिल्यां बिना संजय जावै है!... भरोसो नीं होवै... नीं... यूं नीं कर सकै संजय... अब तो ऊभो रैवणो अबखो होयग्यो...

संजय, यूं मत जा! अेकाअेक जीव मांय कीं बळबळ्यो अर वा भागी फाटक कानी। जाणै आज नीं मिळी तो कदी नीं मिळ सकैला। पूगी जठां तांई संजय री गाडी धूड़ उडावती रेस भर ली। ''सं... सं...ज...'' कीं बोल फूटा अर कीं ऊंधा मांयनै उतरग्या अर वा... फाटक झालतां-झालतां ही ढै पड़ी।

अेक दरद हर छिण डावै पसवाड़ै सालतो। केई बातां सूं अमूंझ जावती जणै संजय री मां कनै जायनै बंतळ करती। मां आप ईज संजय रा समाचार देवती अर वा रीस सूं भर उठती। उठै ई जीव नै सांयती नीं। प्रयाग सूं घंटां बातां करती। संजय रो जिकर चाल ई जावतो। रीसां बळती बात टाळ न्हाखती। संजय सूं हरदम इत्ती रीसायी रैवै कै उणरो नांव ई नीं लेवणी चावै, पण हर छिण नांव लेयनै रीस रा बतूळ उठै!

अब डील में ई थाकैलो हरदम रैवण लाग्यो। सरधा कमती-सी लागती। बीसेक दिनां पछै पाछो तेज ताप चढ्यो। सगळां चिंता में पड़ग्या। जोध-जवान तेईस बरसां री कन्या नै इयां बार-बार ताव-तप कीकर आय जावै? मन में अेक ईज सवाल, पण सगळां दरकिनार करनै नॉर्मल रैवता। महीनां पछै ई घणो कीं फरक नीं पड़्यो, बल्कै कमजोरी बधती ही गई तो परिवार आळा नित नवी बिमारियां सूं भौ खावता बेगा ई मुंबई लेयग्या। केई जांचां-तपास होई, ऑबजर्वेशन में राख्या अर अेक दिन नतीजो दियो। वामा रै पापा नै अेकांत में बुलायनै काउंसलिंग करी तो सगळा जाणै आभै सूं जमीं माथै ऊंधै मूंढै पड़्या। वामा नै ब्लड कैंसर हो!

सकल कड़ूंबो अर सुण्यो जको ई हाक-बाक रैयग्यो। इयां कीकर? ब्यांव री त्यांरिया चालै ही अर अैड़ी खबर...। पतियारा जोग बात कोनी। कन्या सारू सैंग दुख सूं

भरग्या। अेक-दूजै सूं लुक-लुकनै सगळां आंसू बैवावता अर दूजै नै हीमत देवता। वामा साम्हीं सहज रैवण री खेचल करता, पण नाकाम। इतरी खाथाई सूं समै रंग बदळ रैयो हो कै कोई कीं समझ-संभळ नीं सक्यो। कीं दिनां आंतरै औ ठाह पड़्यो कै इणरो इलाज है जकौ चालतो रैयसी, पण कद ठीक होवै या नीं होवै... कीं ठाह नीं। घरै जावो अर सगळी कामनावां पूरी करो। डॉक्टरां री खास हिदायत ही कै मरीज नै साच बतावो अर बच्यो-खुच्यो जीवण उणरै चावै मुजब गुजारो। माथै पड़ी जिणनै उथेलो देवणो ईज हो। जको इलाज है वो अठै ई हो, इण कारण मित्रतां करी कै अठै रैयनै ईज इलाज सावळ होसी। घरै गियां तो पार नीं पड़ै।

संजय सुण्यो तो गिरतो-पड़तो अस्पताळ पूग्यो अर रमा भुआसा रै खौळै जाय बड़्यौ। कीं ताळ उणरै अफसोस नै सांयनै रो दुख समझ्यो, पण जद उणरा आंसू केई थ्यावस पछै तांई थम्या ई नीं तद उणरी ठोडी ऊंची करनै पाणी सूं थबोथब उणरी आंख्यां मांय जोयो तो रमा हैरान ही। उफ! औ कद होयो? सागै रमता टाबर इण बंध मांय कद बंधग्या... ? फगत दोस्ती रा अै आंसूड़ा कोनी। दोस्ती रै प्रेम सूं कीं बत्ता गैरा है।

भुआसा कंपकपियै होठां सूं कीं बूझणी चायो संजय नै, '' संजय थूं?... वामा... ?''

''भुआसा, वामा नै कीं मत होवण देवो... म्है जीव नीं सकूं...'' डुचकिया भर-भर रोवतो फगत इत्तौ ईज कैय सक्यो संजय। जिण भांत काठो भींचनै भुआसा रै गळै लाग्यो, पछै कीं बूझणो बाकी नीं रैयो। सैंग बातां खुलगी। काळजै री खोह सूं आवता वै आंसू केई बातां री रील चलाय दी—

वामा रै ताप री खबर सूं दुखी संजय...

सगाई री टैम उदास...

सगाई होवतां ई ना देवतां-देवतां मुंबई में अेडमिशन...

...अर अब आज आंसू भरी आंख्यां...

ओह संजय! थूं घणो हतभागो है रे! हर हाल में थनै ईज दुख पीवणौ बद्यो हो कांई? संजय रै इण दरद सूं उणां नै खुद री केई बातां याद आयगी। बिछोह रै इण रुदन सूं रमा रो जूनै जुगां रो नातौ है। रमा अर संजय अेक ईज दुख रा मारया है। नवा दुखियारा या जूना दुखियारा पण दरद रो पार नीं... अथाग है। दरद मांय पजियै उण टाबर नै छाती रै चेप दियो काठो अर दोनां रा दुख अेकै सागै समंदर होवता रैया।

वामा अस्पताळ मांय आडी सूती-सूती जिनगाणी नै सगाई सूं मौत तांई रो रस्तो पार करता नै सोचै है। कांई सोच्यो अर कांई होयो! प्रयाग री याद हर पल रैवै। संजय आसै-पासै फिरै। आडो-डोढो, गोळ-मोळ निजरां सूं जोवै, पण सैंनिजर नीं होवै। वा

संजय सूं पैलां ई रीसाणी है। इत्ता दिन रीस अर नाराजी लेयनै जीय रैयी ही अर अब साम्हीं मौत! सोच्यो हो कै मिलसी जद हजार ओळमा देयसी, पण अबै कांई ओळमो देवै! ना, कीं नीं कैवै। संजय हमेस सुखी रैवै, बस। आ ईज कामना। पण अेकर बात कर लेवै तो कीं ठंड पड़ै अंतसै। दो बोल ई बोल लेवै तो वा कीं जीय जावै। पण वो आंख में आंख घालनै अेकर ई बात नीं करी है। रुसायो है संजय? जावता मिनख सूं कांई रुसै रे! भगवान तो मूंढौ मोड़ लियो है... पण थूं तो कीं बोल-बतळ कर...!

पण कीं नीं कैवीजतो उणसूं। सगळी बातां ही अंतगी। सरू-सरू में केई दिन प्रयाग रा प्रेम भर्‌या फोन आवता हा, पण अब कम आवै। कीं दिनां रै आंतरै अेक बार फोन आवै, पण फगत इन्नै-बिन्नै री बातां रा। उणरी बातां में अब मंगेतर रै प्रेम रो दरद नीं लखावै। कपूर दांई कीं दिनां मांय ई प्रेम उडग्यो। वा कीं नीं कैवै। सोच नै रैय जावै। मरतै मिनख सूं कुण प्रीत जोड़ै अर किण विध जोड़ै? चोखो है टेम रैवतां आंतरो करनै दूजै पथ चाल पड़ै। म्हारलै पथ रो सैयोगी कोई कोनी... स्यात भगवान ई कोनी। अेकली हूं साव... संजय कदैई सागौ छोड न्हाखयो... अब प्रयाग ई चटखाय न्हाखी...। अब तो फगत मौत ई गळै लगासी।

हजार बातां सोचै, पण बोलै कीं नीं। केई तरफा दरद सूं घायल मां या भुआसा रै गोद मांय दुबकी रैवै। संजय कानी तो देख ई नीं सकै। चावै कै संजय नै देखै आंख भर... बात करै जी भर... याद कर लै बचपन नै...। ...मन हजार बोझां सूं लद्‌यो है। कीं कैयनै हळको करणी चावै। पण मण भर री आंख्यां सैंनिजर खातर उठै ई कोनी। अेकलो कदैई कमरै मांय ऊभौ ई नीं रैवै। रैवै तो ई अठी-उठी री भरमावती बातां। उण दिन साचो दोस्त बणण आळौ आज साम्हीं निजर ई नीं होवै। वाह रे भायला! अब कीं ताब ई नीं रैयी। वो पीठ फोर्‌यां ऊभै जद छिण भर जोय लेवै, बस। उणसूं कीं कारी लाग जावै। लीरांलीर हिवड़ो है। संजय रा दो बोल स्यात जीवाय देवै, पण केई महीना पैलां जिणनै जिनगाणी सूं निकाळ फेंकी उण मरतै जीव सूं वो बतळ करनै कांई करसी? उणनै लागै कै संजय रै कोई फरक नीं पड़ै वा मरै कै जीवै! फेर वा क्यूं आस राखै? अर म्हनै तो अै सगळा तांता छोड जाणो है... पछै संजय रो मोह क्यूं बर-बर वापरै... भगवान कीं हीमत दे!

सगळो परिवार पगां ऊभो है इण अणहोणी में। रमा भुआसा निसदिन उणरो खयाल राखै। उणरो आधो जीव है वामा। उण जैड़ी ई घर री धीव है। उणरी आध है जिणमें वा पूरी होवणी चावै। उणरै जीवण में खुद नै जीवणी चावै। उणरै जीव री सगळी कमतरियां नै हजार गुणा बधापा में वामा मांय चाही है। हर सुख चायो उण खातर। जिणसूं उणरो खुद रो दाझतो जीव कीं ठाड पावै। खुद नै वामा में जोवती रैयी सदा, पण औ नीं सोच्यो कै खुद जैड़ी फूटी तकदीर आळी ई हो जावैला। रमा घणी रोवै।

केई दिन प्रयाग रो फोन नीं आयो। वामा सो-कीं समझै, पण प्रीत सूं भरयो जिनगाणी सूं लड़तो उणरो जीव फेर ई उणरै फोन नै अडीकै। केई दिन आंतरै हीमत करनै भुआसा नै बूझ्यो तो वै कैयो, ''भाईसा प्रयाग रै पापा नै बेगो ई ब्यांव मांडणै रो कैयो है।''

''ब्यांव! क्यूं भुआसा... ?'' कैवतां ई वा रोय पड़ी । किण भांत रो रुदन है । इण दरद री कांई सींव कै सो-कीं आंख्यां साम्हीं हवळै-हवळै रेत दांई खूटतो जावै है अर छेकड़ तो सांसा ई खूट जावैला।

''जरूरी है बेटा... थनै... इण घर नै... कितरो कोड हो इण ब्यांव सूं। मिनखजूण आयनै खाली हाथ नीं जाईजै म्हारी धीवड़... !'' कैवता-कैवता भुआसा उणनै छाती मांय भींचनै रोय पड़्या। खुद रै दरद रा खुरंट पाछा उखलग्या हा। दरद फूट्यै बांध दांई बैयग्यो। इयां दुख अर रमा रो पूरो साथ रैयो है, पण इण पुसप जैड़ी टाबर नै रामजी आ सजा क्यूं देवै ? वामा मांय आपरी जूण री रील पाछी जीवणी चालू करी ही, पण उपरलै नै रमा रो इत्तो-सो सुख ई को सुहायो नीं।

''प्रयाग रा घरआळा विचार करनै जवाब देवण रो कैयो है... !''

नीं सुण सकी वामा इण हां मांयनै फंस्योड़ै ना नै... । प्रीत री टूटती काची डोर नै... । अेक रै पछै अेक आवतै दुख नै।

वा नीं झेल सकी अर सदमै सूं बेचेतै होयगी। डाक्टरां री भीड़ आयी अर केई डिस्कशन। दोय दिन पछै कीं ताबै आई। पण अब जीवणी नीं चावै। किण स्हारै कीं दिन ई काढै? मां-पापा, भुआसा रो दुख देखीजै नीं। संजय.... प्रयाग... ई छोडग्या। कीं गिणमा महीना है जका उणनै व्हाला नीं लागै। बस, बेगो ही सो-कीं खतम हो जावै तो इण दुख रै भार सूं लार छूटै। आस रै दिवलै नै सगळां री आंख्यां मांय खूटतां नीं देख सकै अब। काठी थाकगी है। अब गैरी नींद सोवणी चावै...

सगळा वामा रै कमरै मांय ऊभा हा। मां, पापा, भाई-भाभियां, भुआसा, संजय अर केई जणा। देख-देखनै वामा रा आंसू थमै नीं अर परिवार दुख रो मारयो निरुपाय, बस डूचका भरै, भगवान नै ओळमा देवै।

मां अर रमा भुआसा गुपचुप कीं बातां करता रैवै अर दूजा नै आवतां देख बोला रैय जावै। संजय रै मन री मां नै ठाह पड़ी है। उणनै देखनै मां रौ दरद बत्तो गैरो व्है जावै। पण इलाज चालै है। है जकी आस मांय डाक्टर जितरी होवै, खेचल करै। जकी कीं आस है वा मुंबई में ईज है।

संजय साव कळमीजग्यौ है। वामा अब कोई सूं बात नीं करै। उणियारै री लुणाई साव मगसी पड़गी। कदी असींव दरद अर पछै दवायां री गैळ में गुमसुम सूती रैवै। दरद अर दवा में होड चालै। दोनां रो जुद्ध वामा रै डील पर वार करै। पण हारणो तो वामा नै

है अर जीत होणी री होयसी। कदै-कदास बातां मांय विलमै जद दोय घड़ी री मुळक वापरै पण पाछी उणी दरद री गुफा मांय बड़ जावै। दुखां री चादर ओढनै सपना नै रोवै।

''भाभीसा, म्हारी बात माथै गिनार करजो।''

रमा भुआसा निजरां झुकायां कैयो अर दूजै कानी गिया परा, जाणै मूंडो लुकोवै है। वामा री मां पथराई आंख्यां लियां बैठी है। जिंदगी अठै लेय आवैला, सोच्यो तक नीं हो। कपड़ा-गैणां री बातां करतां आज अैड़ो दिन ऊग्यो कै गोडा बिच्चै माथो दियां वा मांयली छाती रोवण लागी, ''सैंजोड़ै कन्यादान री इंछा पाळी ही अर कठै बिना फेरां ई... नीं... नीं... अैड़ो नीं सोच सकै। कन्या है वा। औ पाप म्हैं नीं कर सकूं।'' आपरै कानां पर हाथ रखती डुचकियां भरीजगी।

''पाप कोनी भाभीसा! म्हारै साम्हीं जोवो।''

कोई परस नै खुद रै कांधै मैसूस करनै आंख्यां खोल दी। रमा बाईसा ईज हा!

''हां... म्हारी जूण पर निजर न्हाखो भाभीसा। कांई देख्यो जमारै में आयनै। कांई सुख री आस करी ही अर कैड़ी लाय में जाय पड़ी। पण सुख रा कीं पल जका म्हारी झोळी मांय पड़्या, वै अणमोल हा। लुगाई बणनै म्हैं इण जमारै रा सुख पाया हूं। नर-नारी नै समझ सकी हूं। जीवण रै चक्कर नै कीं समझ्यो हूं, जिण स्हारै अै दिन नीसरया है। पण वामा अजै कन्या रूप में है... लुगाई बणावण रो आपरो काम प्रकृति तय समै पर करयो है। पण वो तूट रैयो है। कांई आपां सो-कीं समझता थकां ई अणजाण रैवां?''

''बाईसा, सो मानूं!... आपरी तपस्या नै निंवण, पण आपरै दरद री म्हैं साक्षी हूं। हर पल री... हर बात री...'' कैवतां रमा नै छाती मांय भींच लिया अर कैयो, ''किण भांत आपरो मोट्यारपण बळतां-खीजतो रीतो रैयो, आज तांई... म्हैं नीं जाणूं तो कुण जाणै!''

''हां भाभीसा, औ ईज कैवणी चावूं हूं। मिनखजमारो धूड़ है, जको इण जूण आयनै भगवान रो दियोड़ो सुख नीं भोगै। केई जूणां भोगियां पछै औ जमारो पुण्याई सूं हाथ आवै... इणनै सारथक करणै रो अधिकार तो सगळा नै है नीं?''

''है बाईसा, है... पण अब इण हालत मांय कियां ब्यांव होवै?''

''भाभीसा! फगत प्रकृति रै लीला री बात है। ब्यांव सगाई समाज रा बणायोड़ा है। प्रकृति नर-नारी में फगत प्रेम अर देह रो आकर्षण बणायो है। अर औ ईज सगळां सूं बडो साच है।'' इत्ती बडी बात कैवतां नै वै बस फाटी आंख्यां सूं जोवता रैया।

''कांई कैवो हो?... सोचो हो कै कांई कैवण आळा हो?'' औ ईज कैय सक्या डूंच्या गळा सूं रमा रा भाभीसा।

''हां भाभीसा... केई दिनां सूं सोचूं हूं। हीमत लाऊं हूं। कीकर कैवूं औ सोचूं हूं पण कैवूंला जरूर, औ पक्को है। अबै खरा बोलां में कैवूं कांई? तो सुणो... भलांई उणरी

सांसा गिणमां महीनां री है, पण नर-नारी रूप जिणनै शिव-पारबतां रूप कैयनै आपां पूजां। समाज खुद इणरी विध-विधान सूं आग्या देवै। इण वेळा म्हैं आ आग्या देवूं कै वामा नै दुनियावी टोटका नै बिसारनै नर-नारी रूप रो भान करावणो आपणो फरज है।''

रमा भुआसा भाभीसा री आंख्यां मांय आंख घालनै बात पक्की पूगाय दी। वा आखिर वामा री मां है, लुगाई है। कितरी जेज इण सूं मुकरती। अेक नारी रै दाझती जूण री गवाह है। जरूरतां-चावनां नै नीं झुठलाय सकै। औ जमारो अलभ्य है अर उणरी माया अलभ्य सुख। अेक जोध जवान देह फगत कीं तो रंग जीय लै। परिवार समाज, रीत-नेम सूं परै वा अेक साधारण नारी देह भी तो है।

...कांई-कांई सपना नीं देख्या होसी। कांई-कांई कल्पनावां नीं करी होसी। पढी-लिखी है, कांई चीज सूं अणजाण है? टीवी-फिलमां अर इंटरनेट पर कांई कोनी देख्यो होयसी। प्रयाग सूं खुसुर-पुसुर बात करतां केई बार सुणी है। कितरी मदहोशी अर नशा मांय डूबी बात करती, जाणै प्रयाग खुद उणनै सांप्रत परस करै है। अर उण परस नै जीवै है आंख्यां मींचनै। बेगा मिलणै री प्यास... मद भर पुकार... केई अणसुण्या सबद... केई उंसांसा न्हाखता पासल फोरतां... राती-लाल आंख्यां देखी है। उफ!

याद करनै वामा री मां रै छाती सांप लोटै है। अैड़ी पीड़ री वा दो बार साखण होयी है। रमा अर पछै वामा। वा ई तड़प अर वा ईज बेचैनी।

पण लोग कांई कैयसी?

नैतिकता रै लिहाज सूं पाप है पण मानव नीति सूं आ अेक फगत क्रिया है।

कांई करै... कांई नीं करै। किणनै बूझै? दुनिया तो इण बात री साझीदार कदैई नीं बणैला, पण हां! वामा रै पापा नै बूझ सकै। बेटी री बात उणरै ईज पापा नै किण मूंढा सूं कैय सकैला। पण कैवणो ईज पड़ैला। वामा म्हां दोनां रो अंस है। कन्यादान करता तो जोड़ै सूं दोनूं करता तो औ पुण्य म्हैं अेकली क्यूं! रमा रै उणियारो जोयां की हीमत वापरी अर पछै वै दोनूं दूजै कमरा में मंत्रणा करै हा।

औ तो होवणो ईज हो। अेकर तो वामा रा पापा भाभरा रा भूत होया। राता-पीळा पड़्या, पण विगत री केई बातां.... वामा री खूटती सांसा। अेक बाप री बेटी सारू चिंत जकी जलमी जद सूं आज तांई है। अर आज चरम माथै पूगगी है। कीं समझायां-बूझायां पछै वै वामा री मां नै भींचनै यूं रोय पड़्या जाणै वामा उणां दोनां रै गरभ मांय पाछी धड़कै है। इण दुनिया में केई बातां अैड़ी है जकी आदमी सूं सदा छानी है, पण वामा रा पापा आज कीं दूजा है। रमा बाईसा साच कैवै है कै मिनख जमारै आयनै जमारो लूखो नीं रैवै। अेकर ई सही, पण... पर कुण?

''संजय?''

''हां संजय। औ जोड़ो प्रयाग-वामा नीं बल्कै संजय-वामा है।''

''मानैला ?''

''क्यूं नीं मानैला ? वामा रै प्रेम रो साचो साथी संजय है। उणरै दरद सूं घायल संजय है, उणरी पीड़ रो साझी संजय है... रात-दिन पगां ऊभो संजय है... उणरो जीवण संजय री आंख्यां मांय रीतै है... उण सूं बत्तो वामा रो दरद समझण आळो कोई है दुनिया में ! हर हाल में वामा रै साथै कोई है तो संजय... संजय... संजय।''

''वामा ?... उणनै कांई कैवां ?''

''उणरी आंख्यां पढी हूं। किण कदर निरास अर घायल है। आपां सगळां उणरै साथै हां, पण उणरो काचो हिवड़ो केई बातां सूं टूट्यो है। आपां उण साम्हीं रोय सकां, पण किरचां नै नीं जोड़ सकां, जीवण री कीमत समझाय सकां, पण जीवण री प्यास नीं। औ काम अेक प्रेमी उणनै आपरो बणायनै कर सकै। आपां कीं मरहम देय सकां, फगत इण बात सूं कै संजय उण सूं प्रीत बांधै अर वा संजय सूं प्रेम करै... कीं छिण जीव सकैला भाभीसा ! भाईसा नै समझाओ... आप ई समझो इण बात नै... वामा री जित्ती जूण बची है उणनै रमा मत बणण देवो... उणनै साचो मिनख जमारो जीवण द्यो। उणनै पूरी लुगाई रो जमारो जीवण द्यो। भलां ई दोय घड़ी रो ही, पण कीं छिणेक सुख रा टिपा उणरै मरुथळ होवतै मन अर तन पर न्हाखो... वा घणी तकलीफ में है... आपां अपार दुख में हां, पण नारी जूण री इण रीत नै पूरण करणो आपणो फरज है...''

कैवता-कैवता वै झार-झार रोय पड़्या अर भींत रो स्हारो लेय हेठा बैठग्या। वामा रा पापा अर भाई दौड़ता आया अर डबडबिया होयनै संभाळ्या। इण छाती फाड़ रुदन री पीड़ कोई समझ्या, कोई नीं समझ्या।

''नीं-नीं भुआसा ! अंत समै मांय कोई गुनाह मत करावो ! इण जीवण री आ ईज तो अेक कमाई है कै संस्कारी बेटी हूं। मां-पापा जिण दिस रो सपनो देखायो, देख्यो... राजी होयी। मन री कदैई नीं सुणी...''

''मन री सुण म्हारी बच्ची ! कीं दिनां फगत अेक नारी मन बणनै जीव... जीवण नै संपूरण कर...''

''जीवण तो नस्वर है। इणरो सोच क्यूं करूं... बल्कै सपना ई नस्वर है...''

''दूजां रो भुळायो सपनो नीं... अेकर सपनो देख थारी खुद री आंख्यां सूं... थारै खुद रै अंतस रै कैयां... कीं जकौ अधवीटो है वो पूरण कर... कांई ठाह इण सपनां सूं सो-कीं ठीक होय जावै ! छेकड़ अेक डील मन सूं ईज तो संचालित होवै। स्यात मन री गति देह में बदलाव करै अर थूं सावळ हो जावै। अर... अेक बात फेर सुण... आपणी संस्कृति में रीत मुजब वरत रा उजमणा करावीजै...। आ मानता है कै गवर, तीज रै उजमणा बिना गत नीं होवै। औ उजमणो मिनख जमारै रो है... बेटी... !''

''पण इण बात नै म्हैं कीकर मान लूं... भलां ई म्हारो अंतस कांई भी चायो, पण जको कावळ है वो कीकर मानूं... थे ईज बताओ भुआसा!''

''औ कावळ नीं है... औ अनुस्ठान है... जको म्हैं... भाभीसा अर भाईसा... अर संजय मिलनै तेवड़ियो हां। म्हे सगळा थारै सागै हां तो पछै किण बात री ऊंच-नीच गैली! मां-बाप चावै जकी ऊंच अर नीं चावै जकी नीच। ...धीव! मन री गळगळाटी नै हेठै न्हाख अर... थारी मंसा पूरण कर... इण देही नै संपूरण कर... इणनै पूरण करण री आसीस है... अर आदेस है...''

भुआसा रै खोळै मांय वामा मन सूं हारी लथपथ पड़ी है। अैड़ी विकट तिरसंकु मांय मनड़ो। कीं महीनां पैला संजय रो सपनो मन मांय रखतां तो हरख कीं दूजी भांत सूं जोव सकती, पण अब... कियां? संजय सखा बणनै रैयो हर हमेस। आजकालै कैड़ो विलखो रैवै। जद सूं म्हारै अठै आवण रो ठाह पड़्यो है कॉलेज छोडनै अठै सूं हिलै नीं है। म्हारै सूं बात नीं करै, पण म्हैं सो समझूं। भुआसा रै खोळा मांय बड़नै दुख भरयो रोवणो म्हैं ई सुण्यो हूं। वो जाणै कै म्हैं अणजाण हूं, पण नीं, म्हैं सो-कीं जाणूं!... काश! उण दिन संजय री बात पर गिनार करयो हुवतो तो...

मन मांय कीं आस-सी जागै है। मनड़ो पसवाड़ो फेरै... भुआसा अर संजय मिलनै अै दिन फिरोळणी चावै... वा ना-नकार करती इण गेलै चाल ही पड़ी। संस्कारी टाबरी ईज तो है। मगसा पड़्या सपना कियां नीं अंखुआवै। बडां रो आदेस ईज तो सदा सूं मानती आयी है। रेत में दब्या-धंस्या सूखा बीज अेक छांट सूं पाछा सरजीवण होवण लाग्या। इंजेक्शन दरद अर दुख री भांय-भांय रै बिच्चै चिड़कोल्यां री चींचीं सुणण में आवा लागी। साम्हीं खिलतै पुसप री पेंटिंग पर अब निजर पड़ै अर कीं-कीं मोहै भी। इत्ता दिनां पछै भींत रै रंग पर अब निजर पड़ी। हळको हरयो है! चादर गुलाबी है। उण पर हाथ फेरै...

....वामा नै बालपणै सूं आज तांई री सगळी बातां याद आवै है। हर बात मांय संजय कनै ऊभो दीसै। ...सुखद दिन हा। संजय रै साथ रा। कीं घड़ी सारू वा आपरी पीड़ बिसरा देवै अर ध्यान कठै रो कठै जावै परो। आं दिनां रत्ती भर सोराई वापरी। सगळा कीं निरांत मैसूसी है।

मां उणरो उणियारो जोवै अर आसीस देवै... रमा नै ई। बाईसा किण काळजै रा लुगाई है! दुखड़ै रै मांय यूं खांचनै कीं ठंड रा छांटा सगळा पर न्हाख दिया। डाक्टर अचूंभो करै हा, आं दस दिनां मांय आयै सुधार नै देखनै। वै भी खुश है उणां रो मरीज सावळ हो रैयो है। अेक डाक्टर सारू इण सूं बडो इनाम कांई हो सकै! सगळा डाक्टर वामा रै आं दिनां आयै बदळाव पर स्टडी कर रैया है। डाक्टरां री टीम बिचाळै केई डिस्कसन चालै। सगळी जांचां पाछी होवै अर हरेक मांय आस बधावै जैड़ो सुधार। अैड़ो केस पैली बार

देख्यो है कै कीं दिनां मांय ब्लड कैंसर रै मरीज री हालत संभळण लागी है। डाक्टरां रै उणियारै आस देखनै वामा आस रा फुलड़ा औरूं सजावण लागी।

...संजय अजै लुक्यो-गम्यो-सो रैवै। वामा कीं कैवणी चावै, पण वो मुख मोड़नै रैवै। वा समझ नीं सकै कीं भी बात। कांई है संजय रै मन मांय? कोई समै जकी संजय री कामना ही वा अब पूरी व्है सकै तो अब इयां विलमो क्यूं? सगळां री रजामंदी सूं म्हारा ई मरया सपना पांगर रैया है तो पछै संजय इयां विलखो क्यूं? सबसूं बडी बात कै पापा-मां आग्या देय दी है। पछै वो दुमणो क्यूं है?

कांई आं दिनां मांय कोई दूजी सूं मन लागग्यो है? इण बात पर वामा रो जीव हामळ नीं भरै। ...संजय पर हमेस सूं खुद सूं बत्तो भरोसो रैयो है। भरोसा री केई बानगियां देखी है। साच बूझो तो संजय रै साथ सूं वा सदा नचींती रैयी है। ...अब संजय रो साथ मिल जासी। सोचनै कीं सोराई है। इयां दिनां कदै कीं अर कदैई कीं सोचै... केई बार मुळक वापर जावै उणरै उणियारै।

...संजय रै जैड़ी अजकी-अबखी घड़ी आई है कदैई किणी रै जीवण में नीं आई होवैला। रमा भुआसा रै खौळै मांय संजय बचिया दांई पड़्यो है। वै मां दांई, साथी दांई, राजदार दांई उणरै बाळां माथै हाथ फेरता केई थ्यावस-भरोसो देवता जावै अर उणरी निजरां कठैई शून्य मांय है, पण साच तो वै कठैई है ही कोनी। वै खुद मांय ईज समायती जावै है। बिना कोई विचार रै संजय विचारां सूं भरयो है। मनहूसियत रा तीन महीनां अर उण पर आज रो दिन... रमा भुआसा री कीं दिनां पैली आळी बात जिण पर वो राजी होवै या वैराजी! हंसै या रोवै! खुश होवै या नाराज! इंछा पूरती री कामना करै या ठुकराय दै! आ कैड़ी परीक्षा है जिणरो नतीजो अर बिना नतीजो सो-कीं दुखदायी है। सुख देवण आळी बात अैड़ी खौफनाक तरीकै सूं, दुख सूं सरू होवैला अर मातम पर खतम... औ नीं सोच्यो हो। पण वो वामा रो भरोसैमंद दोस्त भी है अर प्रेमी भी, टूट्यै हियै नै थांबण आळो भायलो अर अब सूं उणरो परणेत भी... बिना ब्यांव-फेरां रै परण-वरण कियां होय सकै? वरण म्हारै मन रो उण सूं सदा रो है... सदा रैवैला पण तन रै परण रो कांई...?

उफ! कांई फरज भोळाय दियो भुआसा। कियां निभावै? औ सो-कीं तीन महीनां पैलां भोळायो हुवतो तो वो भुआसा रा पग खोळनै पीय लेवतो। पण अब किण विध? ....कियां मांडैला इण रासै नै?... वा प्रीत रा बोल नीं सुणणा चाया म्हारै मूंढै सूं तो अब यूं...? ना-ना, नीं कर सकै... संजय यूं नीं कर सकै... कदैई नीं... ना... कदैई नीं।

वो चीख पड़्यो। दुख, अफसोस अर पछतावै सूं भरयो संजय अब भौचक-सो बैठो है। रमा भुआसा उणरै मौरां हाथ पळूसता थ्यावस देवै... माथै हाथ धरता आसीस देवै। छेवट संजय उभो होयो, जाणै अरजुण संग्राम सारू ऊभो होयो व्है। उणरै हियै रै घमसाण रो हाहाकार फगत वो ईज सुण सकै।

हवळै सै चाल्यो। आडा नै टल्लो दियो... इंच भर खुल्यो... वामा उदास, थाकी, निपट अेकली पलंग माथै बैठी है। खिड़की सूं बारणै जोवती जाणै खुद सूं आंख्यां लुकोवै है। गोडा सूणी चादर ढकी है। अस्पताळ री मनहूस चादर जकी खिलतै प्रेम रंग जैड़ी गुलाबी रंग री है, पण बेजां ई दुखवरणी लागै। अस्पताळ री चीज किणनै मोहै?

आडा रै पल्लै री चूं-चरड़ सुणनै निजरां फोरी... पल भर में च्यारूं आंख्यां कोयां सूणी भींजगी।

संजय री लाल आंख्यां, उदास मुखड़ो... थाक्यो... हांफ्यो... जाणै केई कोसां अळघै सूं आयो है। वा सापती ही, अेक बात बणगी आज संजय नै अेकला नै कनै देखनै। उणनै लाग्यो ओळबा रो तरकस वा कूड़ै मांय न्हाख दियो हो। ना! अजै कीं ओळबा भरया है। पण वै बातां याद नीं करणी चावै। उण माथै धूड़ न्हाख दी है। आजकल जीव कीं नवो सो है। संजय रै स्वागत में माडाणी खांचनै मरी-सी अेक मुळक चिपाई। कित्ता दिनां पछै आयो है संजय... उणरो भायलो बणनै पैलां दाई सागै ऊभो है। वा संजय साम्हीं मन खोलनै राखणी चावै। कीं विगत बातां... जठै सो-कीं सांतरो हो, पाछा देखणी चावै। कॉलेज रा दिन... बालपणो... सो-कीं याद करणी चावै। अळघा जावतां रस्तां नै अेक करणी चावै...

संजय रो अंतस चिंदी-चिंदी... आंख्यां आसूंझाण...। सिर नमायां ऊभो है। आं दिनां रो दुखड़ो सगळा नै न्यारी भोमका सूंपदी है। पुसप तुली वामा नै जुझारू री... दुख दरद रो हेवा संजय नै उबारू री। समै रै वसी सगळा पूतळा। वामा रो उणियारो देखनै चायो कै झट उणनै मन में ऊंडै कठैई खसोल न्हाखै कै कोई नीं जोय सकै। पण... ऊभो रैयो। ...इयां संजय नै देखनै कीं चोखो लाग्यो है। वा तो मान बैठी ही कै उणनै बिसार ही दी है पण स्यात नीं!... अै राती लाल आंख्यां...? ओह? संजय! औ ईज थ्यावस चाईजतौ... केई दिनां सूं रीती ही। आज थनै देखनै कीं सांयती-सी... पण इत्ता दिन क्यूं लुक्यो रैयो म्हारै सूं?

वामा!... बिसार-भूल रो काम अंतस रो है... म्हारै सारै कोनी। जद बिसारणो चायो जद ई नीं कर सक्यो अर अब तो कांई बिसारूं अर कांई याद करूं...! ...कांई ठाह कांई चावूं अर कांई बिसारणो चावूं। भेद ई नीं दिखै। ...समै मांय सूं छिण नै काढ देवै तो समै कांई रैय जावै! वो ईज म्है हूं थारै बिना... जठै भूल-पांतर, याद-बिसार सगळी थूं ईज है तो कठै कांई सोधूं अर क्यूं सोधूं? कीं दरकार ई नीं रैयी। थनै देख्यां पछै सांयती कांई ठाह कठै बधगी। थारै सागै हूं म्हैं अर म्हारै मांय थूं! तो बीजी ठौड़ कांई सोधूं?

अेक-अेक आंख आपरी जोड़ी बणायनै कीं कैवै अर सुणै। डबडब आंख्यां। ...आजकालै आं आंख्यां रो अेक ईज काम! आंसू आठूं याम!

आज कीं जेज कनै बैठ साथी! आ संजय... वा हाथ पसार्‌या अर नीचै उतरती ऊभी होवण री खेचल करी, पण संभळ नीं सकी। डगमगावती वामा नै संजय आय झट थांब ली। उणनै भरोसो हो कै संजय रै होवतां वा संभळ जावैली। छाती पर सिर राख नैछो कर्‌यो। अब सो-कीं मिलग्यो। और कीं नीं चावै। संजय री छाती हमेस सारू उणरी है... वा खुश है। और नचीती होई अर मूंदी आंख्यां मूंढो ऊंचो कर कीं परस रो पडूत्तर चायो... पण...

...वौ हवळै-सै पुसप राखै ज्यूं उणनै पलंग पर बिठायी अर छाती चेप्यां ई बिस्तर पर लिटाय दी। दोय छिण सांसा अळघी जावती लखाई, तो वा झट आंख्यां खोली। संजय कनै कोनी! काळजो धक्क!

कुरसी पर नीची धुण कर्‌यां निरास बैठो है। संजय रो हाथ जठै पड़्यो... उणसूं अेक इंच री दूरी पर कंवळो पीळो नितेज धूजतो उणरो हाथ।

संजय वामा रै पीळै धूजतै हाथ नै परस कर्‌यो अर वामा री डबोडब आंख्यां मांय चाह री नाव नैड़ी आवती दीसी।

... ...

वो हाथ खांच लियो।

वा हजार सवालां सूं भरी निजर उठाई।

संजय ना री धुण में माथो हिलोर रैयो हो।

''ना वामा, ना! थारै खातर चावना अंतस री है, आतमा री है... इण खौळियै री नीं। म्हैं इण पथ नीं चाल सकूं...'' मरी-सी ऊंडी आवाज आई।

...औचक इण बात सूं मूंढो ढांपनै रोय पड़ी ।

नवै दुख अर नवी पीड़ सूं लबथब इण छण मांय बेजां लाज अर रीस सूं कांपण लागी... किरोध अर अपमान भरी आंख्यां राती लाल... कठै लुकै इण बेदरद तिरस्कार सूं... ठुकरायोड़ै इण छिण री आग अर लाज री मारी नारी का तो धरती मांय समाय जावणी चावै... का अपमान री आग सूं भसम कर देणी चावै...

❖❖

सीली संद जमीं

''औ देखो! औ है इण घर रो बेस्ट कमरो... म्हारै लाडलै देवरजी रो कमरो... है नीं शिखा.. ?''

...भाभीसा रै लाडलै देवर जी रो! ...मतलब ...म्हारो कमरो सै सूं चोखो! ...अहा! कितरा आणंद अर हरख देवण आळा है अै सबद। सोचतां ई वा खुशी सूं भरगी अर इण बात रै पडूत्तर मांय जेठाणी जी साम्हीं फगत लजखाणी पड़गी। कोई दूजो बगत व्हैतो तो इण बात पर कीं बोल्यां बिना नीं रैवती, पण आज आपीआप उणरी नस छाती सूं लागगी।

औ समै लाज सूं बेवड़ी होवण रो ईज है। परणियै फेरै री बींदणी रै इण लजखाणै रूप माथै तो देवता ई बलिहारी जावै। वै ई मिनख जमारै आयनै इण दिनां रो आणंद लेयां बिना नीं रैय सकै। आज इण जगां ऊभी नै दादीसा रा अै बोल याद आयग्या। ...कैयो जावै कै जिण घर में नवी बींदणी कंकू पगल्या मांडै वो घर भागधारी व्है अर बडेरां री आसीस परवाणै ईज अै दिन देखण नै मिळै।

अैड़ा मिजाजी दिनां सूं पोमीजतो औ घर पुसप अर मिठाइयां री सौरम सूं म्हैक रैयो है। परण्यै फेरै री ब्यांवली बींदणी शिखा नै जांन रै पाछी आयां होवण आळी सगळी राह-रीत निवेड़्यां पछै सुहाग सेज रा सुपना सजाया उण थळगट तांई जेठाणी जी पूगावण आया हा, जिण मांय प्रवेस सूं उणरो मधुमास सरू होवैला। उणरै सपनै रो कमरो... सपनै री सेज... सपनै रो सासरो अर सपनै रा ई साथी पिवजी। उठै अेकै जगां ऊभी ई वा झट सूं कमरै नै अेक छानी निजर सूं देखणो चावती। जेठाणी जी री बातां बिचाळै ई छानै-छानै कमरै रै रंग-अंग री तस्वीर निजरां सूं हियै मांय उतार ली ही। पिया सूं मिलण री उंतावळी ही, पण उण सूं पैलां कमरै नै देखण री खाथाई मन मांय जागी। वा उण तस्वीरां सूं कमरै रो मिलाण करणो चावती जकी नलिन उणरी निजरां मांय, हियै मांय उगाई है।

आपरी बात रै पडूत्तर में हामळ सारू जेठाणी जी उण साम्हीं जोयो अर बोल्या, ''है नीं... साच्याणी कितरो सोवणो... देखो हो बींदणी? ओऽऽ...'' कैवतां वै खुद ईज आपरै माथै अेक चपत मारी अर बोल्या, ''...म्हैं बावळी समझ ई नीं रैयी हूं। आजकाल तो व्हॉटसअेप सूं फोटुवां रा लेण-देण हुवै है। बींदणीसा कदका ई कमरै रो इंटीरियर देख

लियो होवैला... क्यूं साच कैवूं नीं ?'' कैवतां वै जोर सूं हंस्या हा अर केई डिबेट मांय धारदार बोलण आळी शिखा आज बारूंबार लाज सूं बस दोवड़ी होयनै रैय जावै। सोचण लागी कै आ बात आंनै कीकर ठाह पड़ी ! अर साच्याणी नलिन आपरै नवै इंटीरियर आळै कमरै री कितरी फूटरी-फूटरी फोटुवां शेयर करी ही। बदळै मांय वा ई आपरै नैनै-सै कमरै री फोटुवां मेली ही। खुद रै कमरै नै दूजै सूं चोखो बतावतां अेक-दूजै सूं छेड़-मस्ती करता घणाई चिड़ावता। वै बातां याद आयगी शिखा नै।

नलिन रै भाभीसा सूं पैला दोय बार मिली है, पण आज फेर भी संको-सो आवै है... साची पूछो तो वा इण अमोलक घड़ियां नै अेक लजीली नारी दांई ईज जीवणी चावै है। अठै वा ना इंजीनियर शिखा है, ना ई वाद-विवाद री तेजस्वी नारी। बस, अेक फूटरी बींदणी जकी गैणां सूं लक-दक आपरै सपनां री थळगट ऊभी है।

अबै तक उणनै फगत पेंटिंग-किताब, कॉलेज सूं ईज प्रेम रैयो है। ब्यांव सूं कीं पैलां, मां गैणां री डिजायन देखाई तद वा कॉम्पिटिशन री त्यारी मांय डूब्योड़ी ही। उणनै नीं ठाह कै कांई बण्यो, कांई घड़्यो। बेस री डिजायन-कलर सूं कदैई उणरो कोई वास्तो नीं रैयो। सो-कीं सुरभि ईज दाय करयो अर बणवायो। उणनै तो अै चीजां हमेस सूं आफत लागै। पढतां, नौकरी करतां कद नलिन सूं प्रेम होयो वा जाण्यो ई नीं।

तद सूं वा अेक न्यारै ईज नसै मांय डूबण लागी जको प्रेम सूं ई कीं न्यारो हो... मन भरयो हो। पछै दोनूं घरां री रजामंदी अर धूमधाम सूं औ ब्यांव। ...अर साम्हीं फेरां री त्यारी होवती ही।अैड़ै ब्यांव री कोई होड नीं कर सकै। सैकड़ूं लव-मैरिजां वारूं इण रीत-रिवाज आळै ब्यांव पर। शिखा हर रीत निभावती वेळा औ सोचती रैयी। हरेक बात माथै नाक-भौं सिकोड़ण आळी अर बुद्धिमानी सूं तरकां रा तीखा जवाब देवण आळी तेज-तर्राट बेटी रो अैड़ो गऊ रूप देखनै मां हैरान ही, पण मनोमन वारी जावती रैयी। रूपरूड़ी शिखा, जिणरी बुद्धि अर रूप रो कदरदान हर कोई हो। आज सगळा नलिन रै भाग नै सरायो।

...सुहाग सेज माथै बैठी शिखा नै आपरै कमरै री याद आई अर आ सोचनै राजी होयी कै अब सूं सासरै में औ कमरौ ई उणरो आपरो है। गुमेज हुयो खुद री इण नवी मिल्कियत पर। पीहरै आळो उणरो कमरो भलांई नैनो हुवो अर घर में लारलै पासै पड़तो, पण उणसूं ई वा घणी राजी ही। अेकर तो लारलै कमरै सूं निरास हूयी ही, पण पछै दिन पर दिन उणनै वो कमरौ व्हालो लागतो गियो अर उणसूं प्रेम व्हैतो गियो। कीं दिनां पछै समझ आई कै घर रौ लारलौ निजारो निरवाळो ईज व्है जिणरो रंग पूरै घर सूं कीं दूजो व्है। अेकांयत आळै कमरै मांय वा सांयती सूं बैठी घंटां पढती रैवती। घर मांयलो कोई हाको-दड़बड़ नीं सुणीजतो। लारली लैण रा सगळां घरां रो लारलो पसवाड़ो दिखतो जाणै फौजी लैणसर ऊभा है। उणनै आभास होवण लाग्यो कै घरां रौ धकलौ भाग कित्ता आडंबर सूं

भरयो, थेथड़ियोड़ै फुटरापै रो व्है, जिणमें घर रै साचै रूप नै जोरां मरजी मांय धकेलनै रोड़ै, लुकोवै अर माथै फूटरा कंगूरा बणावै, सजावै। छेकड़लो हिस्सो कितरो सरल, दुरावरहित आपरै कोरै कट, मूळ रूप मांय होवै। लारलै हिस्सै मांय जिंदगी रा सगळा चितराम आपरै असली रूप मांय दीसै। मकान या इंसान धकलै आडंबर आळै रूप मांय कित्ती जेज रैय सकै। छेवट सगळा दिखावा त्यागनै असल रूप मांय आयनै जीव सोरो करै। जिण भांत नवी ड्रेस दिखावा री व्है, जिणनै पैरनै मिनख अधर व्है जावै। मनचायी हरकत करणै री अणदेखी पाबंदी लाग जावै अर कैद होयनै रैय जावै। नवी ड्रेस माथै किणी री पिछाण नीं व्है, किणी रै डील रो पक्कायत ठप्पो नीं लाग्यो होवै जितरै वो हेज नीं बांधै। पण रोज पैरीजण आळा मांयला गाभा, पजामो-कुरतो इंसान री असली अर निजूं सौरम सूं लकदक रैवै। उणनै पैरनै वो खुद नै पूरंपूर फैलाय सकै, सहज रैय सकै।

लारलै घरां रै घर रा नै वा अब कमरो मिल्यां पछै देखण लागी ही। आं बडा बंगलां रै मेन गेट री कानी सदा ई सून-सी रैवै या फेर कुत्तो लेयनै बैठ्यो गार्ड दीसै। फूटरा घरां में मोटी-मंहगी गाडियां ऊभी दीसै, पण लोग नीं। वै कांई ठाह कणां आवै अर कणां जावै, ठाह ईज नीं पड़ै। आवै ई है या नीं, औ ई औसको नीं पड़ै। इण पॉश कॉलोनी रो औ हाल है कै पाड़ोसी सूं प्रेम तो अळगौ, आपसरी मांय जाणै ई कोनी। केई बार अखबार मांय सोग-संदेस पढै जणै ठाह पड़ै कै मरण आळो लारली गळी मांय ईज रैया करतो। पण वा आपरै लारै कमरै में आयां पछै दिन निसर्‌यां केई जणा नै उणियारै सूं जाणण लागी। अचरज हुवतो कै इत्ता साल अै सैंग कठै गायब हा? दिख्या क्यूं कोनी कदैई? केई दिनां पछै कोई-कोई सूं मुळक रो तांतो बण्यो। उणनै भरोसो हो कै मुळक सूं अेक दिन मेळ जरूर हुवैला। मुळक रै पुळ माथै हालतां पछै कैयां सूं हाय-हैलो, राम-रमी होवण लागी। पछै दोय साथणियां पक्की बणगी कै अेकै दांत रोटी टूटै। जिण बडै बंगलै नै देखनै वा सोचती कै इण घर री लड़कियां कीं दूजी तरै री परियां ज्यूं हुवैला, पण साथणियां बण्यां पछै वै परियां प्यारी लड़कियां ई दीसी, जिणां रो पालण-पोखण भलां ई नौकरां-चाकरां आळै घर में होयो होवै, मां-बाप ऊंचा लोगां रै बिचाळै उठ-बैठ राखता होवै, पण है तो इंसान ईज। साथणियां रै साथ रौ जस वा उण लारलै नैनै कमरै नै देवै।

...माथो झाटकनै वा आपरी सोचां में गुम होवण री आदत सूं बारै आवण री खेचल करी। इण अणमोल समै रो आस्वादन इयां कियां लारली बातां मांय गुम होयनै कर रैयी है? खुद माथै हंसी आई। औ समै भावी सुखमय जूण री कल्पना रो है अर वा बावळी बीत्यै मांय गोता खावै है।

...बेकली अर उडीक रै पछै औ दिन ऊग्यो है अर वा आपरै कमरै मांय ऊभी है। ...मां रा बोल याद आया—

''लुगाई रा दो-दो घर व्है सकै अगर दोनूं घरां रा मिनख चोखा व्है अर लुगाई रै मन री गत कीं समझता होवै तो। नींतर अेक ई घर उणरै पांती नीं आवै। वा लुगाई सदां ई घर सारू तरसती रैवै।''

...पण वा तो नचींती है। चोखा मिनखां रै बिच्चै आई है अर औ कमरो ई उणरो आपरो निजू है। आज उत्ती ईज राजी है, हरखै है जित्ती दसवीं बोर्ड री टेम मां उणरै सावळ पढाई करण सारू लारलै छैड़ै रै स्टोर नै झाड़-बुहार नै शिखा रो कमरो होवण रो अैलान कर्‌यो हो। उण घड़ी मां कोई साम्राज्ञी लागी ही जिणरो आदेस कानून है। न्यारो कमरो मेधावी शिखा नै परीक्षा रै परिणाम सूं पैलां रो इनाम हो। उणरै रिजल्ट माथै कोई नै बैम नीं रैवतो। सदा ई अव्वल रैयी। इंजीनियरिंग पूरी होवतां ई जॉब अर पछै सागै दूजा कॉम्पिटिशन री त्यारी करतां अै सुभ दिन अर औ सुभ स्थान। ईश्वर सो-कीं मनचायो दियो। वा दोय घड़ी आंख्यां मींच नै उण अलौकिक नै धिनवाद दियो। ...नैड़ी आवती पगां रै सरसराटी सूं विचारां सूं बारै आवती आंख्यां खोल दी अर औरूं सांवटीजनै बैठी। नलिन आय रैया है...

...नैड़ै दिनां रै ब्यांव री सौरम घर मांय सूं झर रैयी है। घर रै बारै सामान अर बिखरी कनातां सूं लागै कै घर अजै ब्यांव मांय मगन है। नवी बींदणी आंगणै मांय रुणक-झुणक चालै अर उणरै मोहक रूप री छियां घर माथै दीसै। वो राहगिरां नै आपरो औ सुख बतायां बिना नीं रैवै अर बदळै मांय वै मुळकता बधाई दियां जावै। मिठाइयां अजेस ई रसोड़ै मांय डेरो जमायां बैठी है। शिखा री खासी अपणायत जुड़गी है सगळी आयोड़ी बैन-बायां सूं। कीं सांयनी है कीं बडी है, पण नलिन सूं जोड़नै अै सगळी प्यारी लागै। अजै तो फगत हंसी-हथाई अर जीमण मांय ईज समै बीत रैयो है। जिनगाणी री दूजी अबखायां-चिंतावां नै परिवार कीं दिन सारू बिसार दी है।

आज ब्यांव पछै री हथाई मंडी है, जिण मांय ब्यांव कैड़ो रैयो, कांई बातां व्ही, घटनावां व्ही, कुण कांई पैर्‌यो, कुण कैड़ो लागतो , कैड़ो नाच्यो अर कीकर, रीत-रिवाज कैड़ा निभ्या—आं सगळी बातां पर हळकी हंसी भरी चरचा चाल रैयी है। ब्यांव री जुगाळी है अर कमती-बेसियां रो लेखो-जोखो, हंसी-ठठ्ठा है अर खाण-पीण रा दौर, ब्यांव पछै री बिसांई है अर जावतै पांवणा-पांवणियां सूं बात-बंतळ। शिखा ई झींणो घूंघटो काढ्यां, थोड़ो-सो ओटो लियां बैठी है। सुणै है सगळां री बातां अर उण बातां सूं उणरै सुभाव री पारख करै।

बातां-बातां मांय बात री ल्हैर सुहागरात आळै कमरै री सजावट तांई पूगी। नीलिमा बाईसा गरब सूं कैयो, ''कमरो म्हैं सजायो अर सबसूं बत्ती मैणत म्हैं करी जणै इतरी फूटरी फोटुवां आई है। दूजा सगळा तो बस यूं ईज दिखावटी रा हाथ राखै हा।'' वै मूंढो मचकोड़तां आपरी बात पूरी करी।

सगळा हां में हां मिळायी, पण जित्तै जेठुता जी निक्कू बीचै कूद पड़्या। बोल्या, ''अरे... अरे... भुआसा साव कूड़ बोलै है। अै तो मोबाईल पर आखी टेम होवण आळा फूंफोसा सूं बातां करता रैया हा। साची तो म्हैं मैणत करी ही... कूड़ बोलै भुआसा।'' कैवतां थकां आपरै भुआसा साम्हीं जीभ काढनै चिड़ावता भाजग्या अर भुआसा थोड़ा चिड़ता अर थोड़ा लाज भरी खीज अर दिखावटी रीस लियां उणां लारै भाज्या। अठै सगळां रै साम्हीं अबै लाज रै कारण कोई तरै सूं ढबणो, बात करणो दोरो हो अर औ ईज मिस दिख्यो भाग छूटणै रो। जठै शिखा बैठी ही उठै सूं साफ दीसग्यो कै स्यात इणी बीच कोई कॉल आयो हो अर भुआसा भतीजै लारै नीं बल्कै चार पांवडां पछै फोन देखता दूजा कमरै मांय बड़ग्या है। वा मधरी हंस दी। भतीजै रै भुआसा री वा खीज अर रीस भरी हालत जोयनै। ओ सोचनै जीव सोरो करग्यो कै वा अैड़ै परिवार मांय पग धरग्यो है जिण मांय आधुनिक चीजां रै साथै संस्कार ई उत्ता ईज अनुपात रूप मांय मौजूद है। उणरा नणद कॉलेज में है जका सगाईसुदा है, पण उण सूं उमर मांय नैना है इण कारण उणनै साव टाबरी लाग्या। उण मांय नणद रै खातर भाभीसा होवण रो भाव वापरियो अर सोच्यो कै नणद रै साथै हमेस प्रेम भरग्यो वैवार राखूंला। सोचती निरांत री सांस ली।

शिखा घर मांय सगळां सूं नैनी बींदणी है अर नैनां रै जीवण सूं बालपणो कदैई जावै ईज नीं। नैनां गिणीजता-गिणीजता बूढा व्है जावै, पण बडां सूं नैना सदा नैना ईज रैवै। इणी कारण नैनपणै रो भाव कायम रैवै अर बडा! ...छोटै भाई-बैन रै आवतां ई मोटा टाबर नै बाळपणै सूं ईज मोटा होवण रा ठोला दीरीजण लाग जावै, भलांई उमर अर अनुभव मांय सदा कमती होवो।

भुआ-भतीजां री हंसी-बंतळ देखनै उणनै पीहर री ओळूं आयगी। उठै होवती तो अबै तांई तो वा ई अैड़ी मस्ती मांय भेळी भिळ जावती। पण इण समै तो... वा टगमग जोवती-सी आपरै बाळपणै मांय पूरी पूगी ही कोनी जित्तै कोई हेलौ करग्यो—

''...नलिन रै कमरै सूं दरियां ले आवो बींदणी!''

दो छिण पछै ठाह पड़्यो कै औ काम उणनै ईज भळायो गियो है। भळावण आळा भुआ सासूजी हा अर ऊपर री ओर हाथ सूं सांनो करतां थकां बात पूरी करी, ''...कीं दरियां कम पड़ै... नलिन रै कमरै मांय पछीत माथै पड़ी है।'' ...पछै कीं सोचतां थकां बोल्या, ''...का स्यात अलमारी रै लारै ई पड़ी व्है सकै... थे सोधनै ले आवो नवा बींदणी... म्हनै सावळ बेरो कोनी कै दरियां कठै सीक पड़ी व्हैला।''

बडोड़ा बाईसा नीलम चाणचक ई बोल पड़्या, ''अरे भुआसा, भाभीसा रो आपरो कमरो है... भाभीसा खुद सोधनै लेय आवैला।''

''अरे! भाभीसा रै कमरै सूं कांई मतळब! अजै आयां नै चार दिन नीं हुया अर नलिन रो कमरो आंरो कीकर होयग्यो... ?'' वै हाथ सूं पूछता कमर माथै हाथ दियां बोल्या।

सुणनै शिखा माथै नै और हेठै कर लियो। नलिन लारला दिनां भुआसा रै सुभाव री बात बतायी ही कै थोड़ो-सो आकरो सुभाव है.... बालविधवा है अर बरसां सूं अठै ईज रळ्या-मिळ्या है। इण कारण म्हांनै पराया नीं लागै। बडेरा है अर सगळां रो लाड राखै... शिखा! आपनै ई घणोई हेज देवैला... बस कीं धीजै सूं सांवटणो पड़ैला भुआसा रै हेज नै। अर साच्याणी आं दिनां मांय शिखा नै उणां रै आकरै सुभाव रा लक्छण अणूता नीं दीस्या। पण हां बोलणै अर हाका करणै रो सुर थोड़ो-सो तार सप्तक नै डाक जावै, पण फेरूं ई उणां पर रीस नीं आवै, क्यूं कै जीव रा भोळा है। पण अबै आळी आ बात शिखा रै सीधी हियै मांय लागी। इत्ता जणां बैठा हां, पण उणां नै इण बात नै सुधारण रो कोई नीं कैयो फगत परणीज्योड़ा नणद कीं कैय सकिया!

...वा बोलीचाली उठी अर चाल पड़ी आपरै कमरै कानी... ना... ना...नलिन रै कमरै कानी। नीलम बाईसा, शिखा रै साम्हीं स्याय भाव सूं लगोलग जोवै। शिखा मैसूस करयो... नीलम परण्योड़ा है, समझै अेक बींदणी रै काचै हियै री बात नै। मन मांय उणां नै थैंक्यू दियो ।

ब्याळू री वेळा टेबल माथै गरमागरम भोजन सजाय रैयी ही। नलिन दोय बार आयनै मसखरी करनै गया है। अेकर तो छेड़तां थकां आंगळी मुरड़ता पूरै डील रो यूं टल्लो दियो कै वा झेंपगी लाज रै मारै। पण आपरै काम मांय लागी रैयी। भुआसा किणी टेम आय सकता हा। पण अेकांयत देखनै नलिन री हीमत बधती ई जाय रैयी ही। अठी-उठी जोयनै फुसफुसावतां कैयो कीं... वा नासमझ-सी साम्हीं जोयो तो ऊपर कानी सांनो करयो अर बोल्या, ''भोजन में अजै टेम है... अेकर ऊपर आ जाओ... प्लीज...'' कैवतां अेक न्यारै अरथ मांय मुळकता अेक आंख दबायनै इसारो करयो। लाजां मरती वा दिखावटी रीस सूं ना रो लटको लियो अर काम मांय फंसी होवण रो दिखावो करयो। कनखियां सूं जोयो... नलिन गया परा है उठै सूं... उणनै चोखो नीं लाग्यो यूं जावणो। पाछी काम करण लागी ही कै पट सूं कीं कनै आय पड़्यो कांकरै ज्यूं बाजतो। अचंभै सूं जोयो तो कागज जैड़ो दीस्यो। ...ओहो लवलैटर! ...प्रेम पाती!! ...मधुयामिनी रै रंग सूं सरोबार शिखा पिया री पाती अेक सांस मांय पढली...

''...ओ म्हारी जीव री जड़ी ...थांनै काम री पड़ी ...तरसै थांरा पिया जी... म्हारै कमरै कानी... थोड़ा आओ तो सरी... फगत शिखा रो नलिन..' पछै दिल रा केई निसाण... प्यार री इमोजी सूं पुरजो भरयो हो। गुलाब रै पुसपां जैड़ी लिखावट... अर बांचता थकां भाव गैरा-गुलाबी तो नीं व्हिया, पण बेरंग व्हैयग्या। पाछो पढ्यो... तीजी बार पढ्यो... बारूंबार पढ्यो... पण 'म्हारै कमरै कानी' आळा सबद उणरै प्रेम री ताब नै ठाडो कर दियो। बची सगळी लैणां उठै सूं मिटगी अर फगत अेक ईज लैण दिखती रैयी—'म्हारै कमरै कानी'।

कित्ती ताळ उण इबारत पर आंख्यां टंगी रैयी ठाह नीं, पण कोई रै कनै आवण री सरसराट सूं वा संभळी। प्रेमपाती नै मुट्ठी मांय दबायां पैलां दांई काम करण लागी। कीं घड़ी पैलां आळो प्रेम रो सरोबार अब मधरो व्हैग्यो हो। हाथां मांय तो काम हो, पण मानस मांय केई घमसाण हा।

पापा-मम्मी तो सगाई होवतां ईज नलिन नै बेटो मान लियो हो। घणकरै औ ईज कैवता कै ''नलिन बेटा! औ घर जित्तो शिखा रो है उत्तो ई आपरो भी है। रिलैक्स होयनै आया-जाया करौ... आप ई तो अब बेटा जिसा हुया हो। चार मांईता रा बेटा हो।'' कैवता तो नलिन रै उणियारै सोराई रो भाव वापरतो। पण अठै आयनै लागै है कै अजै जूनै जमारां दांई या किताबां-कहाणियां, अखबारां दांई आ ईज अेक इबारत खारो साच है कै जुगां-जुगां सूं नारी उणी ठौड़ ऊभी है... कित्ती ई क्रांतिया होवो, आधुनिक होवण री बात होवो या स्वतंत्रता री बात होवो, छेकड़लो बिंदू औ ईज है कै अेक लड़की नै आपरो घर कदैई नीं मिळै। पैलां बाप रै, जवानी में पति रै अर अर बुढापै मांय बेटां रै हेठवाळ रैवै।

हुंह... माय फुट... मांय सूं तर्क-वितर्क री बाढ-सी आवण लागी। केई बात-विचार घमसाण मांड्या। लजखाणो रूप छूटतौ दीस्यो अर मांयली तेजस्वी नारी जागण लागी। ...घूंघटै सूं अमूंझणी आवण लागी। दागिणा चुभण लागा। रेसमी पोसाक मांय घुटण हुवण लागी। चुड़ला मांय कसमसाट मचण लागी। खुद माथै निजर न्हाखी। इण बगत बदन माथै हर निसाणी ब्यांव री है। ब्यांव निसाणी है कोई रै मन अर घर री धिराणी बणणै री, पण इण घर री बात-बगत कीं दूजो सांनो करै। ...जीव मांय बळत अर अमूझंणी बधती जाय रैयी ही... उणी टेम खुद रै आसै-पासै उणनै निंवायो घेरो-सो कसीजतो लाग्यो... कानां कनै कीं उन्ही-उन्ही उसांस मैसूस व्ही... जीव रै घेरै सूं बारै चेतो आयो अर जोयो तो ठाह पड़्यो कै ओ नलिन री मजबूत बास्यां रौ घेरो है जको आज उतरो सांवठो नीं लाग्यो जित्तो हथळेवै री बगत अर प्रेम री केलि में मैसूस करया करै। कीं निरबळ अर अजाणो-सो लाग्यो... बीजी कोई टेम व्हैती तो वा इण घेरै रो पड्डूत्तर उणसूं दस गुणा तेजी सूं देवती, पण... पण वा इबारत आंख्यां धकै है अजै... मानस में है। अणमणी-सी व्ही। अेक मन करयो कै उण बास्यां मांय दोवड़ी व्है जावै अर सो भूल जावै, पण यूं नीं होयो। मन सूं ऊपरै कोई चीज ही जिको उणनै रोकली अर वा उणां साम्हीं देख्यां बिना ई नलिन रै हाथां री माळा छोडावण री खेचल करी। मनचायो रेस्पोंस नीं देखनै नलिन दोय छिण अडीकनै हवळै-हवळै गया परा। यूं होवणो ई नीं सुहायो। वा उदास व्हैगी। केई बातां उदासी री कारण बणती जावै है। उण बातां नै बिसारणी चावै, पण हियै सूं अेक रीळ उठै अर बात पाछी चेतन व्है जावै...

...बगीचै मांय मंड्योड़ी चंवरी रै च्यारूंमेर सूखा पुसप पड़्या है। पन्नियां री लैणां, झालर कठै-कठैई अजेस लटकती ही। जाणै पूरै घर रो ईज ब्यांव होयो है। ब्यांव री पिनक मांय घर अजै मदहोस है। सगळा रिस्तेदार गया परा। भुआसा मां रै बंतळ सारू

रुक्या है। पेट अर घर दोनूं रीता व्है जावै धीव परणीज्यां पछै। बडेरियां समझै इण बात नै। भुआसा अेक पीढी पैलां रा बेटी है जका आपरै जूनां दिनां नै याद करता बालपणै सूं जवानी अर अब प्रौढता री वयस तांई पूगग्या, पण अठै आयनै पाछो टाबरपणो मैसूस करै। बडा भाईसा अब उणां नै खुद रै पिता रौ 'कम उमर आळो' रूप लागै। केई बार जिम्मेवारी भरयै सासरै री चितार आवै, पण उणनै बिसारनै कीं गिणमा दिनां सारू बाबोसा रै आंगणै री चिड़कली पाछी आपरै रंग में आय जावै। बेटी बूढी होवै या ब्यांवली, पीहरै रा रूंखड़ा देखतां ई बींदणी री कैंचुल आपी उतरती जावै, कीं उतार न्हाखै अर साम्हीं आवै घर री बेटी, लाडल रो उमाव सूं भरयो, परदै-घूंघटै सूं अळघो साचो रूप।

आखो मेळावो पलक पांवड़ा बिछायां शिखा नै उडीकै। ब्यांव पछै आज पैली बार शिखा पापा रै घरै पग मंडणा करण नै आवै है। उणनै लागै कै केई जुगां पछै आज पाछी घरै जावै है। फेरां री सीख पछै सूं मन अजब भारी रैयो है अर आज आपरै पीहरै पग धरणो है तो मन भरयो है। गाडी ढबतां ई वा मां कानी भाजी। मां फाटक कनै ऊभी मेह ज्यूं उणनै तरसै है। घर पांवणी रो स्वागत करतो लागै। ना! ना! पांवणी नी वा इण घर री... मां-पापा री लाडली बेटी है हमेस दांई... हमेस सारू। लारलै दस दिनां सूं गज भरयै घूंघटै मांय दबी शिखा नै अबै माथै री ओढणी रो ई खयाल नीं रैयो। साच्याणी वा मां रै आंगणै री चिड़कली है। चिड़कोली रै पगां मांय पायजेब अर बिछुड़ियां री रुणझण बाजै है। पण अठै वा वायरै सूं ई हळकी है। बाबोसा रो आंगणो कांई चीज है वो आज उणसूं पूछै कोई... सेमिनारां में सामाजिक विसय पर बडा पत्रवाचन करणा, धुंआधार बोलणो, तर्क-वितर्क करणा अर उणनै आज इण रूप सूं साचै जीवण मांय कितरो आंतरो है, साव न्यारो है। औ आज मैसूस करयो है। आवतां ई सगळां सूं खूब मिळी, जाणै केई जुगां सूं देख्या है सगळां नै। मां री भेदभरी दीठ केई बार उण पर आवती दीसी, पण वा इन्नै-बिन्नै देखनै बिसराय देवती। मां म्हारै मन री बात पढ ली कांई? आखती-पाखती आळी काकियां-भाभियां आज कीं न्यारै ई भांत सूं अपणायत सूं मिळी। घणी बातां-करी। सगळा उणनै चोखै अमीर घर री बहू बणनै सारू ईसकै भरी निजरां सूं देखतां भाग नै सरावै हा।

पण उणरै मन मांय कमरै री सळी फंस्योड़ी ही। वा कीं सोचणो नीं चावै इण बगत। आपरै घरै आई है दस दिनां पछै। गैणां-गाभां सूं लदी-फदी है। आज घर नै देखण रो निजरियो दूजो है। रसोई, चौक, बरामदो, साळ-पोळ हर जगै नै देखती वेळा जीव केई बातां मांय गम्यो रैयो। घर री हर वस्त निकवेळी लागी। उणसूं तांतो कीं दूजो-सो लाग्यो। सदां सूं आज घर रो अंग-अंग प्यारो लाग्यो। भींतां सूं अपणायत मैसूसती वा रसोई रा बारोत झालनै ऊभी यादां मांय डूबगी... इणी रसोई मांय रात्यूं मैगी बणाई है सहेलियां साथै इयरफोन लगायनै... रसोड़ै रै प्लेटफॉर्म ने स्टेज मानतां केई परफॉरमेंस दी है। पण आज रसोई मांय आयनै ऊभी तो अपणेस सूं रसोई साम्हीं भाजनै नीं आई, बल्कै बोली-

चाली उभी रैयी। सदां दांई रसोई मां ज्यूं नीं लागी। उणरो औ वैवार सुहायो कोनी अर ना अैड़ी आस ही। घर ज्यूं ई रसोई उणनै छाती सूं चेप लेवैला, अैड़ी आस ही। वा मुड़ी तो रसोड़ो झाला देयनै रोकी कोनी, मनवार ई नीं करी... यूं क्यूं मोह छोड दियो ? चौक मांय आई तो उणरी आहट सूं चिड़कलियां उडगी। वा रोकणी चावै पर रुकै ई नीं। बरामदै री कुरसी आज ई सदां दांई सरण दी। उणरो जीव कीं सोरो हुयो। घर री हर चीज रो वैवार अजब लखायो। पोळ तो सदां सूं ई मैमान-पांवणा रो कमरो रैयो है। जिण मांय केई भांत रा रंग है। उण सोफा पर जायनै कीं ताळ माथो टिकायो तो ठंडो बायरो आयो अर वा डील नै ढीलो छोडनै पसरगी। कीं ताळ आंख्यां मींचनै दिमाग नै खुलो छोड दियो। मन अर विचार जठीनै जावणा चाया जावण दिया। मन री ल्हैरां कठैई जायनै टकराई अर वा झटकै सूं उठी अर भाजती-सी घर रै लारलै पसवाड़ै गई। नाळ नीचै पड़्यै बक्सै मांय ओढणो अड़नै चरर्ररर्र करतो अटकतो, रोकतो-सो फाट ई गियो किनारै सूं। पण उणनै परवाह नीं है कै ओढणै नै छोडावै। वा भाजती-सी आपरै नैनै-सै कमरै रै पलंग माथै जाय ऊंधी पड़ी अर तकियै नै माथै पर राखनै अंधारो ओढ लियो।

केई गतागम मांय पजियो जीव भंवतो रैयो। जिनगाणी री रीलां चालती रैयी। जीव कीं ठाणै पड़्यो तो तकियै नै हवळै-सै सरकायो अर सीधी होयनै पंखा माथै निजर अटकायी। आपरै कमरै नै अेकदम आंख्यां खोलनै नीं देखणी चावती ही। इतरा दिनां पछै खुद रै कमरै रो इमरत हवळै -हवळै चस्का सूं लेवणो चावती। अपणेस रो अठै खजानो है। कमरै री गोदी में आयनै वा अेकर पाछी वा ईज चंचल शिखा बण सकै। पंखै सूं निजरां फिसळनै भींतां माथै सरकती परदां तांई पूगी। अरे वाह! नवा परदा! पण औ रंग म्हनै दाय नीं है, जद सगळा नै ठाह है तो पछै अैड़ा क्यूं लगाया ? निजर नीचै तिसळी... खिड़की तांई पण कुरसी-टेबल उठै नीं हा... कठै गिया ? वै दूजी कानी ट्यूबलाईट रै अैन नीचै हा। ओह! अठै। चौंकगी। वा कुरसी-टेबल हमेस गोखै रै कनै राख्या। भरपूर च्यानणै मांय पढणो, स्कैच बणावणो अर चिड़ी-रूंख नै देखनै कवितावां लिखणो उणरो चाव है। कविता सूं किताबां री याद आयी। किताबां री रैक मांय किताबां री सूरतां आज निकेवळी अर अणजाण-सी ही। सजावटी-केस खासो खाली हो। उणरा मनपसंद एंटीकपीस अर एक वॉटरकलर री पेंटिंग उठै नीं ही। पेंटिंग उण सारू अमोलक है, आ बात सै जाणै पछै ई अठै सूं कुण अळघी ली ? पेंटिंग में मधुर याद है...

...तेजी सूं पेंटिग बणावती उणरी आंगळ्यां री कलाबाजियां शिखा नै अणूती दाय ही। उणरै रंगां री समझ अर अंकन री फैन ही। मुगध होयां रैवती उणरी कला सूं। पण वो दिल्ली रो चुप्पो इंसान हो। दो साल में समझ ई नीं सकी उण दोस्त नै। पेंटिंग क्लास रै आखरी दिन... उणनै साम्हीं बैठायनै पेंटिंग बणायी ही। वा कितरी खुश ही कै उणरो पोट्रेट बणावै है! पेंटिंग पूरी हुयां पछै वो उणरी आंख्यां पर हाथ राखनै उदास होवतो हाथ

मांय पेंटिंग पकड़ाई अर ताकीद करी ही कै धकलै दस मिनट तांई आंख नीं खोलै। वा पोट्रेट री कल्पना मांय मगन रैवती कीं सरसराट मैसूस करी, पण आंख्यां नीं खोली। कीं ताळ पछै जोयो तो देख्यो कै... सिंदूरी आकास मांय एक चिड़ी उडै है। ठेठ अळघै दोय रूंख चुपचाप ऊभा है। अेक हरयो पत्तो जमीं माथै आवण सारू झूल रैयो हो। अेक कानी केई रंगां रा गुच्छा हा। अेक कानी अेक खिड़की जिण रा दोनूं पल्ला आधा उघड़्योड़ा हा। वा अचंभै सूं उणनै कीं पूछण सारू जोयो तो वो उठै नीं हो! कठै? वो हमेस सारू गयो परो... सुरंगा रंग उणरी मनगत नै उळझाय न्हाखी ही। उणरी याद मांय रंगां सूं उणरो सागो उण दिन पछै कमती होवतो गियो अर वा पढाई मांय खपती गयी।

आज कितरां दिनां पछै उणरी याद आई। अेक टेम हो जद उणनै देख्यां बिना अेक घड़ी नीं रैवीजतो।

...उणरै माथै सळ पड़ता जावै है। मन बेकल-सो मथीजै। उठनै कमरै नै देखणी चावै पण उठीजै नीं। डरपै... इण बदळाव सूं थिर व्हैगी है। भींत माथै बणी-ठणी री पेंटिंग देखनै कीं ढबी। अेक सोरी सांस आई। पण फेर ई लाग्यो कै वा आपरै कमरै मांय नीं है। ना वो कमरो उण मांय है। बरसां सूं जिण चीजां रै जगै रो आंख्यां सूं नाप लिरीजग्यो हो वो अनुपात अब दूजो हौ। कसक-सी उभरी अर उण बदळ्यै कोण रो नाप जोवण लागी जको उणरै खांचै मांय फिट नीं हुयो। जोड़-बाकी, गुणा-भाग आवण-जावण लाग्या। आंख्यां री कोरां गीली होवण लागी। अेक अमूंझ-सी आई अर वा कपड़ा बदळण सारू बेकरार व्ही। गैणा खांचनै उतारया अर झट अलमारी खोलनै नाइट-सूट पर हाथ घाल्यो... नाइट सूट हाथ में आयो... उणरो नीं हो... वो सुरभि रो हो। अलमारी मांय झांकनै दूजी घड़ी ईज आंसू सागै अंगारा बरसण लागा। मन जोर सूं रोवण रो हुयो, पण मूंढै नै काठौ भींचनै फगत औ बोल सकी... ''मां... मां!''

अैड़ी रोयोड़ी, दरद भरी तेज पुकार सुणनै मां भाजती आई अर लारै पापा अर लारै री लारै सुरभि। उणनै यूं झारोझार रोवतां देखनै घबरायग्या। शिखा घणी कोसिस करी कै आवाज नै नीची राखै, पण नीं रैयी, ''...मां ...म्हारा कपड़ा कठै... किताबां... पेंटिंग... सगळा कठै है मां? बोलो! कठै है?''

ओ सीन होय जावैला उणां नै अंदाज नीं हो। मां री आंख्यां नीची होयगी अर बिना बोल्या हवळै-सै आंसू पूंछती बारै नीसरगी। पापा हाय-बाय-सा ऊभा रैयग्या। सुरभि धूजती-सी डरूं-फरूं दीसी... ''जीजी... आपरो सामान नाळ हेठै राख्यो... म्हनै कमरै री जरूरत ही... सगळा कैवै शिखा अब आपरै घरै गई...''

❖❖

उधड़्यो चंदोवा

हर घर रो आसरो, रुखाळो अर स्हारो होवै छात अर छात रो स्हारो होवै भींतां सूं बणी चार खूणां री आकृति। अै रळ-मिळनै घर रो संचो ऊभो करै अर माथै ऊपर छात आळी कहावत नै साची अर खरी करै। छात री छतरी सूं घर री भींतां सांयती अर ठैराव पावै अर उणां नै बांध नै राखै। छात री सरण लेवतां थकां अेक घर सुख भर जीवण रो निरमाण करै। घर आळा सगळा जणा जद घरै रैवे तो घर सांयती अर सुख-सोराई सूं भरयो रैवै। तद वो उणां कानी सूं ध्यान अळघो लेयनै नैछा सूं दूजै काम-काज मांय लाग जावै।

छात आळै घर मांय हजारूं काम व्है। निवेड़ो ईज नीं आवै। करतां जमारा बीत जावै। वार-तिंवार या आडै दिन, घर नै घर वस्त केई काम करतो रैवणो पड़ै । जणै ईज सगळा घर आळा सोराई सूं जीवै। घर रो नैछो कदी-कदी भुलावै रै खौळै जाय पड़ै। पण ज्यूं ई कोई घर सूं बारै जावण री बात करै त्यूं ई घर अर छात उणरी चेत अर चिंत सूं भर जावै। उणी घड़ी उणरा सगळा काम छूट जावै अर वै उणरी याद मांय रैवणो सरू कर दै। साची पूछो तो उण समै ईज घर सूं बारै गियोड़ो इंसान पूरै मनोयोग सूं घर मांय मैसूस करीजै। छात री विंडी री आंख सूं पथ भाळै, बाट जोवै, बटाऊ नै उडीकै। पंथी रै आवण री दिस मांय चौफेर निजरां बगावतो उडीकतो रैवै।

उण समै छात ईज उणरो स्हारो बणै, जकी अेक पसवाड़ै घर सूं जुड़ी रैवै अर दूजै पसवाड़ै आकास कानी जोवै। आकास ई कदै-कदास उण साम्हीं जोय लेवै। ठालो बैठो कदी वो घणी ताळ तांई नैनी-सी छात नै भोळी निजरां सूं जोवतो रैवै, जकी अेकली रात-दिन ऊपर बैठी रैवै। आकास नै यूं तो दसूं काम व्है, पण छात साम्हीं कदी देखतां अर कदी मुळकता उण सूं अबै अेक निरवाळो रिस्तो बणग्यो है। जद सूं अठै आई है वा अेकली ऊपर

चंदोवा (चांदण) : *काच, तारा या कशीदा सूं मढ्योड़ी-सिणगारी चादर नै चंदोवा कैवै जिणनै कमरा, ओरा या पोळ री सीलिंग पर सजावट सारू ताणीजै। जियां आंगणा नै जाजम-दरी सूं सिणगारै वियां ही ऊंधी छात चंदोवा सूं सजाईजै। बींदराजा या बींद-बींदणी, राजा-महापुरुष रै चंदोवो छाईजै।*

बैठी रैवै। अेकैलाग आकास साम्हीं जोवती छात उणनै बांध लियो है। आकास भोळो-ढाळो है अर छात कामणगारी। वो सरदी, गरमी अर बिरखा रुत मांय कीं-न-कीं काम मांय लाग्यो रैवे। हर रुत रा उणरा न्यारा काम व्है अर वो समैसर पूरो करणी चावै पण छात सूं निजरां मिळतां ई वो कीं ऊंचो-नीचो व्है जावै अर धरती माथै कीं-न-कीं विपदा घटित व्है जावै।

सरदी उणनै भली लागै। घणो काम नीं व्है। सूरज बावजी कीं छाना-माना बैठा रैवै। तावड़ो सेकती रंग-बिरंगी धरती निंवास भरी बैठी रैवै। दिन नै आपरी चूंदड़ी नै कीं तावड़ो देखाळै अर रात नै ठारी सूं ठरती लांबी अंधारी रात मांय लुक जावै। दिन निकळै पण फागण-वैशाख मांय आकास बेकल व्है जावै। अठीनै रंगां रा छांटा अर उठीनै पून चालण लागै। जेठ आवतां वायरा रा झपेटा अर लूवां रा लपरका उणरी छाती बाळ न्हाखै। बेचैन बेकळू आंख री किरकिरी बण जावै। पण आकास सो-कीं सैन करतो रैवै। कदै वो आखतो होयनै आंधी सूं खुद नै रातै-पीळै रंग मांय डूबोय न्हाखै अर कदैई तेज हवा सूं खुद नै नवो-नकोर करतो साफ-झक्कास करै जाणै अबार ई कोई असमानी रंग सूं भरी नवी ताक नै ऊंदी कर'र टंगाई है।

आसाढ आवतां-आवतां उणरो काम खासो बध जावै। बिरखा सारू त्यारी होवण लागै। आसाढ मांय हळोतियो होवण लागै। धरा री छाती पर हळ सूं कंकू-रेख खांचीजै। सावण-भादवै में कातीसरो बावीजै। चौमासो लागतां ई उणरा गोरख धंधा सरू व्है जावै। युधिष्ठिर नै यक्ष पूछ्यो हो कै बरस मांय कितरा महीना व्है? पडूत्तर हो कै चार महीना। वै फगत चौमासा रा, क्यूंकै उणसूं ईज मानखै री पाळ-पोख व्है। वो ईज जीव-जंतुवां रो आधार है। अठी-उठी धाका-धीको करतो बादळां नै लावै। धवळी-झग रुई रा फुंआं नै बिछावै, सांवटै। यूं तो इंदरराजा इजाजत देवै जद बरसै, पण करसां रो त्रास उणसूं दोरो देखीजै। आसाढ उतरतां-उतरतां हर मानखौ चिलकै सूं बचतो आंख्यां धकै हाथ राखनै आकासै जोवै। वै आस भरी आंख्यां उणरो काळजो चीर न्हाखै। बेबस हुवतो काळा-पीळा बादळा नै आगा-पाछा करै। पण इंदर री आग्या बिना चार छांटा-छिड़का न्हाखनै राजी करणो चावै, पण उणसूं खराबो व्है जावै। उमस बध जावै अर धकली बिरखा सारु इंदरजी कुपित होय जावै। वो दोनूं कानी सूं फंस जावै। होम करतां हाथ बळै। पण वो आपरी आदत सूं मजबूर है। आयै साल औ रासो चालै।

वो लोगां री भलांई करणी चावै, पण उणरा हाथ बंध्या है इंदर री आग्या सूं। उणरो बस चालै तो टेमसर बिरखा-वायरा, काळी-कळायण, कांठळ-बिजळी सूं धरती नै हरी-भरी राखै पण...। 'पण' रै लारै हजार बातां लुक्योड़ी है। यूं सगळां रै साम्हीं चवड़ी नीं कर सकै। धीजो राखणो पड़ै। गाड राख्यां बिना काम नीं चालै। मानखै दांई वै ई आपसरी मांय फरज सूं बंध्या है।

धुराऊ दिस धूंधळै जद केई-केई दिन छात नै नीं देख सकै। छात बेचैन रैवै उणां दिनां। आकास खासो कसमसावै। साफ-सावळ तो कीं कैय नीं सकै, पण केई दिन री राळ-मरोळ पछै बूंदां रै हाथ कागद-पत्री मेलै। छात राजी होय जावै। काळजै री बाफ काढ न्हाखै अर वा खिल्यै पुसप दांई व्है जावै। चौमासै मांय चिन्नीक टेम मिळतां ई उण साम्हीं जोवै अर राजी व्है। नहाई-धोई छात उणनै अखंडकंवारी नवयौवना लागै जकी अबार ई चौथे दिन रो माथो धोयो व्है अर चढतो जोबन खिल-खिल पड़ै। वो सोचै, पण कीं कैय नीं सकै। किण मूंढै सूं कैवै। न्यूंतो देती काची-कंवळी छात उणनै घणी बेचैन करै... वो केई बातां सोच न्हाखै... बाथां मांय भरणनै बेकल हुवै, पण...।

उण दिन उणनै लागौ कै छात खासा दिनां सूं उण साम्हीं नीं जोवै। उणरो ध्यान ओर कठैई रैवै। अैड़ो तो कदैई नीं व्हियो? जद सूं छात अठै रैवण आई है उदासी होवो, राजी हो या सांयती। घणकरा उण साम्हीं ईज जोवै... पण... आजकाल अैड़ो नीं है। वा कोई ओर सूं घुळ-मिळनै बातां करै जाणै बरसां सूं जाण-पिछाण व्है। उणनै ओ घणो खराब नीं लागै पण ऊंडै कठैई चिन्नी-सीक दोराई वापरी। अेकाअेक रीसायो होयनै छात पर कोप करणी चावतो पण सांयत रैयो। उणी टेम उणनै चितार आयो कै अदनी-सी छात साम्हीं उणनै आपरो बडापणो नीं छोडणो चाईजै। वो छात नै यूं नैनी भलां ई समझै, पण जाणै कै छात रा घणाई साथी-बेली है। इण कारण उणनै सगळा चोखी कैवै। घणा दोस्त-भायलां आळो मिनख चोखा आदमी री उपाधि पावै। छात ज्यूं वो हेजळो नीं है। उणरा कोई भायला- साथी कोनी। केई लोगां सूं मिळै-जुळै, पण वो अेकलो बैठ्यो धरती साम्हीं जोवतो रैवै। उणरा साथी वै हा जका धरती सूं आपरी दुआ उण तक पूगाय देवता, पण उणरी कोई नीं सुणतो। इणीज कारण वो आपरै संदेसे रा केई निसाण बणा राख्या हा। आंधी, तूफान, बिरखा, काळ। इणसूं वो आपरी बात पूगावण री खेचल करतो।

आज वो देख्यो कै वै दोनूं उदास है। छात अर उणरी साथण विलखा बैठा है। छात सागै अेक बींदणी बैठी है। कंवळी-लच, गोरी-निछोर। नाक सूधी घूंघटो काढ्यो हो। दब्या रंग रै बेस मांय वा चंदन जैड़ी पवित्तर लागै ही। वो सोच्यो कै बींदणी अैड़ा हळका रंग रा गाभा क्यूं पैरया? थळी में तो गैरा-चटख रंग सोवै। बात में रंग, गीत में रंग, कपड़ां में रंग। रंग ई रंग अर रंगां री ईज बात। अेक बेकळू रंग मांय थळी रो मानखो केई इंदरधनुखी रंग रच दिया कै सगळो मरुथळ रंगीन बणग्यो। पण आ बींदणी इतरी विलमी क्यूं...?

उणनै याद आयो... कीं समै पैलां छात माथै अेक माळियो चिणीज्यो हो अर पछै राता-धवळा पुसपां री सेज सजी ही। छेड़ा-छेड़ी बांध्यां लाल वरी अर फूटरी अचकन मांय बींद-बींदणी उण सेज अर माळियै नै सारथक करयो हो। ऊंचै सूं जोवतो आकास ई उण पुसपां री सौरम सूं ऊंडै तांई भींजग्यो हो। केई दिन वो खिल्यो-खिल्यो रैयो...

लाल-गुलाबी होवतो रैयो हो। अहा! वै कित्ता मोवणा दिन हा... लजवंती बींदणी छम-छम पायजेब री झनकार सागै दोय दूध री गिलासां लिया छात पर दीसती। दोय घड़ी छात सूं बतळ करयां पछै माळिया मांय जावती। सगळी-सगळी रात माळियो मीठी-मधरी, धीमी-मद्दी हंसी-बंतळ सूं मैकतो। कीं दिनां पछै वा धीमै अर सुस्त पांवडा भरती माड़ी झणकार सूं ऊपर आवती। अबै उणरै हाथ मांय अेक ईज दूध री गिलास हुया करती। कदैई खाली हाथ नस लुळायां आवती दीसती। छात उडीकती पण उणसूं कोई बात नीं करती। पूरी-पूरी रात उसांसा अर बेकली सूं भरी रैवती। पसवाड़ा फोरती छींणा नै टगमग जोवती कठैई गम जाती। आकास सूं ओ सैन नीं व्हैतो। वो पाछल फोरनै दूजै कानी जोय लेवतो। इण कारण उणनै ठाह नीं हो कै वा पायजेब री झणकार दिनूगै ई विलखी ही कांई? पण उणनै लागतो कै उदास ईज हुवैला। छात अर मैढी री रंगत साव विलखापणो जाहिर कर देवती कै कीं कमी है। यूं वो इंसानी भावनावां समझण लाग्यो है। छात री संगत सूं बोत कीं सीखग्यो है। आकास री दुनिया अर सो-कीं चांद-सूरज अर दिन-महीनां रै हिसाब सूं चालै। आकास रै जमारै मांय भावनावां रो मांयनो नीं व्है, पण उणरी भायली छात कीं-न-कीं बतावती रैवै अर वो अबूझतो-सो हवळै -हवळै सै रासा समझण लाग्यो।

...आज ई आकास काम मांय लयलीन है। चैत सूं जेठ तांई वो लांबा दिनां री उदास उबासियां लेवतो ऊंघतो रैयो हो, पण अब आसाढ लागतै केई काम तेवड़्या जका पूरण करणा है। पण तो ई बींदणी अर छात रो ध्यान राखैला। अैड़ो सोचनै उणरो जीव कीं सोरो हुयो। दिन आसाढ रै आंधी-भतूळिया सूं सूंसांय-सूंसांय करता अरड़ाट करता बीत रैया हा। आसाढ उतरतां-उतरतां काळी कळायण री आस री गाज सुणीजण लागी ही। सागै ई दूजा धमाका ई सुणीजता हा। वो समझ नीं सक्यो। आकास खुस हो, पण छात तो ई विलखी बैठी रैवती। मेघां रै घनन-घन सूं वा राजी नीं ही। दूमणी-सी अेक कानी जोवती रैवती।

मैढी उदास ही, पण आस सूं कीं भरी लागती। उण दिनां सुपना री कूंपळी आपरै मांयनै मैसूस करी ही। बींदणी थाकी-थाकी लागण लागी ही। उणियारै माथै कीं लुणाई दीसती ही, पण लारै उदासी छानी नीं रैवती। कमर सूं कीं भारी अर चवड़ी होवती बींदणी अब साव हवळै पांवडा भरती। फूलां रो भार आकार लेवण लाग्यो हो। पूरो घर खुश होवण री खेचल मांय हो, पण अेक पीड़ ही जकी उणां नै पूरंपूर हंसण नीं देवती। घणकरा बींदणी पेट माथै हवळै-सै हाथ राख्योड़ी कीं सोच मांय डूबी रैवती। कदै कोई कागद बांचती। कदै फोटू देखती, तो कदैई अेकली कीं बतळ करती। फोन पर पैलां तो खुशी सूं बात करती अर बीचै आंसू आय जावता।

आजकालै व्हॉट्सअप पर आपरी पूरी-पूरी फोटू भेजण लागी है। पूरी फोटू मांय उणरी छिब निजर आवती जकी उण रै मांय बीज रूप मांय ही अर अब सांप्रत आकार लेवै

ही। प्रीत आकार पगी हो रैयी ही। इण फूलां रै भार नै वा अेकली नीं जीवणी चावै। इसरार करै आवण रो, सौगनां देवै पण उण कानी सूं बेबसी री उसांस सुणीजै। जीव घणो ई कटै है उणरो ई। पत्नी रै इण रूप नै आंख्यां सूं देखणी चावै जिणमें उणरी आस पांगरै है। अेक रात पछै उणां री जिनगाणी मैकण लागी ही अर अब अेक पुसप दोनां रै प्रेम रो पवित्तर रूप लेयनै आवण री उडीक मांय है, पण वो घरै आयनै रूप नीं देख सकै। प्रकृति री सुंदर लीला वो रची अर बींदणी फूटरा रूप सूं आपरै भीतर घड़ै है। उणरो नाम लेय-लेय उण आकार नै सुथरो रूप देवै। वो ई उणनै हाथ सूं मैसूस करणी चावै, धड़कन सुणणी चावै। दिन-दिन बधती कंकू री लोथ उण मांय हलचल मचावै, पण वो मायड़भोम रै फरज सूं बंध्यो है। अेक मां रो वो बेटो है अर अेक अब मां बणण री किरिया मांय है। दोनूं खुश है, पूरो घर खुश है, पण खुशी रो आधार अळगो सीमा रो सिपाही है ।

छात केई तरीकां सूं बींदणी रो जीव बिलमावै। रमतिया करै, ठिठोळियां करै। बींदणी री छिण भर री हंसी उणनै ऊंडै सोरी करै, पण पाछी उदास व्है जावै। अैड़ै समै मांय उदास नीं रैवणो चाईजै। बडेरियां कैया करै। छात सोचै कै कास! म्हैं बींदणी री सगळी कमी पूरी कर सकती। छात कल्पना करै कै कीं महीनां पछै ऊपर तणी माथै पोतड़िया-लंगोट सूखैला अर वा आपरै पल्लै सूं ओट करी राखैला। कैवत है कै रात रा बायांसा रो रथ निकळै। जिण ऊपर सूं नीसरै उणनै कोई नीं बचाय सकै। वा गीगै रै गळै मांय चांद, माथै पर काजळ रो चांद-सूरज बणाया करैला। दोनूं हाथां मांय सांवळा मोती रा निजरिया पैरावैला। वो डगडग हंसैला अर वा निहाल होय जावैला। आकास उणरी बातां सुणनै मुळकतो अर उणरी खुशी मांय बैय जातो।

पण आजकालै गरजन री खबरां टीवी-रेडियो माथै आवती रैवै। फौजियां री छुट्टियां कैंसल कर दी है। मन री आस सूं भरी बींदणी तन सूं पूरा दिनां है। आजकालै सगळा घर रा सांस रोकनै टीवी देखै। हाथां पगां मांय धूजणी व्है, पण उणियारै माथै दिखत री सांयती अर ऊंडै जीव मांय ईश्वर सूं अेक ईज अरज कै... उण बगत बींदणी छात री गोदी मांय लुढकी मारग सूं उडती धूड़ साम्हीं आस भरी निजरां सूं जोवती पेट पर परस करती आपरै फौजी पिया रो नांव उच्चारै...

❖❖

चांदा ऊपर कणी

किणी सभ्यता रै हर कालखंड मांय घर, मानखै री सुरक्षा सारू अरथाईज्यो हो। दुनिया बण्यां पछै मानखो जद बिणजारां रो जीवण जीवतो-जीवतो थाकग्यो तद अेक घर री कल्पना करी। अैड़ै ईज किणी समै कोई सभ्यता रै किणी दौर में वो भटकतो-भटकतो काठो थाकग्यो। कांई ठाह उमर रा कितरा दौर पार होयग्या। उणनै बेरो ई कोनी हो। लाग्यो कै जुग बीतग्या है चालतां नै। पण चालतो रैवणो उणरी टेव ही। फगत कीं ताळ बिसांई लेवतो अर पाछो धर कूचां धर मंजलां चाल पड़तो। इयां सफर करतो अर लोगां री जूण री पारख करतो। केई बार लोगां री हंसी अर सोराई देखनै जीव ललचायौ। वो ई दुनिया दांई सोरो रैवणी चावै। इणी री तलास मांय आ टेव औरूं बधगी। धरती रै किणी खूणै तो उणरी सोराई लाधसी। औ भरोसो हो। खूणै रो पक्को ठिकाणो नीं हो, पण है तो सही, इणरो पूरो बेरो हो। अैड़ी आस बांधी ही। आस अमर है। खूणै नै सोधतो चालतो रैयो। दुनिया रा केई दरसाव केई बार देख लिया, पण खूणो नीं लाधो। अेक बार बिसांई सारू बैठ्यो तो थाकैलो चढग्यो। उणसूं विचारां मांय पजियो अर पजतां ई लालसा पांगरती ई गई।

जे वो थाकतो नीं तो उणनै ठाह ई नीं पड़तो अर औरूं धकै चालतो ईज जावतो।

धरती तो गोळ है रोटी जैड़ी, चांद जैड़ी, सिक्का जैड़ी, टीकी जैड़ी, कचकोळियां जैड़ी, बींटी जैड़ी, कान री बाळी जैड़ी, थाळी जैड़ी। उणरी घूम, घूमर जैड़ी ठीमर है, फेरां जैड़ी मधरी है। कंकू जैड़ी फूटरी अर माखण जैड़ी कंवळी है। औ कैवल्य ग्यान उणनै होयो तद वो विचारां मांय पजियो। उणनै लाग्यौ कै वो खाली हो अर खाली ई चालतो जावै हो। असल मांय भर्‌यो मन लेयनै चालणो चाईजै। बटाऊ हळको रैवै अर पथ सोरो कटै।

चांदा : *थेपड़ा आळा काचा घरां री चार भींतां सूं दो भींतां नै तिकोणी आकार में कीं ऊंची राखीजै। इण पर लकड़ी रो मजबूत गर्डर रखीजै जिण सहारै पूरी छात बणै अर इण पर ईज पूरी छात टिकी रैवै।*

कणी : *चांदा रै दोनूं कांनी ढाळ में समान आंतरै सूं खांचा मांय चांदा सूं कीं पतळा गर्डर आडा फिट करीजै जिण सहारै छात रो जाळ बणै।*

तद लोगां री खुशियां रो मरम उणरै समझ आयो। घर उणां रै सुख रो मूळ हो। इण कारण गोळ दुनिया रो अेक चोखो थाळो देखनै घर मांडणो चायो। ज्यूं बीजै लोगां रा घर हा। हर घर अेक सांवठी दुनिया ही। उण मांय कीं साळ-कमरा, बारी-गोखा अर आडा-बारणा हा। घर आपरै मांय अेक घर हो, पण उणरै मांय उणरा केई रूप बसता हा। दुनिया जदपि उणनै फगत अेक घर री संग्या रै रूप मांय देखती अर आवता-जावता लोग कैया करता हा कै औ अेक घर है। पण औ आंक कोई पूरी लांबै आंक रो छेकड़लो हुया करतो। उणसूं पैलां रा आंक लोग नीं कैवता, क्यूंकै हरेक घर री छेकड़लै आंक सूं पैला केई आंक री भांत-भांत री संख्या व्हैती। औ ईज भांत-भंतीलोपण उण घर मांय होया करतो। लोगां रा मन अर घरां मांय ई केई भांत होवती। आंक नै देखण रो उणां रो आपरो नजरियो होवतो, जकौ देखण आळै अर उण घर रै बिच्चै तांता सूं बदळतो। इणी नाता-तांता रै कारण घर रो वो खास आंक बदळतो रैवतो अर घर रो सरूप देखण आळा री निजर जैड़ो होय जावतो। ज्यूं कै चोखो-भूंडो, रातो-पीळो, काळो-धवळो, नैनो-मोटो अर केई रूप-सरूप निजर आवता।

घर सूं आपसी हेत-प्रेम रै हिसाब सूं भी घर केई रूपां मांय उणां रै मन मांय बसतौ। जदपि वै लोग साव साचै रूप सूं औ जाहिर नीं करता, पण उणां रै हाव-भाव सूं साम्हीं आळै नै औ ईज लागतो। उण घर सूं जको कोई आपरो रिस्तो बतावतो तद वो घर उणी रूप जैड़ो होय जावतो। रीसाणो, सांयत, चिड़ोकलो, माईत-बडेरां ज्यूं, टाबर दांई, मां ज्यूं, भुआ ज्यूं, मामा ज्यूं, बैन-भाई आद-आद। ज्यूं कै सूरज री किरणां लेयनै समुंदर दिन-रात रंग-रूप बदळै अर आर्टिस्ट-फोटोग्राफर अर प्रेमी-प्रेमियां नै मोहित करतो हैरान करै त्यूं ई घर ई देखण आळा नै हैरान करतो। लोग उणरा बदळता रूप देखनै अचरज सूं भर जावता। कोई उणनै किरकांटियो कैवता, कोई छळियो, कोई मायावी तो कोई बेबात ई मूंढो बिचकायनै रैय जावतो। पण घर उणां नै कदैई कोई ओळबो नीं दियो। ज्यूं धरती माता कोई नै कीं नीं कैवै, सो-कीं सैन करै ज्यूं। लोग साम्हीं सूं नीसरता अर धकै जायनै आंगळी सूं सांनो करनै कैवता कै औ घर घणो जूनो है। घर साची रूप मांय बरसां पुराणा तो व्है ईज है। वै पुसप दांई कीं दिनां मांय नीं विकसै। घणा सालां री खेचल पछै नींवां-भींतां घर रै रूप मांय निजर आवण लागै।

...इयां सोचनै उणरै मन मांय घर री चावना घणी आवती। केई दिन दूजां सागै घर नै मन मांय जगावण सारू भटकियो। घर री आस तो जागगी, पण क्यूंकै अेक घर नै सैंद रूप मांय ऊभो होवण में बरस लागै अर उणसूं पैला घर रा सपना बणण में बरस लागै। आ बात पछै उणनै चितार आई। घर, गरभ रै सिसु उनमान व्है। पैला गरभ रूप मांय मिनख रै अंतस में सपना मांय अंकुरित व्है, पछै योजना में विकसै अर पछै जथारथ रूप में धरती रै कोई खूणै सांप्रत आयनै अेकर पाछो अंकुरित व्है अर विकसै। लोग जणै ईज उणनै देख

सकै स्यात इणी कारण अैड़ौ कैता हुवैला कै औ घर नवो है। आ घर साथै बेजां बात है। जको जैड़ो है उणनै उण रूप मांय नीं आंकनै कमती-बेसी रूप मांय आंकणो ठीक नीं व्है।

हरेक घर दांई उण आदमी रो घर ई बेवड़ो जमारो जीवण लाग्यो। अेक अंतस में अर दूजै सांप्रत। दोनूं ई मानखै सारू हरख री बात व्है। घर अर सपना रो जूनै जुगां रो जोड़ो है, पण जिण दिन सूं घर धरती माथै विकसणो सरू व्है लोग कैवै कै औ घर अधवीटो है। अजै चिणीजै है। पर साच बूझो तो वो अधवीटो-आधो नीं व्है। सांप्रत मांय वो सवायो होवण लागै। घर उणरै सुपना मांय बरसां पैलां जलम लेयनै चुणीज चुक्यो है। उणरै प्राण-पण सूं उणरो कण-कण सींचीज्यो है। ठाह नीं कितरी रातां री नींद रो भोग लगायो है। फगत नींद ईज नीं अंवेर, बेकली, थाकैलो, चिंत्या अर बिछावणै मांय पड़्या अै नैनां-मोटा सळ ई जका है उण घर सारू ईज है। फगत अै ईज नीं बल्कै सपनो देखनै जागती वेळा न्हाखीजती सोच-फिकर सूं भरी उसांस ई उण घर नै अरपित व्है। आ सगळी खटकरम उण घर री नींव हुवै। उणरी सांसा मांय आस-निरास रै बिचाळै घर हींडतौ रैवै। दिनूगै ऊठनै बारै जावण नै व्हीर हुवै तो घर ई उण सागै कीं धकला पांवडा भरै। असल मांय यूं घर रो चालणो उणरो थापित होवणो हुवै, फेर ई लोग कैवै कै घर रो कमठो चालै है। घर खुद नै विकसावै अर लोग उणनै चालणो कैवै। असल में तो अजै सूणी घर सपना मांय चाल रैयो हो। ज्यूं सिवलिंग माथै दूध रो अभिसेक करण री अरपण री भावना होवै वा ईज भावना घर थापित होवतां नै सपना चढावणै री व्है। नींव थापित करतां री होवै।

अंतस रो सपनो आपरै पवित्तर घर रूप मांय अरपित होयो अर वो तप सूं तप्योड़ो कुंदन तपसी। उणरो चालतो सपनो अब साख्यात ऊभो निजर आवै। वो निहाल व्हियो। बलिहारी ली, निजर उतारी अर उच्छब-आयोजन मांड्या। पण जद रात नै जायनै बिछावणै मांय सूतो तद सपना सदा दांई सपना रै खौळै जाणै री हूंस भरी। पण उणरी आंख्यां सपनाविहूण ही, रीती ही। उणनै घर अर घर सूं जुड़ी हर बात रा सपना देखण री इत्ती टेव लागगी ही कै सपनाविहूणी रात उणनै पैलां सूं बत्ती बेकल करण लागी। अजै तांई वो सपनां सूं भर्‌यो-पूरो हो। रात-दिन, बरस-दर-बरस... उमर रा केई साल लीलाछम पांगरता अर विगसता सपना देखतो रैयो हो। पण अबै खाली होयग्यो। आ बात उणनै दुख देवण लागी। ज्यूं कै टाबर जिणियां पछै लुगाई सूं मां बणतां ई उणरो पेट साव खाली व्है जावै त्यूं वो ई खाली होयग्यो। नव महीनां रै भार रै पछै औ खालीपण मां नै हळको तो करै, पण अेक बीजै नवै दरद सूं भर न्हाखै। जच्चा रै पेडू मांय दरद रो गोळो अैड़ो ईज व्है जैड़ो सुपनां सूं खाली इंसान।

जुगां सूं उण रै मानस मांय 'घर' वास कर रैयौ हो। उणसूं उणरै अंतस मांय अनोखो रिस्तो, प्रेम, सुख, चावना, आस, उडीक री जातरा ही, जिणनै मंजल री तलास

ही। अेक प्यास ही, जकी उणरै जीवण नै थाम राख्यो हो। अबै मंजल है... पण मारग कोनी, चावना भी कोनी... पूरणता है, पण तलास कोनी... । साख्यात गाडां भरयो सुख है फेरूं ई वो मिनख आखी रात आंख्यां फाड़्यां-फाड़्यां छात नै जोवतौ रैयो। रातूं-रात जोवतो रैयो। पुसपां रै भार दांई सपना रो भारीपण असींव हो, पण हो सुखदायी। अबै सुखी है, पण मांय ऊंडै तांई रीतोपण है। उणरो सपनाविहूणो जीव इयां लागै जाणै फसलविहूणो खेत। उणरै मूंढै उण सपना सारू मोकळी चिंता ही, पीड़ ही, पण अनोखी तिरस ही अर आवण आळी पूरणता री खोज ही उणसूं ईज उणरो रूप तेजोमय हो। तिरस रै परवाणै आदमी चाल रैयो हो। अबै उणनै जच्चा दांई गीगै रो मिजाज तो मोकळो है, पण साच बूझो तो खाली-रीतो है।

उमाव सूं भरयो उच्छब मांड्यो, पण उच्छब बीत्यां वो फीको होयग्यो हो। लोग उच्छब मांय आया अर उण घर रै फुटरापै रा हजार बखाण करया, उणरी आपरी चोखी सरावणा करता बाथ घालनै राजी-राजी बधाइयां देवता रैया, पण उण सपनै नै रत्ती भर ई जस नीं दियो जको उणरी आंख्यां मांय, जीवण मांय केई बरसां सूं पळतो रैयो हो, जिण सूं उणरी आंख्यां मांय चमक ही, पण अबै वै आंख्यां सपनै री प्यास सूं खाली व्हैगी अर ऊंडी ई व्हैगी भींतां री भराड़ां दांई। तिरतो थको सपनो अबै तीर आयनै थमग्यो। जातरा खतम होयगी, पड़ाव बेजां होयग्या। जूण रो गाढ बीतग्यौ। वो अब रातूं रीतो रैवै। दिनूगै उठतां ई खाली, दिन खाली, सोच खाली, खेचल खाली, हाथ खाली, बात खाली, जूण खाली... फगत खाली... खाली... अर सो-कीं खाली...

जुगां सूं सोरप री सोधप मांय चालतो रैयो। पछै घर सारू चाल्यो, पण अब सोधण नै कीं कोनी। तिरपत है। मंजल है। आ तिरपत पाछी तिरस चावै। आ मंजल रस्तो चावै। संपूरणता पाछो कोई सपनो देखणी चावै। हरयो-भरयो रैवणो चावै। इत्तो बेगो ईज लौकी दांई पाक नै खाली नीं होवणो चावै, खतम नीं होवणो चावै।

जीव मांय अणकैयी पीड़ है। सपना रै फूटरै मनचायै घर मांय रैवतां थकां उणनै चैन नीं है। बेकारण बारै भटकतो, अठीनै-उठीनै, बात-बेबात, काम-बिना काम। घर मांय बिसांयत नीं लेय सकतो। घर उणरै बाथ घालणी चावतो अर उणनै लागतो कै खावण नै आवै है। सिंझ्या पड़्यां कोई उणनै कैय उठतो, ''अरे! थे अजै घरै नीं गिया?... अठै कीकर?''

वो बाको फाड़्यां उण साम्हीं जोवतो अबूझ दांई। दोय घड़ी यूं देखनै पूछण आळो घूरतो थको जावतो परो।

उणनै लागतो कै घर उणनै खाली करनै उणसूं निकळनै कठैई बारै गयो होवैला। सोधण चाल पड़तो जितरै मारग बैवतो कोई फेरूं टोक देवतो उणनै—

''थै अठै बैठा हो अर घर थांनै उठै अडीकै है!''

पण लोगां नै ठाह कोनी या स्यात ठाह होय ई सकै कै उणरो घर उणरै आंख्यां सूं निसरनै लोगां रै हियै चढग्यो है। उणरो घर सगळां नै दीसै, पण उणनै नीं। इण कारण वो उणनै सोधण नै भटक रैयो है दिसाहीण दांई। लोगां रो जीव यूं कळपतो कै... वो घर नै उठै थापित करनै अेकलो छोड दियो। उण सारू घर री अडीक लोगां सूं देखीजती कोनी। कैवत है कै घर भटक चुक्यां रो स्हारो होवै, मंजल होवै। इणी कारण घर री छियां हेठै लोग उमर पूरी कर दै बल्कै अेक ईज घर री छात हेठै दो-तीन पीढियां सोरै सांस बीतती गुजार देवै। पण उणनै ठाह नीं क्यूं यूं लागै कै जद घर उणरै मन मांय हो, अंतस सीस म्हैल उनमान गूंजतो अर अबै वो थोथो रैयग्यो है।

...घणकरां इणी विचारां मांय पड़्यो भटकतो। लोग सांयती देवता अर वो उणां नै घूरतो। केई बार रीस सूं घोरका करतो। हवळै-हवळै लोग बतळावणो छोड दियो। वै औ मानता कै घर रै करजै सूं दबग्यो है अर इण कारण बावळोपण आयग्यो दीसै। पढ्या-लिख्या उणनै डिप्रेशन रो कैवता। पण वै बतळावणो छोड दियो तद सूं उणनै नैछो होयो।

जुगां-जुगां सूं उछाळा मारतो समंदर उणरो स्हारो बणतो, क्यूंकै वो खुद जूनै जुगां रो मिनख हो। सदियां रो मिनख। मिनखां री पैली पीढी सूं अजै तांई रो साखीधर हो। अेकलापा में भर्‌यो समंद रै तीर बैठ्यो उणरै बदळता रंगां सूं आपरी जूण रो मेळ करतो केई पौर बिताय देवतो। छेवट उणनै चिंत्या री ल्हैर चढती अर चेतै आवतो कै घर नवी बींदणी दांई उणरी बाट जावै है, तद झटकै सूं उठतो अर किणी दिस चाल पड़तो। पग आपूंआप उठता रैवता। उणनै पांवडा भरणा नीं पड़ता। अणथक चालतो ई रैवतो जठै तांई घूम फिरनै घर री थळी अर बारोत सूं भिड़ नीं जावतो।

...इयां ई अेक दिन ल्हैरां पगां नै विरोळ रैयी ही... अजेस ही उणरो जीव घर रै बीत्यै सपनै मांय हो। अब घर नीं, घर रो सपनो नीं, पण अब उण सपनै री याद ही। उच्छब री चितार आई। कीं याद आयो अर कीं भौळ आयी...

उच्छब आळै दिन कोई कैयो हो कै घर तो घणोई फूटरो-ओपतो है, पण अजै इणरो अधवीटोपण खतम क्यूं नीं होयो ? अेकाअेक ई वो विचार मांय पड़ग्यो। कैवण आळी रै उणियारै नै टगमग देखतो पड़ूत्तर में केई सवाल छिण मांय ईज पूछ लिया। उणरा मधरा-मीठा बैण घर नै अधूरो बतायो, पण उण कैवण आळी रो खुद रो सुर तलास सूं पूरंपूर भर्‌यो हो। कांई सोधती ही उणरी निजरां ? वो उणनै जोवतो रैयो अेकैलाग... पण इतरी भीड़ मांय सूं कोई उण आवाज कानली साम्हीं नीं देख्यो अर ना कीं सुण्यो अर ना ई कीं परगट कर्‌यो जाणै वा साख्यात होवै ईज नीं। फगत वो ईज उण सुर नै देखतो-सोचतो, गमतो रैयो कै कांई कमती रैयग्यो है घर मांय ? ...अर वा उणरै अंतस कांकरो बगायनै कीं सोधती जोवती रैयी घर रो फर्नीचर-परदा, सोफा...।

उच्छब में आया सगळा घर री धपाऊ सोभा करै हा अर वा ई तो अै सगळी बातां सुण ई रैयी है। तो पछै इण सराव-सोभा मांय आयनै म्हारै अंतस में औ कांकरो क्यूं बगायो ? वो अचंभै सूं भरग्यो। ...कदै खुद नै, कदै घर नै अर कदैई सपनै नै जोवै। अेक अमूंझ-सी आवण लागी। उण बात रो म्यानो पूछण सारू उण साम्हीं अरज करती, बूझती गैरी मींट न्हाखी जदकै वा हवळै-हवळै भींतां माथै प्रेम सूं परस करती धकै जावती जावै ही। तद उणनै लाग्यो कै भींतां री जगां पुसप ई पुसप खिल रैया है। ज्यूं-ज्यूं वा चालती रैयी, घर सूं लोग दिखणा बंद होयग्या अर उण जगै पुसपां रा भारा बिखरग्या हा। कीं ताळ पछै वो आपरै भायलै कानी जोयो। वो अेक अजकी निजरां सूं उण साम्हीं गैरी निजर जोयो अर खूणी मारतो दूजै अरथ मांय मुळकतो रैयो जिण अरथ नै वो कीं समझ्यो अर कीं नीं।

...मगज केई दिनां सूं औ दरसाव दोहरावै है। केई बार अै रीलां चाली है। आज ई वा ईज रील चालै है निजरां साम्हीं... अंतस साम्हीं। आवती-जावती ल्हैरां उणरा पग पखारती... बूझती... छितिज रो सनेसो देवै है। उणरै जोवतां-भाळतां समंदर केई भांत रा रंग-रूप सूं उणरो मन वैळावै। चुतर धिराणी दांई ल्हैरां सागर रै पेट सूं चीजां बुहार-झाड़नै बारै लाय पटकती जावै। कीं ल्हैरां यूं ईज नाकारा-सी फेरो लगायनै पाछी बावड़ जावै। अेक ल्हैर आई... पगां कानी कीं रड़क्यो... निजर जमायनै गैरी निजर देख्यो...

अेक नवो गुलाबी रंग रो सपनो हो...

गुलाबी रंग री कचकोळी हाथ मांय आई...

❖❖

रतन दीवां म्हैल

मधु नै अब ठाह नीं पड़ै कै वा करै तो कांई करै ? किण विध अर कठीनै सूं सांवटै ? रोय-रोयनै कळाप करनै काठी थाकगी है। कित्ती रोवै अर कित्ती कळपै ? उणरो जीव इण दाझ सूं लीरा-लीर होयो पड़्यो है। जीव कांई घर ई त्हैस-न्हैस होयग्यो। दुख सूं छाती फगत फाटै जित्ती छेटी रैयी है। साच्याणी फाट ई जावै तो वा मुगत व्है जावै इण असींव दुखड़ै सूं। सह्यो नीं जाय। दुख में सांस आणी-जाणी बोझ व्ही है। छाती कूट-कूट रोवै, पण औ दरद कम होवै कठै है। जेठ रै लांबा दिनां दांई दिनोदिन बधतो बाळ-झाळ न्हाखै। न छेह आवै न पार पड़ै। छाती पर आय पड़ी इण धै'ल सूं वा बेचेतै होवणी चावै अर बेचेती मांय ई मरणी चावै। इण दुख सूं मुगत होवणी चावै। या पछै अैड़ो कीं होवै कै घड़ी-दोय घड़ी ई सही, पण बिसराय सकै इण दुख रै सागर नै तो हिवड़ै रा घाव ई कीं बिसांई लेवै। अब तो रोवणो ई नीं आवै। आंसू बरसा-बरसायनै आंख्यां सूखा अर रीता डबला रैयग्या। खारो समंदर बैवतो रैवै, पण दुख रो खाडो जस रो तस गिटकण नै त्यार जिण मांय धकली जिनगाणी साव नीरस अर अलूणी निंगै आवै।

आपरै जीव री आ हालत लेयनै कियां तो माधवी नै सांभै अर कियां टाबरां नै ?

...आंख्यां देखतां अेक हंसतो-मुळकतो घर घड़ी-छिण मांय मसाण-सो सूनो होयग्यो। अेक हर्‌यो-भर्‌यो रूंख अेक पलक मांय ऊभ-सूखग्यो। अेक जीव री जड़ रोजीना मां-मां करतो घरै बावड़तो अर... मां-मां री पुकार मांडतो उण दिन गियां पछै पाछो कदैई नीं आयो, न देख्यो। ठाह नीं कठै गयो ? अंतस में भाटा नै फाड़ै जैड़ी दुख री वै रीलां लाखूं बार चाली है अर जूण भर चालती रैवैला। देखणी चावतां थकां ई नीं देखणी चावै अर नीं चावता थकां ई कांई ठाह कियां देखीजती जावै है। आंख्यां रा परदा फाट क्यूं नीं जावै ? भूल सूं ई मींट मांय ई वो सीन देखणी नीं चावै। होणी नै बिसरावणी चावै। हुयी बात पर भरोसो नीं करणी चावै।

कोई दिन अैड़ा हा... सुख अर निरांत रा... अविनाश... फूटरो जोध-जवान जद-जद साम्हीं आवतो। वा पोमीजती अर दूजै पासै अै दिन है कै वो फगत याद री रीलां मांय है। पैला साख्यात दीसतो अर अब बेध्यानी मांय फगत छिब दीसै, भौळ पड़ै उणरी बोली रा, उणरी मीठी-मधरी बातां रा। उणरै आवता-जावता रा। यादां रा हर घड़ी औसका पड़ै।

दिन पर दिन याद बधती जावै, दुख बधतौ जावै है। जीव अर जीवण रो औ खाडो समै कदैई नीं भर सकै, लाख जतन सूं ई नीं भर सकै। कोई नीं भर सकै। काळजै सून बापरगी है अर आ ईज सून छातीफाड़ कुरळाट करै। इण भांत घर री नींव डळगी है कै पतियारो ई नीं व्है कै औ घर वो ईज है जठै हंसी अर छम-छम रमझोळां गूंजती।

अजै तांई कानां मांय रोजीना आळी 'मां... मां' री पुकार ईज सुणीजै है। अधध्यानी मांय वो समै पाछो जीवण लागै। उण समै नै जोवै आंख्यां फाड़-फाड़नै—अठीनै... बठीनै... कठैई तो निजर आसी... पण कीं कोनी... कठैई कीं कोनी। भरम है। जोवतां-जीवतां सो क्यूं समापत... रोवतां-रोवतां आंसूड़ा सूखग्या... आंसूड़ा सोधतां-सोधतां हीमत खतम... हीमत बांधतां-बंधातां धीजो छूटै।

नीं... नीं... हीमत कियां खतम कर सकै अर धीजो कियां छोड सकै? उणनै थ्यावस राखणी है अर थ्यावस देवणी है। औ विचारतां -विचारतां हियो भरीजग्यो अर वा हुचकती-डुचकती पाछी रोवण लागी। माधवी रै बाथ घालनै डाडी अर घर रै लोगां नै ईज नीं भींतां तांई नै दरद सूं अेकर औरूं भींजोय दी। उणनै लाग्यो हो कै रोय-रोयनै पाणी खतम हुयग्यो हो, पण उना पाणी री अै धारां कांई ठाह काळजै रै किसै खूणै सूं आवती ईज जावै है... ढबै ई कोनी। ढाबणी ई नीं चावै। ठाह नीं कित्ती ताळ दुखड़ै नै झुरती रैयी दोनूं सासू-बींदणी, पण छैड़ो ई नीं आयो इण रुदन रो।

लाख चावै तो ई आंख्यां सूं वो दरसाव... वो मनहूस दिन अदीठ ई नीं होवै अर ना मगसो पड़ै...

सदा दांई उण दिनूगै ईश्वर नै आं दिनां रो धिनवाद दियो अर जोड़ा नै अमर करणै रो आसीस मांग्यो हो। उणरी अरज साव खारिज गई अर दिन रा कांई ठाह कठै सूं भीड़ आई अर वींटा दांई बंध्यै नै आंगणै मांय तुळसी रै थाणै कनै सुवाणगी। समै है जठै ई थमग्यो। हवा थमगी। सूरज डूबग्यो। रातां ठायी होयगी अर आज वो तस्वीर रै फ्रेम मांय कैद है... उण माथै पुस्पां री माळा चढ्योड़ी है। माळा पैरयां काच मढ्यै फ्रेम मांय सूं सगळा नै जोवै अर ठाह नीं क्यूं दुखियां नै देखनै मुळकै है। प्रीत-प्रेम सूं परे उण तीरै जायनै थितप्रग्य जियां बैठो है। पण इण तीरै अेक सासू किण विध देख सकै आपरी बींदणी नै अेकण छैड़ै यूं नख-सिख दुसालो ओढ्यां बैठी नै!! केई दिनां सूं आंगणै बैठी-बैठी रा गोडा जुड़ग्या है। कमरै मांय च्यार खूणां है, पण वा अेक कानी बैठी है। किण खातर उठै? कुण आवै है जिणनै देखण नै उठै? किणनै अडीकै? आस अर अडीक खतम होयगी। सेस कीं नीं रैयो, फगत रोवतां-कळपतां अेक महीनो बीतग्यो। वौ समै चायनै ई नीं भुलाईजै। असींव दुख अर असींव सुख री घड़ियां जीवड़ो बिसरावै ई कोनी।

दिनूगै उठतां ई माथो धोयनै सगळां रै चाय बणाई अर दोय कप दोनूं जणा रा आपरै कमरै लेयगी ही। बातां-मसखरी मांय दीखत रा ओळबा देवती-चिढ़ावती खिलखिलायनै

हंसी ही अर अविनाश उणरी इण अदा पर रीझतो प्रीत सूं सराबोर कर दियो। माधवी री कीं अदावां उणनै बेतरह रिझाय देवै अर वो समै-वेळा पांतर जावै। दीसै तो फगत माधवी अर वै मधरा छिण, जिण मांय माधवी अविनाश नै ई मीठास सूं बरजती खुद ई सागर री गैराइयां अर ऊंचाई री ऊंचाइयां पर मस्त होयी उण सुख में सकल भेळी भिळ जावै। भेळप री तेज सांसां अर वै दोनूं जीव रै परम सुख तांई पूगनै जद पाछा बावड़ै तद ई जुदा होवणा नीं चावै, पण दिनूगै-दिनूगै इयां मसखरी घणी ताळ तो नीं कर सकै।

उण दिन... उण दिन दूजी बार न्हाणो पड़्यो हो। पैली बार दिन ऊगतां ई अर दूजी वळा...।

दूजी वळा सिनान करयां पछै ई डील सूं वा खुमारी उतरी ई नीं ही। रात ईज नीं, नस-नस मांय दिनूगै री भी निसाणियां गूंज रैयी ही।

सासू मां रो करड़ो परहेज है कै पति रै नैड़ा गयां पछै संपाड़ो करयां बिना रसोड़ै में दाखिल नीं होवणो।

जद वा कमरै मांय सूं नीसरी तो औचक ई सासू मां बूझ लियो, ''बींदणी दुबर क्यूं स्नान करयो?''

कांई जवाब देती? नीची धूण करयां सारै सूं नीसरगी। अेक थुथकारी-सी सुणी वा।

अविनाश नै ऑफिस सारू व्हीर करया अर वा रसोड़ै में ही। सासू मां मिंदर सूं बावड़्या तद फेरूं दूजै बेस मांय देखनै मुळक्या हा अर वा सापती ई जमीं मांय धंसगी ही। उणां री निजरां सूं अळघी होवती तुळसी-थाणै कनै जाय बिसांई ली। लाज नै लुकोवती पाछी तुळसी सींचण लागी। तुळसी जी सींचण रो नेम बालपणै सूं है। दादीसा रो सिखायोड़ो। सींचती टेम वै सिखायो जकौ उच्चारणो नीं बिसरावै—

म्हैं सींचूं बिड़लो थारो, थूं कर निस्तारो म्हारो
तुळसी माता अडो दीजो गडो दीजो
खीर खांड रा भोजन दीजो, पूतां रो परिवार दीजो
रतन दीवां म्हैल दीजो, सायब री सेज दीजो
हींजता हाथी दीजो, घूमता मथाण दीजो
घीलोड़ी में घी दीजो, तिलोड़ी में तेल दीजो
पूतां रो परिवार दीजो, धीवड़लियां रो ठाठ दीजो
अन्न दीजो धन दीजो, लाभ दीजो लिछमी दीजो
गोडां सूंणी राज दीजो, कड़ियां सूंणी कादो दीजो
कड़ियां जड़ियो पूत दीजो, सूरज भगवान री खांध दीजो
नारेळां रा काठ दीजो, चंदणियां रो दाग दीजो
किसण भगवान री खांध दीजो, वैकुंठां रो वास दीजो...

...उच्चारतां उणी सुबह नै पाछी सोच रैयी ही... खुला बालां नै संभाळती वा तुळसी सींच रैयी ही जद खटाक आडो खोलती भीड़ मांय आई ही। अेकदम सूं यूं देखनै वा पिलर रो ओटो लेय लियो। लोग उण साम्हीं दयामणी दीठ सूं देखता निजर नीची करयां धकै आया।

वा समझ नीं सकी कै अेकैदम इतरा जणा घरै क्यूं आया? अर औ कांई न्हाखियो? पलक झपकायां बिना समझणै री खेचल कर रैयी ही जितरै लोगां री भीड़ मांय सूं पाड़ोस आळा काकीसा परकट होया। डरता-सा लोगां नै इसारै सूं बूझ्यो। वै कीं कैयो अर उणां रो उणियारो धोळो-धप्प पड़ग्यो। आंख्यां फाटगी अर अेक निजर पिलर साम्हीं न्हाखता मांय कानी भाज्या पण उठीनै सूं सासू मां भाजता आया...

फाटी आंख्यां सूं वै भीड़ अर काकीसा नै अबूझ-सा जोया... काकीसा कांई ठाह कांई कैयो...

सासू मां अविऽनाऽऽश... करनै अेक दरद भरयो गैरो हेलो पाड़्यो अर हेलो पूरो होवण सूं पैलां ई हेठा पड़ग्या। दूजै पल माधवी री आंख्यां आडी अंधारी आयगी, बैठण री कोसिस करणी चाही पर...।

कांई ठाह कणै होस आयो जद बेरो पड़्यो कै इतरी जेज सूं बेहोस ही। उण पछै घणी खेचल सूं कीं होस मांय आती पण चेतना पूरी नीं बावड़ती। छातीफाड़ दाडां सुणीजती... रुदन री हियाफोड़ राग सुणती अर उणरो जीव चेतन होवण नै नकार देवतो। कोई पाणी रा छांटा न्हाखतो चेतो लावण री खेचल करतो। कोई जुड़्या दांता छुडावण नै नाक भींचतो, जूतो सुंघावतो, पण जीव सचेत दुनिया मांय नीं आणी चायो जठै रुदन-राग काळजो चीर न्हाखै है।

कोई गालां पर थपथपायनै... जोरां मरजी बैठायनै कीं देखाळणो चावै ही... कोई छेकड़ली बार अविनाश रो उणियारो देखावण री कोसिस करी, पण नीं देख सकी। उणरी पथरायी आंख्यां नै पुसप माळावां रै बिचै कीं आंख-कान अधूरा-सा निजर आया... निजर अर दिमाग आपरा तार नीं जोड़णा चाया अर ना ई जुड़या। नीं समझ सकी कांई भी। निजर अर दिमाग माधवी नै वो छातीफाड़ दरसाव नीं देखावणो चाया। बस हलचल समझ मांय आवै ही। निजर ठैहरायां जोवती रैयी... अठीनै लुगायां बाथ घालनै रोवै ही अर उठीनै आदमी घेरौ बणायनै ऊभा हा... रोवता हा...। बेहोसी मांय ई परकमा दिराई। चेतना माथै दुख री सिलाड़ी रो हजार मण रो भार हो। जद डील री प्रक्रिया हावी होवती अर आंख्यां खुलती जद ई लुगायां री भीड़ देखतां कीं दरसाव याद आवतौ अर दिमाग आपरा किंवाड़ पाछा बंद करनै उणनै अंधारै मांय न्हाख देवतो। उठै दुख सूं परै चेतनाहीण ही।

कांई ठाह कितरा दिन बीतग्या। अेक दिन होस आयो जद केसरिया री जगै मोतिया ओढणो कनै पड़्यो दीस्यो। अचरज सूं जोयो... हाथ मांय लेवणो चायो, पण...

कोई खाथाई सूं आयनै खोस लियो अर अळघो फेंक दियो। वा जोयो... मां है! मां!! सासू मां!! मां... मां दरद सूं पुकारती वा हाथ पसार्‌या... मां उणनै छाती रै चेपी... ''ना बेटा, औ रंग नीं... म्हैं जींवती हूं अजै...'' अर बाथ घालनै अपार दरद सूं दोनूं बेराजी होय पड़ी।

''...अविनाश रा पापा म्हनै अेक दिन अविनाश री जिम्मेदारी देयनै बाप बणायग्या अर अब अविनाश थारो बाप बणायग्यो!...'' कीं घड़ी ढबी कुरलाट नै अै सबद पाछी आंच दी, पण दोनूं नदियां नै बांध ली। अेक दूजै रै दुख रो ओर-छोर नीं ।

दुसालो ओढ्यां बैठी माधवी बींदणी नै केई बातां याद आवै। अविनाश रो उणियारो... बातां... मसखरियां... मस्तियां। मन-तन रै हर कण पर अविनाश री छाप है। हर छिण उणरै रंग मांय रंगियोड़ो है। ब्यांव सूं पैली अर सगाई रै पछै री मुलाकातां... ब्यांव री पागा पूजाई री रात... उण पछै मधुमास रा वै दिन। कितरा सुखद अर आणंद देवण आळा...

उणरी उतावळी पर हमेस प्रेम आयो। सगाई पछै जद ई मिलिया, अेकांत ई चायो। कदै सहेली रै उठै मिलणै री जिद अर कदैई दोस्त रै उठै। उणनै संभळनै रैवणो पड़तो। हर बार अविनाश जोस में बैय जावतो अर फगत खुद री मरजी। हर हरकत पर कीं साथ देवतां थकां छेटी बरकरार राखणी मुसकल होवती। उणरो जीव ई केई बार अविनाश सागै बैवणो चावतो। पण... अैड़ो सोच नीं सकती, जको पाप है। हर बात रो कोई खास समै होवै। प्रेम नै संभाळती रीत नै केवटती रैयी ।

अेक दिन... उणरी मदहोसी थम ई नीं रैयी ही। ब्यांव आडा दस दिन हा। उण दिन कवल लियो हो कै धकली मुलाकात ब्यांव मांय ईज होवैला। बस इणी बात सूं इतरो उंतावळो व्हियो कै होस ईज गंवाय दिया। इण मुलाकातां मांय उणमें इतरी लालसा जगाय दी ही कै वा खुद ई संभळ नीं सकी... ना संभळनै रो मन सेस रैयो। ना-ना कैवती वा थाकगी ही अर साम्हीं निजर आयो फगत दस दिनां रो आंतरो। वा मुगध होवती जा रैयी ही... मन मनचाया करणै री ताक में हो, पण अेक सरड़ाट-सी चाबुक री चोट पड़ी हियै पर सही-गलत री अर वा उण सूं छूटनै कमरै सूं बारै आय ऊभी। पसीनै सूं हबाबोळ ही। मुड़नै जोयो... राती आंख्यां मांय रीस सूं भरी मनवार ही... पण वा ढबी कोनी। दादीसा री बात चेतै ही... छोरां रो भरोसो कोनी। पैलां आप ईज जिद करै, पछै सगळो बज्जो छोरी पर न्हाख देवै।

ब्यांव आळी रात कितरी मनवारां सूं मनाया हा रीसाणा हुया अविनाश नै। उण दिन प्रेम री पैली घड़ी मांय वचन दिया-लिया कै अेक-दूजै रै सागै नै कदैई नीं बरजैला।

...अर अब आप ईज आखड़ी तोड़ग्या। चितारतां आंख्यां पाछी गंगा-जमना बणगी ही। रीती आंख्यां सूं झारोझार पाणी झरै।

...बींदणी माधवी नै सासू मधु टगमग जोवै है... ना... ना... सासू-बींदणी कियां कैवीजै? सासू अर बींदणी दांई तो वै कदैई रैयी ई नीं। माधवी नै... सैणी-भोळी... बाल-बघेल मौड़बंधी अविनाश री जोड़ायत बण्योड़ी थळी ऊभी देखी ही जद ई इण कन्या सूं उणरो जीव जुड़ग्यो हो।

आरती उतारी, बधाया अर जीमणो पग मांय मेलावतां आंगणै कंकू पगल्या मांड्या... हीयै पगल्या मंडाया। थाळ्यां चुगाई री वेळा बूढी-बडेरियां कैयो कै थाळ्यां बाजण री गूंज जितरी कम होयसी सासू-बींदणी में उतरी ई चोखी निभसी। औ कैवती बडेरियां मोसी बोली या सीख दी ही औ ठाह नीं, पण वा बात सुणनै दोनूं उण घड़ी मन नै आपसरी मांय बांधण रो मनोमन तै करयो अर साच्याणी मन आपसरी मांय काठो बंधग्यो। जणै ईज तो थोड़ा-सा महीनां पछै ई, घणी उमर री छेटी री दोय लुगायां... सासू-बींदणी, साथण-सखी दांई रैवण लागी। दोय लुगायां अेकै-दूजै नै कियां चोखी परोट सकै, औ साचमसाच ई वै दोनूं जाण सकी अर जीवण लागी। यूं तो गांव-गवाड़, पौळ-बास री हर लुगाई सूं बाईसा-भाभीसा या सासू-धा री अपणायत रो तांतो रैयो, पण माधवी मांय उण जका रूप जीया, सुख पायो वो जताय ई नीं सकै। आ कैवत उणरै हियै कदैई नीं ढूकी कै लुगाई री दुस्मण लुगाई व्है। मधु आपरै निजू जीवण मांय आई कमियां नै माधवी रै जूण मांय हवळै-हवळै पूरी करण लागी ।

...नवी बींदणी माधवी रो कीं सांयती भरयो मुखड़ो ईज मिनखाजात नै उणरो साचो जोगदान हो। वा इण बात सूं मांय री मांय हरखती कै अेक बींदणी नै वा चोखो जीवण देय रैयी है। सासरै आळी जूनै जुगां री कठोरता नै पिघळाय रैयी है। उणरी ऊंची पढाई करणै री इच्छा पूरण कर रैयी है। बैंक रा एक्जाम देवण री इच्छा है। चोखो है। मिनख जमारै आयनै कीं करै तो। और दूजी ई केई नैनी-नैनी बातां है जकी पूरण करै। इण सूं इतर परिवार री रीतां नै मानती थकी बींदणी मांय वा सगळा रंग भरणी चावती ही जका बींदणी री चावना मांय हा। हवळै-सी पांगरतै इण साखीपणै माथै सरलता री मोहर लागगी। जाझै हेत सूं आड़ोसी-पाड़ोसी लुगायां मांय ईसको वापरण लाग्यो। उण सगळी सासू अर बींदणियां री मंडळी मांय रमा अर माधवी रो गुणगान हुवतो, सासू री मंडळी में ईसको होवतो अर वै कीं डोढा बोल आप-आपरी बींदणियां तांई पूगावती। बींदणी री मंडळी मांय माधवी रै खातर ईसको नीं, बल्कै वा उणां में खासी मनीजती पर अब उण माथै दुखां रो भाखर टूट पड़्यो है। आंबा रंग रो बेस पैरयां, मेंहदी सूं राता लाल हाथां सूं तुळसी जी सींचै ही अर सुख री मनोमन ई कामना करती जावै ही जद आ बिपदा उणरै आंगणै आय पड़ी। सैंग हाय-बाय रैयग्या। अविनाश री काची मौत सगळां नै धूजाय न्हाख्या है।

...वा चोखी तरै जाण लियो कै लुगाई सूं ईज लुगाई नै समझ्यो जाय सकै। दूजी लुगाई रो जीवण, जमारै रो गैरो साच खोल देवै। अेक लुगाई दूजी लुगाई सूं खुद नै

सावळसर समझ सकै। कितरी ई बातां रा रंग, जीयाजूण रा भेद डैमो रूप में दूजी लुगाई मांय जोवती खुद रै माथै उण रंगत रा छांटां नै मैसूस कर सकै। पण मधु नै ठाह है कै धणी री कमी, सेज री कमी कैड़ी होवै ? अविनाश जद पंदरै बरस रो हो जद उणरा पापा गिया। तद... दिन तो जियां-तियां रोय-रींकनै नीसर जावतो, पण रात... अणचीन्ही बेकली लावती। पलंग रो जाडो गद्दो ई काळा नाग उनमान डसतो।

देह तो देह है। प्रकृति पैली बणी अर समाज घणो पछै। प्रकृति री बणायी आ रचना समाज रै नियमां सूं परै है। देह रो विग्यान समाज री परवाह कद करी ? समाज हावी होवै जद तांई कीं परवाह करै, पण अकसर समाज नै बिसार देवै अर देह हावी हो जावै समाज पर। देह री भासा हावी होयां समाज मांय परलै आ जावै। लुगाई री देह आपरी भासा बोलै तद समाज-परिवार नैना पड़ जावै। नारी देह रो न्यारो विग्यान है जिणनै समाज नीं समझै या जाण करनै अणजाण बणै। इणी कारण पैहरा-पाबंद करै। या स्यात समाज, नारी देह विग्यान नै बोत चोखी तरै सूं गैरै तांई समझ लियो है कै उण विग्यान री गैराई सूं भयभीत होवै। इणीज कारण नारी जात पर हजार पाबंदिया लगा राखी है। औ ईज कारण है कै समाज विधवा लुगाई रो सगळां सूं पैलां रूप खोस लेवै, रंग खोस लेवै, बाल लेय लेवै अर पछै बेबस करनै छोड दै। ऊपरी रूप अर इच्छावां रो हर तरै सूं दमण करै, पण उणसूं देह-विज्ञान दर ई नीं बदळै। औ ऊपरी रूपां सूं नीं बल्कै डील रै ऊंडै सूं संचालित होवै। डील री लालसा रो नाग फण उठावतो रैवै। पण वा माधवी सागै अैड़ो नीं होवण देवैला। मधु मनोमन आ तेवड़ी। प्रकृति रै नियमां सूं खिलवाड़ नीं करैला। प्रकृति रो सम्मान करैला...

...उणनै याद है कै अविनाश रै पापा रै चल्यां रै दोय साल पछै जद जिनगाणी पटरी पर चालण लागी तद वा पलंग पर जायनै अविनाश रै पापा नै कनै मैसूसती अर साच्याणी वै सपना आवण लाग्या, जिणमें वै सांप्रत उणी रूप मांय निंगै आवता जकौ रूप अेक लुगाई नै आपरै बींद रो मनचायो होवै। दीन-दुनिया सूं अळघै कोई जन्नत री सैर जियां... सांसां रै आरोह-अवरोह नै मैसूसती... गमती... उण दुनिया री पाछी सैर कर आवती जको वा अविनाश रै पापा सागै जियो हो। वै दिन कियां बिसराईजै ?

औ साच रोटी, मकान अर कपड़ै जितरो ईज साच है। वस्तु री जरूरत सगळां नै दीसै पूरी भी करै। आ जरूरत भी मनोमन स्यात समझै, पण इणरो उल्लेख समाज री मरजादा में नीं आवै। उणरै काळजै मांय वै दिन अजै खुबै है अर अब बींदणी रै ई औ अथाग दुख !! कियां जोवूं ? तुळसी मां सूं लड़ पडूं। जळ सींचणै री अेवज में औ हवाल ? सेजलिया भरतार नीं दिया अर सेज ई खोसली ? माधवी रतन दीवां म्हैल री कामना करती ही अर भाग्य सायब री सेज ही खोसली। क्रिसण भगवान री खांध मांगी है अर सायब नै खांध देय दी। हे ईश्वर ! थारो न्याव थूं ईज सांभ। तुळसी मां अेवज में कांई नीं देय सकै

पण वा सासू अर मां है। दोय-दोय नांवां रो तांतो है उणरो उणसूं। बींदणी भी है अर बेटी भी। रतन दीवां म्हैल नीं देय सकूं तो मां किण नांव री! ...मां री ओपमा उणनै कियां फाबै?

वै काती मास रा दीवाळी पछै रा दिन हा। घर मांय उच्छबी रंग पसरयो हो। दीवाळी री सौरम घर भर मांय दीसै ही। धोळक्यो-पोत्यो घर। अजै तो आपरी सगुणी बींदणी नै कोई दोय दिन पैलां ई मधु कैयो हो—

''गैणोगांठो पैहर नै त्यार-टंच रैवणो। तीज-तिंवारां रै दिनां मांय घर री बींदणियां नै नवी बींदणी दांई सिणगार करनै रैवणो चाईजै। रामा-स्यामा करण आळां री आव-जाव लागी रैवै। अै ईज तो लाड-कोड व्है अर आ ईज गवाड़ी री ओळख होवै बींदणी! रामजी भली करै... अैड़ा दिन हरेक री तकदीरां में पड़्या कठै है? थारा बडभाग है... आपणां भाग है... सकल मेळावा रा भाग है कै औ सुख देखां हा। इण सुख सारू भगवान नै लखदाद देवां जित्तो कमती है...''

बींदणी रो गोरो-निछोर केसर वरण मेंहदी रै रंग सूं खिलनै आंबा रंग रै ओढणै सागै अेकमेक हुयां जावतो। जियां कै केसरवरणी साड़ी पैरयां राधा सूं पाणी केसरवरणो होय जावतो। तुळसी जी ई नीं, घर रो आंगणो ई डग-डग हंसतो हो।

जब तब बींदणी नै सीख देवती, ''जणै जैड़ो मौको मिळै, जीवण रो आणंद लेवण सूं नीं चूकणो। जिनगाणी मांय हर चीज रो मैतव है। हर वस्त रो आणंद-लाभ लेवो। रीत-परंपरा मांय उच्छब रूप जीवो अर पढाई-लिखाई मांय सरस्वती रूप नै। दुनिया साधनां सूं भरी है। छक नै उपभोग करो।''

फूटरी-फर्री गमला जैड़ी बींदणी नै जोय-जोय वा कीं मिजाजण सासू होवती जा रैयी ही। सकल कड़ूंबो राजीबाजी रट हो अर तद औ विघन आयनै पड़्यो। ...तुळसी जी कलमीजनै सूखग्या है। तांबै रो कळसियो अजै उणी ठौड़ ऊंधो पड़्यो है। तुळसी जी रो इण आंगणै री नारी सागै अेक रिस्तो है सदीव सूं। सगळो कुनबौ मोतिया रंग सूं बिंधीजग्यो। बैराग ओढ लियो। अब उण जूण मांय कांई रैयो है? माधवी रा पीळा ओढण रै दिन री उडीक ही... बैंक में अफसर बणनै री उडीक ही अर वा आज अेक खूणै बेचेतै पड़ी है। विधना काठी छाती री है। बेमाता कांई लेख लिखिया है बींदणी रा? जद-जद बींदणी रै साम्हीं जोवै काळजौ फाटै। हिवड़ो लीरा-लीर होवै। ईश्वर औ कांई करयो रे? वा सुवारथ सूं कदै भगवान नै नीं पूजिया। कदैई कोई मानता तकात नी मांगी अर ना ई परसादी बोली, पण बिरमा जी री बणाई इण दुनिया मांय उणरी रीत पर भरोसो राख्यो। इण रीत मुजब ईज तो जीवण चालणो चाईजै। पैलां पाका पान खिरणा चाईजै। पण औ कठै रो न्याव कै मां री छाती बाळनै माल-मोट्यार बेटो जावै? औ धामलो कियां स्हैन

करीजै ? कोई जंतर है इणनै स्हैन करणै रो ? हे राम ! थारै कनै माया नीं होवती तो नीं देवतो, पण औ माड़ो काम क्यूं करत्यो... ? आसा रा जांजा क्यूं करत्या ? अै कोझा ढाळै रा दिन क्यूं देखाळ्या ?

...केई री केई बातां यादां नै कुचरै। यादां अजै साव ताजी है... नवी-नकोर। दिनां री थेग ऊपर आई ही कोनी तो कियां भूल पड़ै !

...अैस ई तीज आळै दिन सासू-बींदणी पूजा-बात सारू त्यारी कर रैयी ही। माधवी सासू मां नै जरदोजी जाळ आळो लहरियै रो बेस देयनै सरप्राइज दियो। मधु रा तो हरख रै मारै मूंढै सूं बोल ई नीं फूट्या... केई बरसां सूं अैड़ै बेस पर मन अटक्योड़ो है, पण वा अैड़ा बेस कियां पैर सकै ? अविनाश रा पापा उणरा सगळा रंग लेयग्या। पण बींदणी बेस देयनै पगां लागणी करी अर पग पकड़नै बैठगी। अरज-मनवार करती हाथाजोड़ी करी कै इणनै स्वीकारो। पण लहरियो मधु नीं पैर सकै। अविनाश अर माधवी दोनूं पगां पड़नै सौगन कढाई ही लहरियो पैरण सारू। अहा ! सासू रा कितरा कोड करै। काळजै री आस पूर दी । ''थूऽ...थूऽऽ...'' झट थुथकारी न्हाखी। ''अै लाड-कोड सदा कायम रैवै !'' आसीस दी।

...अर पछै मधु ई कांई कमती कोडीली ही। जद हरी मगजी आळी वरी पैरनै माधवी रूप सूं लजखाणी होयी ही तद चांद-सी बींदणी री हथाळी मांय सूरज दांई ऊजळा चांद अर मछली री भांत रा जड़ाऊ सोनै रा चांदबाळा धर दिया। बींदणी अचरज अर खुशी रै हींडै हींडती रैयी। कोई दिन माधवी कैयो कै उणनै चांदबाळा घणा दाय हा, पण मां नै झूमरियां दाय ही, इण कारण ब्यांव रा दागिणा में झूमरियां ईज बणी। वा बात मधु भूली नीं ही अर तीज आळै दिन मंछा पूरण सूं बेसी कांई आसीस होय सकै ही।

इण बात सूं उणनै ओ हेनरी री अंग्रेजी री कहाणी याद आई जिण में डेला आपरा लांबा बाल बेचनै जिम री सोनै री घड़ी सारू सोनै रो पट्टो लावै जिण री उणनै बरसां सूं चावना ही। अर दूजी कानी जिम आपरी सोनै री घड़ी बेचनै डेला रै लांबा-सांघणा बालां सारू कछुआ रै खोळ रा धातु मंढ्या कंघा सैट लावै जिणनै केई दिनां सूं दुकान री शॉपिंग विंडो में सजिया देखती, पण ऊंचै दाम रै कारण मन मारनै रैय जावती। दोनां में अणूतो हेत होवै अर वै आपरी खुशी सूं दूजा री चावना नै बत्ती जाणै। निजू खुशी नै पांतरता आपरी चीज बेचनै अेक-दूजै री जरूरत री चीज भेंट करै अर अेक दूजै रो त्याग देखनै हैरान रैय जावै।

वा देख्यो कै दोय फूटरी आंख्यां मांय सुख नाचै है। उण दिन मनवार कर-करनै बींदणी नै सोळा-सिणगार करावती मन मांय कीं ओर सोचनै मुळकती जावै ही। गैणां सूं लकदक होयनै कड़ूंबै आळ्यां सागै तीज माता पूजी, बात-कथा सुणी, पगै लागनै आसीसां रा झाला भरत्या। चांद देखण रै मिस बींदणी नै बेगी ई ऊपरै मेलतां कैयो—

''बींदणी! थे उण चांद नै अडीको अर थांरो चांद थांनै...'' अर साच्याणी माधवी रो चांद अविनाश छात पर बेकली सूं उणनै उडीकतो हो। माधवी नै देखतां ही बास्यां पसार दी...

मधु उण लहरिया बेस नै केई बार हाथ फेरनै देखती अर राजी होवती। पैरण रो सोचती तो जीव धूजतो। इयां आरसी साम्हीं केई बार खुद पर फाबायनै देख्या करती। पण अविनाश री सौगन दिरायां बावजूद वो लैहरियो नीं पैर सकी... तो कांई सौगन नीं मानी इण कारण ईश्वर अविनाश नै खोस लियो? ...माधवी ई तो कित्ती सौगन घलाई ही आपरी...

...आंसुआं री नदियां चाल रैयी है। बींदणी रोय-रोयनै कायली पड़गी है। माथा नै गोडां बिचाळै दैयनै साव सगतीहीण अर निरबळ, हीण-सी बैठी ठाह नीं किण दिस मांय जोवै ही। ना तो इण जमारै मांय.. ना ई कोई दूजै मांय है... स्यात सूनै भविस मांय। मधु, माधवी नै ईज देखती रैवै। सवा महीनै मांय अधबूढ-सी लागण लागी है अर उणियारो साव बेनूर। दुख इंछा सगती नै निचोड़ न्हाखी है। भींतोभींत कर दी निजरां नै। यूं तो हजारूं बार उणनै देखनै कळपी है। केई कळाप करया है, पण आज वा साव ई अनाथ जिसी लागी, जिणरो कोई स्हारो नीं होवै, भविस मांय अंधारो होवै अर दुनिया अंधारी भींत दांई होवै...

काळजो धूजण लाग्यो। उणरी बींदणी री आ गत! मधु जीवती है अजै! अेकली कोनी है! झट छाती मांय भींचनै हेत अर स्यारै री आंच दी, जाणै—

मां बेटी नै सांवटै,

चिड़ी आपरै बचियै नैं सांवटै,

बडी बैन नैनी बैन नै सांवटै,

मोटो भाई नैना भाई नै छाती मांय लुकावै,

धणी लुगाई नै बांधै।

वा सगळी भांत रै भरोसै अर तारण री गैरी छियां ताण दी माधवी माथै। जियां सेज री चद्दर, तकिया री खोळी, पलंग रो पायो होवै। भींतां सूं कळपती, छात नै दुखड़ो सुणावती कळपती लुगाई जियां तो दर ई नीं कळपण देऊंला म्हारी माधवी नै... ना... कदैई नीं... हरगिज नीं।

आज सूं पैला यूं तो सदा सूं ई काळजै मांय राखी, क्यूंकै कोई री निजर लागणै रो भौ हो, पण विधाता रै आंख्यां आयोड़ो कियां बचै? विधना रै साम्हीं छाती ताणनै ऊभी आज मधु री पकड़ मांय साझै दुख री कळप नीं, अेक दिरढता है... फगत स्हारो ई नीं, भरपूर स्हारो देवण री कूवत है।

...मां ...मां करता सोनू अर जयेसा पाठसाला सूं घरां बावड़्या। नैड़े पूग्या अर मां -भाभी नै अेक छिण देख्या अर संकीजता अठीनै-बठीनै वैळायां करतां उठा सूं सिरकणै री जुगत करी। टाबर ईज तो है अजै। साव ई भोळा। लाई दोनूं भाई-बैनड़ अेकाअेक ई यूं भाईसा रै सिधारण सूं सूना-सा होयग्या है। हंसणो-बतळावणो तो जाणै पांतरग्या है। घर रो कण-कण सूनो है, पण करै तो कांई करै ? रोवतां-रोवतां दिन अर रात भाखर बणनै छाती पर चढ बैठ्या है। रात-दिन दोनूं दुस्मीं लागै। रात रै पछै दिन निसारण री चिंत्या अर दिन ज्यूं-त्यूं खटकरम मांय बीत जावै तो रात बाको फाड़्या साम्हीं आवै।

थ्यावस अर दुख रा नैड़ा दिन कढायनै दुनिया आपरी दुनिया में बावड़गी है। पण उणां री दुनिया साव बेरंग-बेसबब घर नै गिटण नै छाती ताण्यां रोज साम्हीं ऊभी रैवै।

मधु सोचै... साव ई तो बेअरथ नीं व्ही है उणरी जिनगाणी। अविनाश रै पापा रै गियां अविनाश नै जोयनै ऊभी होई अर डिगती-डिगाती चाल पड़ी ही। अब फेर विधाता उठै ई लाय न्हाखी है जठै दुख केई गुणा होयनै सगळां नै भखण नै त्यार है, पण अैड़ा दुख री दुनिया अर दिनां मांय माधवी नै जीवण रो बोझो ढोवतां तो नीं देख सकै।

अेकर फेरूं उणनै डिगतां-डिगतां ई संभळनै लांबी दूरी चालणो तो पड़सी...

सोनू-जयेसा घर रै कोई खूणै मांय दुख नै लुकोयनै मूंढो उतार्‌यां बारै आया।

''मां! भायलां रै घरै जावां। उठै ई पढाई करस्यां।'' वै कैयो।

मधु ढबणै रो सांनो कर्‌यो।

''क्यूं, जीमो कोनी कांई ?''

''...हां मां... आप पुरस सको तो पुरस द्यो नींतर उठै ई...'' कैवता वै अेक-दूजै साम्हीं जोयो। दुखी मावड़ नै देखतां दोरी-सी बोली जयेसा।

वा माधवी बींदणी नै रसोई रै साम्हीं सांनो करतां कैयो, ''थांरै टाबरां नै भोजन पुरस द्यो माधवी मां! म्हैं तो अणूती थाकगी हूं...''

घणी जिनगाणियां संवारनी है अजै। दिन सिंझ्या रै रस्तै चाल पड़्यो है। रात पूरी करनै पाछो ऊगैला अवस अर अब मधु गैरै सोच-विचार में है...

❖❖

थळगट मत डाक आगळ

दिनूगै उठी तो हियै मांय मीठी-सी गुदगुदी मैसूस व्ही। रूं-रूं मुळक रैयो हो... क्यूं?

...कारण नीं लाधो पण मुळक ऊंडै तांई पसरी ही। अेक अजको विचार जीव मांय ऊगतो लखायो... अेक अैसास ऊंडै कठैई पसरतो लखायो। औ कीं निरवाळो है। हमम्मम... आं बरसा मांय कीं न्यारो पण कदैई उमर रै कोई छेड़ै जाणो चीन्हो। विगत मांय इण अैसास सूं गुजरी तो ई पण वै बातां जूनी है।

बिस्तरां मांय सूतां-सूतां ई केई मीठा विचार आवण लागा। फरकी मुळक सूं आळस मोड़्यो... अेक मादक अदा सूं... जाणै कोई साम्हीं है अर उणरै प्रभाव सूं आ अदा मत्तैई निखरगी है... बैठी रैई.. गोडां पर हाथ सांवटनै उण पर हिचकी टिकावती कीं सोचण लागी अर अेकदम निढाळ-सी पाछी रिलैक्स होवती सीरख माथै न्हाख दी खुद नै। चोखो लागै है यूं आळस सूं भर्‌यां रजाई मांय पड़्यो रैवणो अर कीं-न-कीं मनचायो सोचतो रैवणो। आजकाल जीव री हालत कीं और ईज है। उण हालत नै लेयनै मानस मांय फेरा लगावणा घणा दाय आवै। ...छानै सै पाछी मुळक बिखेरी... चोर निजरां सूं अठी-उठी देखनै झट सांवट ली अर आंख्यां बंद करनै आंख्यां रै परदै पर अेक रील चलाय ली, जिणरी देखणहार अर भोगणहार वा खुद ईज होवै... नितरोज।

औ बदळाव कियां आयो? मन आजकाल इत्तो राजी-राजी क्यूं रैवै... उमायो रैवै अर अैड़ौ मन करै कै इण हरख रो समचो सगळां नै देवै.... पण नीं... यूं तो नीं कर सकै। चावै तो ई नीं कर सकै। मन मांय उगती नवी बस्ती में उण खास नै सागै लेयनै विचरण तो कर सकै, पण कोई तीजै नै नीं बताय सकै। ...आ बस्ती ना-ना करतां थकां ई जीव रै छानै मत्तैई बसगी है...। इण रो कारण कीं तो है! ...रात आळै उण सपना राग खयाल आयो जिणरी सौरम अजै जीव मांय है। अहा! स्यात आं मधुर सपनां रै कारण मन बदळ्यो रैवै।

नित नवा सपना आवै जका दिन भर धड़कता रैवै। स्यात नीं... साच्याणी ई सपना रै कारण ईज तो यूं होवै है।

उण सपनै नै फोरका हाथां फुंदी दांई हथाळी मांय लियां पाछी जोवण लागी। ठाह नीं कित्ती जेज सपनो चाल्यो अर उण मांय वो दीस्यो। ...सागै लेयनै कठैई चालण री

मनवारां करै हो। दोय पल सागै बितावण री अरज करतो रैयो हो। उण दोय पलां सारू केई घंटां उडीक्यो हो... मन्नतां करी। ...साच बूझो तो वा खुद कीं जेज सारू उण सागै जावणी चावती ही... घणी नीं... बस थोड़ीक जेज सारू... उण सागै री उण दुनिया मांय जीवणी चावती जकी चोखा-भूंडा सूं कीं परै है... दुनियावी खटकरम सूं अळगी है... जठै वा फगत निजू रूप मांय होवै। उणरै सागै रा पल उणरी झोळी खुशियां सूं भर देवै। राजी व्है जावै इण नवी दुनिया सूं। अै पल जिनगाणी रा सगळा ओळबा हेर लेवै। खुद नै उण सागै वा कीं निराळै रूप मांय पावै। उणरै साथै ईज नीं, उणरै फगत विचार अर सोच सूं दूजी भांत री होवण लागै... उणरै आवण सूं... उणरै जावण सूं... उणरै जिकर सूं... हर हरकत सूं वा म्हैक जावै इतर ज्यूं। कोई किणी नै यूं मैसूस करया करै है? कोई नै आपरै मांय जीविया करै इतरी सिद्दत सूं कै वो सपना मांय अरस-परस आवण लाग जावै?

...दूजै सपनै में वो अेक आणंद री अनुभूति लियां ऊभो हो... साव साम्हीं। उणरो केई दिनां सूं इसरार हो नाटक देखण सारू। टाउन हॉल में नाटक सागै देखण रो सपनो हो। कनै बैठ्यां अेक दूजै रै संग नै मैसूस करणै री कामना पाळी ही दोनूं जणा। इण कामना री पूरती रै खातर ई वो ऊभो उडीकै हो। कीं जेज औरूं उडीकण रो इसारो करनै वा बेगी-बेगी काम निवेड़ण लागी अर वो उणनै बेकरारी सूं देख रैयो हो। वा लाचार सी उणसूं बस दोय मिनट रुकणै रो पाछो सानो कर्‌यो। वो सांयत सो ऊभग्यो। केई छिण निकळग्या। मन मांय घमसाण अर हाथ मांय कामकाज अणथक चालता रैया। जाऊं कै नीं? कियां निकळूं? ना कैय दूं? पण कीकर? जावणो सावळ रैयसी?... ना कियां देवूं? मन री अेक परत जावणी चावै उण सागै। वा परत कीं नीं सोचै... ना चोखो ना भूंडो... फगत उणरी चाह रो सोचै। मिलण री चाह में उणरो ढबणो, अडीकणो भलो लागै हो। अंतस मांय ठंड पड़ रैयी ही कै आ उडीक फगत उण सारू है। इण लांबी अडीक मांय उणरी मुद्रा कदै बेबसी री, कदैई बेकरारी री, कदै उंतावळी री, कदैई मिन्नतां री, कदै अरज री अर कदैई रहम री, तो कदै-कदैई ओळबा री अर बीच-बिचाळै रीसाणी अर मीठी रीस आळी हो जाया करती। सगळा रंग वा पीवती रैयी अमरित जियां। हाथ मांय काम अर मन मांय उथळ-पुथळ, सही-गलत री। इण रै सागै उणरा रंग बदळता भाव जका फगत वा ईज देख सकै ही... उणमें बैवती जाय रैयी ही... पढ रैयी ही... गुण रैयी ही... सांवट रैयी ही निजरां सूं अर उतार रैयी ही ऊंडै अंतस मांय... अंतस थबोथब होय रैयो हो उणरी प्रीत सूं। उण अमोल अैसासां नै मन रै तहखानै मांय सावळसर राखनै नैछै री सांस ली... अर ...जित्तै साढ़ी छव बज्यां रो अलार्म बाजग्यो... आंख खुलगी... सपनो अधवीटो मन मांय टंग्यो रैयग्यो।

ओह! दिन ऊगण आळो है! ...टाबरां री स्कूल! ...टिफिन! ...मौड़ो नीं व्है जावै कठैई! ...कीं टेम पैलां पलकां माथै तिरण आळा निजारा, वै भाव सांप्रत हा जका

आंख खुलतां ई जिनगाणी सूं तिरोहित होयग्या अर वा आकास सूं जमीं पर आय पड़ी ही। झटकै सूं रजाई उघाड़ी तो साम्हीं रोहित चाय लियां ऊभा मुळक रैया हा। झेंपगी ही अेकाअेक। मन री ल्हैर उणियारै पर लुणाई ले आई ही अर विकसता पुसप दांई खिल रैयी ही... इण घड़ी उणरो खिलतो मादक रंग उण पर झेंपभरी मुळक अर आ प्रेम प्याली रोहित रै हाथ री...। फुदकनै उठी अर कीं कैवणो चायो, पण रोहित नै अेकैलाग मुगध होयां देखनै चुप लगायगी अर वै नैड़े आयनै कीं कैवणौ चायो। उण निजरां रो भाव अर न्यूंतो समझगी ही... पण दिनूगै रै कामां री हाय-बाय में अै बातां फिजूल व्है जावै। इण कारण रोहित रै बास्यां पूरी पसारण सूं पैलां ई वा सारकर उठै सूं भाग छूटी... रोहित मन मसोसता देखता रैया।

टाबरां नै बेगा-सी स्कूल बस मांय बैठाया। आडो बंद करनै पाछी मुड़ी तो रोहित नै मदहोसी सूं साम्हीं जोवता देख्या जाणै कोई नसौ चढ्यो होवै। वा इसारै सूं बूझ्यो—कांई होयो ? पडूत्तर आयो—सबदां सूं नीं बल्कै बाथां सूं... अबकै छूटण री दर ई कवायद नीं करी। सपनै आळी मदहोसी अजै उतरी नीं ही। रोहित खुद मांय सांवटी ही उणनै। वा पुसपां री काची डाळी ज्यूं बिखरती गई। कंकू री लोथ जैड़ै सुखमय भार हेठै मदहोसी सूं दबती रोहित री निवायी सांसां नै पीय रैयी ही.. उन्हा-उन्हा भावां नै धारण करती रैयी। उण अमोल पलां नै केई दिनां पछै यूं सुबै पीवणो मधुमास मांय डुबोय दियो। वै फुसफुसावता कीं कैवता जावै हा अर वा लाज सूं भरी उणरी छाती मांय धंसती जावै ही... अेक मीठी-सी पीड़ किणी दूजै लोक मांय ले जावती रैयी... उण अैसास मांय कदै कीं और मैसूसती अर कदैई कीं और... तन मदहोसी रो अेक खजानो पाय लियो हो अर मन कीं काल्पनिक आभास मांय विचरण कर आयो हो। रोहित उण खजानै नै लुटायनै तिरपत होय उणनै औरूं प्रेम मांय लेयग्या... अर वो काल्पनिक आभास कीं और ईज लोक मांय लेयग्यो। अेक अंतस दो रंगां सूं सरोबार...

दोनूं अैसास उणरी खुसी रा। जीवण में रळ-मिळग्या हा।

...कीं महीनां पैला तक सोसल मीडिया उणनै घणो दाय कोनी अर ना ई टाबरां रै काम सूं इतरी नचीती व्है कै दूजो कीं खटकरम याद आवै। साथणियां सूं लारै नीं रैय जावै अर बैकवर्ड मानीजण रै डर सूं फेसबुक पर आईडी बणाई, पण घणो कीं चाव नीं आयो। केई-केई दिन फेसबुक नै नीं संभाळै। जे संभाळै तो कीं पल्लै ई नीं पड़ै। डर जावै दुनिया री इण अणदेखी भीड़ सूं जिणरी केई चोखी-भूंडी घटनावां नित अखबारां मांय आया करै। असैंधा लोगां सूं डरपै। मूंडो लुकावै अैड़ी चीजां सूं। सहेलियां माथै इंप्रेसन जमावण नै माडै सीखण री खेचल करै। इणी कारण फेसबुक नै यूं ईज बैठी टमटोळती रैवै। पण समझ नीं पड़ै, क्यूं कै अैड़ी तकनीक रो ठाह ईज नीं पड़ै उणनै।

उणरी सखी सुहानी नै नवां लोगां सूं बात करणो चोखो लागै। मेघा रा ई घणाई दोस्त है फेसबुक सूं जका घरै तकात आवै-जावै। हिना रो तो बौत बडो सर्कल है सहेलियां रो, जिण मांय केई एक्टिविटीज करती रैवै। सगळी साथणियां मिलै जद फेसबुक री बातां करै अर वा अणमणी-सी चुप बैठी रैवै। उणनै लागै अै ठाह नीं किण दुनिया री बातां है। उण कनै इण बाबत कीं है ईज कोनी। वा तो फेसबुक आळां सूं बात करणो कीं बेजां-सो मानै। इण कारण खुद री सोच अर सखियां री सोच रै घाण-मथाण मांय पजी रैवै। अै सगळी ई सखियां चोखा घर री अर आपरै धणियां रै प्रेम मांय रंगी है, पण आराम सूं दूजा साथी सूं बात करै। कीं अबखाई नीं दिखी। सगळी कोई तरै री हीण पाळ्यां बिना इणनै एंजॉय करै। परिवार सागै आवै-जावै। पण वा ठाह नीं क्यूं डरै?

कदी कोई आई डी सूं मैसेंजर मांय कीं नोटिफिकेशन आवै बीप री आवाज रै साथै। ठाह नीं पड़ै कै कांई करत्या करीजै आं मैसेजां रो? जवाब देवणो ठीक या नीं देवणो सावळ? केई बार अेक आई डी सूं बीप री आवाज अर स्माइली आया करै। उणरा प्रोफाइल पर निजर न्हाखी ही अेक दिन। आछो लाग्यो। पछै केई बार उणरी वॉल पर फेरो दे आवती। मन ई मन सराह करती। उण दिन ई कीं चमक्यो... जोयो... मैसेंजर में आज फेर उणीज तरीकै री स्माइल आळी ईमोजी हाजिर ही अर धकले मैसेज में ''क्या हो रहा है क्वीन?'' पढतां ई काळजो धड़क उठ्यो।

कांई करै? जवाब देवै या नीं? ना-ना डर लागै। ठाह नीं कुण है? जाण न पिछाण। कियां जबाब देवै? पैलां ई घणी वार अैड़ा मैसेज करत्या है। आज फेरूं। घबरावती लैपटॉप बंद करनै माथै हाथ धरनै धड़क सुणती रैयी सूनी व्है ज्यूं। मन मांय अजब-सी हलचल ही। इण तरै रै बतळावण री आदी कोनी। जबाब दे देवणो चाईजै। कांई फरक पड़ै? वो है जको है। आगो बैठयो खावै थोड़ी है। जबाब नीं देवै तो ई कीं नीं, पण जे पडूत्तर दे देवै तो? कांई होवैला? फालतू बात करसी तो झाड़ देवैली। इयां बरगू कोनी है कै बेजां बात स्हैन करलै। कॉलेज में अजोगी बात सारू कैयां रा लत्ता लियोड़ी है, तो अब क्यांरो डर? इण आई.डी. सूं कित्ती वेळा उणनै बतळाय ली है, पण वा डरती पडूत्तर ईज नीं देवै। दूजा आदमी सूं बात करणो ठीक कोनी, पण औ मैनर्स कोनी है कै कोई बतळावै अर सांमलो उणरो रिप्लाई ईज नीं देवै। सोसल साइट रा कीं नेम कायदा व्है। फेसबुक पर हाजिर हो तो लोग बतळावैला ईज। इणमें कांई बेजां बात है? अखबार मांय इण भांत रा लेख पढ्या करै। इणरो उपयोग करणो है तो पडूत्तर तो देवणो ईज पड़ैला!

लैपटॉप बंद कर दियो हो, पण मन मांय खळबळी चालू ही।

उणनै डर छोड देवणो चाईजै। अेक दिन डर नै माडाणी धक्को दे दियो अर... पछै पडूत्तर ई दे दियो।

खुश ही इण सूं... चोखो-सो लागै है। चोखा-भूंडा री कसौटी सूं न्यारी बस ठंड मैसूस कर रैयी है जद सूं उणरी बातां रो जवाब देवण लागी। कदै सोचै कै उणसूं बात करणो जिनगाणी री जरूरी घटना है? संजोग है या भगवान री सोची-समझी कुदरत है। किण रूप मांय लेवै इण घटना नै? छव महीना व्हैगा है उणनै खुद रै मांय छानै-ओलै जीवतां नै। अेक बीज अंकुरित होयनै पौध बणनै ऊंचाई बणाय लेवै इतरा दिनां मांय। औ बीज बधतो जावै है उणरै अंतस रै हरख रो रस पीयनै...।

...वा चितारण लागी उणसूं पैली बात। कितरी सभ्यता सूं पेस आयो हो। हर बार क्वीन कैयनै बतळावतो—

क्वीन, गुड मॉर्निंग... क्वीन! हैव अ नाइस डे... क्वीन! स्वीट ड्रीम...।

वा साच्याणी खुद नै क्वीन समझण लागी ही। वो कैवतो कै उणरो कॉम्प्लैक्शन अर नाक-ठोडी रो तीखापण यूनानी महाराणी एमिल रोजी सूं मिळै। बिना मेकअप री फोटू में उण यूनानी क्वीन री याद आवै। इण कारण वो क्वीन कैवै।

वो उणरी अेक तस्वीर सेंड करी जिणमें क्रीम रंग री मोतियां जड़ी साड़ी रो पल्लो जमीं पर अळघा तांई पसर्‌यो है अर वा हिचकी पर हाथ धरणै री मगन मुद्रा मांय बैठी अर अेक हाथ सूं गळै रो पेंडेट टमटोळ रैयी ही। वो कैयो आ उणरी सगळां सूं फूटरी अर सहज तस्वीर है जिणरी मुद्रा उणनै अपील करै। मोबाइल में सेव कर ली है अर खास बात कै उण फोटू रो वॉल पेपर बणा लियो है।

...कीं पैलां री आ फोटू उणरी एनीवर्सरी पर खिंची ही।

इण बात सूं अपणै आपनै खास समझण लागी।

उण दिन गूगल पर केई ताळ क्वीन री फोटो देखती रैयी ही। मनोमन उण जैड़ी ई लागी खुद नै। इयां भी उणनै घणै मेकअप री लीपापोती दाय कोनी, इण कारण घणकरी फोटू मांय वा बगर लिपिस्टिक है। उणरी निजर सूं वा सादै रूप सूं ई घणी फूटरी है कै निजरां थम जावै। नीं चावतां थकां ई आरसी मांय जोवै तो एमिल रोजी अर उण फेसबुक दोस्त री याद आवण लागै। अपणै आपनै उणरी निजर सूं जोवै अर मुदित होवै।

यूं वो उमर रा पांच पांवडा लारै हो। खुद सूं नैनो इंसान उणनै हमेस छोटू निजर आवतो, पण उणमें छोटू आळी बात याद ई नीं आई। ठाह ई नीं पड़्यो अर वो फासलो खतम होयग्यो। उणरै ऊंचा विचारां मांय छोटूपणौ गमग्यो हो अर वा छोटी दांई चंचल होवती गई। दो-चार बार री बात-बंतळ सूं वो उणनै साव बरोबरी रो लागण लाग्यो। कीं दिनां पछै बडो अर थोड़-सा दिनां पछै वो बौत बडो अर वा साव छोटू होवती जावै ही। केई बरसां रै तळै दब्यो उणरो बालपणो, उणरै गम्योड़ै भोळपणै नै साम्हीं उभार रैयो हो। उमर री परतां हेठै उणरी डाळियां अर पुसप कुमळीज्या अवस हा, पण सूखनै मर्‌या नीं हा।

आपरी जिंदगी मांय खुस ही, पण इण फ्रेंड रो साथ उणनै अनोखो सुख देवतो। बिना लाग–लपेट उण साम्हीं है ज्यूं प्रस्तुत व्है जावती। कदै बचकानी बात, तो कदैई समझणी। हर बात साव मौलिक अर नवै रंग सूं सरोबार। खुद रो औ रूप जोयनै वा हैरान व्है जावती। अै बातां ठाह नीं उणरै मांय कठै लुकी रैयगी ही। इण सूं असल जिनगाणी औरूं हरी व्हैती गई। उणसूं बात करतां, रीसातां, मनातां, मान–मनौवल करतां वै पुसप पाछा पांगरता सौरम बिखेरण लागा। उणी सौरम मांय डूबती जावै ही। केई–केई बातां होवती। गाल रै डिंपल सूं सरू व्हियोड़ी बात भाखर तांई पूगती अर आकास सूं छिड़ी बात उणरै बरौनियां रै कटाव तांई पूग जावती अर वा सगळी बातां रो जबाब देवती।

''सुनो! तुम्हारे गाल के डिंपल जाने कौनसी दुनिया में ले जाते हैं। अेक बार सामने आओ ना, उस दुनिया की सैर करनी है...''

''डिंपल में ठाह नीं कित्ता भंवर है... भटक जावोला... साम्हीं सूं नीं, फगत खयालां मांय ई उण दुनिया नै मैसूस करो...''

पडू़त्तर मिलतां ई मूंडो लटकायोड़ी ईमोजी री भरमार। आं इमोजी सूं कीं टूट जावतो मन मांय। वा खुद चावती कै उणनै वीडियो कॉल सूं सजीव अर असली रूप में देखै, पण जीव नै इतरी इजाजत नीं देवती। चाबुक सूं जीव री उडाण नै थामनै राखती। ऊंडै अेक खलिस–सी मची रैवती—सही–गलत रै घांण–मथाण री।

पण कीं–कीं हसरतां आपरो माथो ऊंचो करती। पगां हेठै मसळ न्हाखती पण... पाछी पांगरती जावती।

वो पढाई भी करतो अर फोटोग्राफी भी। उण रा लिया फोटोग्राफ री वा दीवानी ही। केई दीवाना होवैला, पण दीवानां री लिस्ट मांय वा खास ही उणरी। आ बात उण खातर सुखदेयी ही। चोखा फोटू सारू दुनिया भर मांय भटकतो रैवतो। केई फोटू मैगजीन मांय छपती, इनाम मिलता। नेशनल ज्योग्राफी वाळा उणरा बणाया शॉर्ट वीडियो डॉक्यूमेंटरी में सामल करता। गांव, गळी, महल , खंडहर, पाणी, आकास, लुगाई, आदमी, घास री जड़ अर पुसप रो पुंकेसर, किरचां रो खूणो या रूंख री फोटू—हर बात में उणरी बात निरवाळी ही। सूखै सूं पांगरती कूंपळ अर पाणी मांय लील री छिब उणरी फेवरेट ही। अक्सर इण पर काम करतो। जंगळ–घाटी भटकतो। ऑब्जैक्ट रो एंगल यूं दरसावतो कै फोटू रा रंग विसय मुजब ढळ जावता। गमगीन फोटू में चटक रंग आंसू बहावता अर हंसी री ब्लैक एंड व्हाइट फोटू ई रंगां सूं सरोबार लागती। फोटू अर पेंटिग रो नयो थीम उण आपरी फ्रेंड सागै बणाई अर प्रदर्शनी लगाई, जिणरी घणी सरावणा होयी। वो सगळो कलैक्शन उणनै समर्पित कर्‌यो अर उणरो ईज नांव दियो—'दीपमाला'।

मनोमन गुमेज सूं भरी रैवती।

जद बात करणी होवती, रात ई मैसेज छोड देवतो—

''सुनो! फ्री होते ही ऑनलाईन आना ना। दिन की बातें बतानी हैं।''

वा मूंढो बायां सुणती रैवती। केई हुनर रो धणी... बूरयोड़ो मतीरो। पण उण आप में तो कोई खासियत ई कोनी। फगत घरधिराणी ही बस। मायूस व्है जावती। व्यक्तित्व में अैड़ौ कीं नीं हो जिण कारण खुद पर गुमेज होवै। कदै सोचती कै इतरो प्रतिभावान जवान उण साधारण साम्हीं कियां खांचीज्यो? केई बार सोचती कै उणनै पूछै, पण हीमत नीं पड़ती। नाराज नीं हो जावै। वा गमावणो नीं चावै उणनै। उणसूं उणरै मन मांय अेक चावना जागी है। जकी उणनै लुभावै। इण चावना रै ओळै दोळै मन घूमर करै।

अेक दिन हीमत करनै वा खुद री हीण भावना जाहिर कर ही दी।

गळगळो होवतो वो फुसफुसाय पड़्यो—

''नैवर थिंक इन सच ए वे। यू आर क्लोज टू माय हार्ट। योर फेस इज नॉट ओनली फोटोजेनिक बट ऑलसो लाइफ चेंजिंग।''

''... ...''

''...वाय आर यू फीलिंग सो डिप्रैस्ड?''

''हंड्रेड्स ऑफ फ्रेंड्स आर देयर इन योर फ्रेंड-लिस्ट। वाय हैव यू सलैक्टेड ओनली मी?'' काळजै सूं अेक सवाल तिसळ पड़्यो। वा जबाब चावती ही खरो-खरो। कीं सुणणो चावती ही मनमाफिक अर साचो जको उणनै औरूं खुश कर देवै।

''बिकॉज यू आर माय ड्रीम लेडी... माय क्वीन... माय रियल लाइफ क्वीन... तुम्हारी मासूमियत लेकिन राजसी सुंदरता ने मुझसे मुझे छीन लिया है। खासकर गालों के डिंपल पर... मेरा दिल अटक गया है...'' चैट सागै दिल रै निसाण आळा अनाप गुब्बारा उडता रैया अर वा ई उडती गई उण सागै।

सगळी बातां सोचतां थकां ई कदै-कदैई होवण आळी चैट चावतां नीं चावतां रोज री बातां मांय बदळगी ही। ठाह नीं कद बातां री, व्यक्तित्व री चुंबक आपरो काम करती गई। उणसूं बात नीं हुयां वा रीती-सी रैवती। कुल जमा छव महीनां मांय रोज चैट अर बात होवण लागी। हजारूं मैसेज रो लेण-देण चालतो। उणरै वजूद पर बादळ बणनै छायग्यो हो। बालपणै रै सागै ई कांई ठाह किण नाजुक उमर री कसक अर बेचैनी मन मांय पाछी जगां बणावण लागी ही।

उणनै कैयी आ बात।

पडूत्तर आयो -वौ खुद बेचैन है।

सुणनै जीव रै ऊंडै कीं ठाड पसरी। धुकधुकी समान हुयगी। अेक जातरा में दो जातरू। उमर रै इण छैड़ै आयनै जको फूटरो कोण बण्यो हो उणरी एक-एक भुजा वै दोनूं है। औ कोण, अै रेखावां नैतिकता मांय कठैई फिट नीं ही, पण आ जूण चोखै सै नीसरती जाय रैयी ही। हजार ना-नुकर अर घाण-मथाण रै पछै ई औ चालतो जाय रैयो हो।

वा वीडियो चैट सारू कदैई नीं मानी । जीवंत भावां नै फगत वीडियो कॉल सूं नीं पूगावणी चावै। इत्ता महीनां रा भाव इयां बेजान हिलती-डुलती तस्वीर में नीं संजोय सकै। सांगोपांग अर रूबरू देखणी चावै। केई बार थोरा करत्यां पछै अेक दिन घरै ईज आवण री हामळ भरी।

उणरो इसरार हो कै क्रीम रंग री उणीज साड़ी मांय देखणी चावै जिण आळी फोटू री मुख मुद्रा अर एक हाथ गाल अर दूजो चैन रै लॉकेट नै टमटोळता सूनी दिस में मगन जोवण आळी अदा देखनै उणनै यूनानी राणी री याद आई ही।

आपरै नैनै भाई सागै वो आवण आळो हो। जिण दिन आवणो तै होयो उण दिन सूं ईज जीव हथाळी मांय आयग्यो। मन री गति हजार गुणा बत्ती चालती रैयी। क्रीम साड़ी पैरनै निरखी खुद नै पण जियां ई उणरै आवण री टेम नैड़ी आई, वा साड़ी री जग्यां झटपट केसरिया सूट-सलवार पैर लियो। आकास पगां में हो अर वा हवा में। वो आयो अर कांई ठाह कद कांई बात होई। उणनै याद नीं। बेखुद-सी बेसुध-सी रैयी वा। आवतां ई हाथ जोड़नै नमस्कार करत्या पण निजरां जमीं नै जोवती रैयी। सागै नै पागै वा ईज प्रोफाइल फोटू आळो मासूम उणियारो।

अेकर उडती निजर मांय साड़ी सारू ओळबा भरत्यो सवाल हो, पण पछै सराही निजर री मुळक। लजीलो-संकाळू-सो बैठो रैयो। आंख भरनै साम्हीं नीं जोयो। रोहित अर मांजी सूं बात करतो रैयो अर वा उणरै भाई सूं। उणसूं फगत दोय-चार सहज बातां व्ही वा ही अठी-उठी निजरां लुकोवतां। मैसेज आळी बेकली साम्हीं नीं लखायी। केई बार मन मांय संका-सी होयी कै औ वो ईज है जको फोन पर ऊंडी-गैरी बातां करत्या करै?

जावती बगत विलखौ अर निजरां झुकायां माफी-सी मांगतो मुड़ग्यो। काळजो धड़क गियो। अैड़ौ क्यूं?

वा सोच मांय डूबी रैयी। ना-ना यूं तो नीं होणो हो। केई बातां करणी ही, कीं कैवणो हो अर उणरो सांप्रत असर देखणो हो। खुद रो रंग उणरी आंख्यां मांय देखणो हो, पण फेर ई निजर नीं मिलावण आळी मासूम अदा ऊंडै उतरगी ही। मन कैयो, औ चोखो होयो। अेक चोखै इंसान आळा गुण है अर सही-गलत री पारख तो है नीं! इण नैनी-सी बात सूं उणरो हियो उण पर औरूं रीझग्यो।

वै झुकी निजरां उणनै बेचैन करती रैयी ही केई दिन अर केई दिन बात ई नीं करी। जाणै कठैई गमग्यो हो या स्यात सांप्रत देखनै निरास हुयो होवै। या कोई दूजी बात? किणनै बूझै? ना ऑनलाईन दिख्यो अर ना कोई बात रो जबाब। आठूं पौर जीव उण मांय पजियो रैवतो। लाग्यो कै जिंदगी वास्तै वो इतरो जरूरी होयग्यो है कै दिन भर री हर घड़ी मन मांय बस उणरो जिक्र चालै। मानस उणरी सोच रै सिवाय कीं सोचै ईज नीं। केई बातां

इण बात सूं प्रभावित हूवण लागगी ही। टाबरां पर रीसां बळणो, काम में खोटाई, केई जेज विचारां मांय गम जावणो, अणमणोपण...

मोकळा दिनां पछै रिपलाय आयो तो पूरी खबर ली ही। वा आपरी हालत बताई ही अर वो मधरी मुळक री स्माईल भेजतो रैयो हो। लाख पूछ्यां पछै बतायो कै वो उण दिन सूं सोराई मैसूस नीं कर रैयो हो। पढाई मांय जीव नीं लागै। जीव औरूं खिंचतो जा रैयो है। सही-गलत री हजार बातां उणनै बेचैन करती रैयी। संग-साथ, सामीप्य री लालसा उणां रै बिच्चै नीं रैवणी चाईजै। अेक सीमा पछै जको गलत है वो गलत ईज है। अै बातां फगत बात तांई रैवै तो ईज ठीक है। जिनगाणी पर घणो असर पड़णो चोखो संकेत कोनी।

वा हूं... हां... सही... कैवती चुप रैयगी।

साच ईज तो कैवै है।

''मेरा मन मेरा है लेकिन मेरी जिंदगी मेरे अकेले की नहीं है! मां अब नौकरी पर जोर देने लगी है। पढ़ाई पूरी करते ही शादी कराना चाहती है...''

...पछै केई ताळ बिना बोल्यां फगत सांसां रै उतार-चढाव सूं बात होवती रैयी। पछै सिरफ मौन कॉल होवण लाग्या। हैलो कैयनै अेक सांयती री आवाजाही, सांसां री बात अर मून...। बस मानस में मौजूदगी ई घणी ही। मनोमन ई तय होयग्यो हो कै अब केई दिन बात ईज नीं करणी जद तांई सो-कीं पाछो पैलां जैड़ो नीं व्है जावै।

उणी दिनां सासरै मांय अेक ब्यांव रो अेढो पड़्यो। उणसूं अळगा होवण रो अेक चोखो कारण लाध्यो। उणनै बिसरायनै कीं सोराई सूं जीय सकैला। उणसूं मिल्यां पैलां जूण सावळसर चालती ही अर उणरै गियां पछै उण बिना भी सावळ चालती रैवैला। औ तै करणी चावै। इण बात पर खुद री मुहर चावै। ...आप आपरै पलायन री दिसावां खुद तै करी, पण अंतस री लाय कम नीं व्ही—ना विचार सूं, ना खयाल सूं, ना मन री बयानी सूं। मानस मांय ऊगतै बीज नै निजरअंदाज तो करयो, पण उणरो अस्तित्व खतम नीं व्हियो। फेसबुक नीं खोलणै रो निरणै, बात नीं करणै रो निरणै, चैट बॉक्स नीं देखणै रै निरणै पर अडिग रैवणो अजै तांई रो सगळां सूं दोरो काम होयो। हजार हां अर ना, सही अर खोटो, अबै अर पछै, नैतिक अर अनैतिक रै बिचै पजियो औ जीव अणूतो बेकल अर लगाम सूं कसियोड़ो, बसबसीजतो रैयो, तड़पा तोड़तो रैयो, पण अेक साझी बात रो कवल, वादा रो ताळो सगळी सोचां माथै पड़्यो अडिग रैयो।

उणनै बिसारण रो लाख जतन करतो जीव उणरै जीव री हालत देखण सारू बेकल होवतो रैयो। वो कांई सोचै इयां दिनां? कांई अेकसो हवाल है?

अेक दिन मन री जीत होयी अर मैसेंजर पर उणरै नांव रा तीन नोटिफिकेशन देख्या तो मन सोरो ई होयो अर दोरो ई होयो।

क्लिक करयो...

सोचता हूं कहीं चला जाऊं तुम्हारे खयालों से दूर...

फोटोग्राफी के लिए लद्दाख जा रहा हूं...

पहुंच गया हूं...

सॉरी किसी बेखयाली में मैसेज कर दिये... माफ करना ।

हर दस-पांच दिनां रै आंतरै सूं अै मैसेज चमक रैया हा। बेखयाली रा अै मैसेज जीव रै माथै होड़ो आयोड़ा नै कीं हळको कर्‌यो।

उणरी यादां मांय अजै म्हैं हूं! औ सोचनै जीव सोरो होयो। केई दिनां सूं काळी कांठळ गरजती अमूंझावती रैयी ही, पण अै मैसेज बिरखा पछै रै तावड़ै दांई अंतस मांय खिलग्या। जे कोई मैसेज नीं लाधतो तो खुद री सारथकता माथै सवाल उठ जावतो कै इतरा दिनां रो साथ अर बात कीं असर ई नीं छोड्यो! औ कैड़ो प्रेम! ...पण नीं, उणरो मनचायो हुयो है।

वा सोचण लागी के कांई फ्रायड नर अर नारी रै मन री इण परतां तांई पूग्या होयसी? अेक राजी-खुसी मन कोई आभासी जीवण मांय कियां बैवतो जावै? सावळ है कै कावळ? मन री मति सावळ कैवै, पण विवेक चाबुक रा सटाका पाड़ै...

घर में ब्यांव रै टाणै मांय वा रोहित सागै कितरी नाची ही। जीव भरनै लावा लिया हा। खूब सज-संवरनै मनोमन कोई सूं बंतळ करती रैयी ही। केई सैल्फियां ली ही कोई नै याद कर-करनै। मांय-बारै दोय रूपां मांय जीवतो उणरो रूप दूणो खिलग्यो हो। अणदां-नणदां उणरै फुटरापै सूं ईसको पाळ बैठी। वै घर-गिरस्थी रै चमचा-कड़ालिया अर नैपी-पोतड़ियां मांय दबी साव मगसो जीवण जीय रैयी ही। उणनै खिलखिलावतां देखनै अचंभो करती। ऊंडै अंतस सूं आवती उण सौरम री पारख कोई नीं कर सक्यो। रोहित मुगध होया रैवता।

नवै ब्यांवलै कपल रै हनीमून पर निकळतां ई वै ई अेक टूर प्लान कर्‌यो। रोहित री केई सालां सूं तमन्ना ही लद्दाख देखण री। मौको मिलतां ई लद्दाख नाम सुझायो, पण वा पल भर मांय ना करनै उणरी मंसा पर पाणी फेर दियो।

''टाबरां साथै कोई लद्दाख जाया करै है कांई? साथी-भायला सागै जावै उठै या पछै कोई अेकलो जीव जावै... अेकलापण मांय दुकेलापण नै जीवण नै... कोई सूं अळगा हुवण नै... ?''

मन मांय इयां कैवतां थकां वा मूंढो दूजी कानी कर लियो अर अपूठी होयगी रोहित सूं। कोई दूजा उणियारा री झांई आयगी ही उणरै उणियारै। वा साफ जोयो कै रोहित हैरानी सूं उण कानी जोवता रैयग्या।

लद्दाख जैड़ी मनचायी जगै रो कैंसल कियां कर दियो? क्यूं? वा तो खुद लद्दाख रै नांव सूं बोत एक्साईटेड होय जाया करती। बचपन सूं लद्दाख री लाग ही, पण जाईजियो

कोनी अर अब जद सो-कीं सावळ है तो जाणी नीं चावै। लुगायां रा मन कमाल रा व्है! समझणो अबखो है।

लद्दाख नीं सही, पण हिमाळा रै बीचै इण छोर माथै बस्यै डलहौजी में आयनै कीं चैन मिल्यो। रोहित अर टाबरां रै सागै सूं खासो-कीं बदळग्यो। दिनभर घूमघाम नै सगळा थाकनै चूर होया होटल आय पड़ता। पलंग पर पड़तां ई नींद घेर लेवती, पण उणरो मन उणसूं निकळनै ठाह नीं कठै-कठै घूम आवतो। लद्दाख री घाटियां उणरै मन मांय गूंजती रैवती। केई वार बेकली हावी होय जावती तो वा रात नै उठ बैठती। अठी-उठी अंधारै मांय घाटियां नै घूरती ठाह नीं कांई सोधती।

अब मोबाइल में ई फेसबुक अेप डाउनलोड कर लियो है, पण इंस्टॉल करणै सूं लारै सिरकै। परीक्षा लेवै खुद री।

खुद सूं लड़तां-भिड़तां केई दिन निकळग्या। सही-गलत, चोखो-माड़ो, सोभित-असोभित रै बिचै नैनीक वा इंछा फुदकती रैवती जाणै तेज तावड़ै अर खुलै आकास मांय अेक बादळी। मनड़ो डावै कानी सूं नीसरनै केई खयालां रै नाटक मांय अभिनय करनै जीय आवतो जको नाटक दुनियावी बंधै सूं साव न्यारो... उण बंध में ना कीं चाईजै... ना कीं देणो अर ना कीं लेणो, पण जकौ अणचायां ई अेक नैनी सी खुसी हथाळी मांय धर दै।

मन रै ठेठ ऊंडै अेक क्यारी मांय पुसप पांगरग्या अर अब मन-दुनिया में सौरम बिखेरै है। अेक संग केई तरै री मधरी बिना नाम री खुशियां देवै है। जीवण री कमताई सूं नीं जीवण री पूरणता पछै औ भाव विगस्यो है। वो उणरी हर बात सुणै, सरावै। केई मान-उपमान सूं परे अेक संग लगोलग हेलो देवै है। कीं बातां जीवण रै बाग मांय फुहार बरसावै है।

जीवण री हजार चीजां ईश्वर देवै, कीं मात-पिता अर परिवार, पछै पति अर संतान...। इण लांबी-चवड़ी दुनिया मांय सूं अेक चीज म्हैं म्हनै खुद ईज देय दूं तो... ?

मोबाइल में मैसेंजर खोलनै उणरी चैट जोयी तो... केई-केई दिनां रै आंतरै सूं अै मैसेज चमक रैया हा—

कैसी हो क्वीन... ?

क्वीन! आपको लद्दाख के फोटो दिखाने हैं...

आपके फोटोजेनिक फेस के नये एंगल ईजाद करना चाहता हूं...

❖❖

बरंगो तावड़ो

वा उकतायगी ही—बिना कारण भीड़ में यूं अेकली ऊभी। अेकलो ऊभो रैवण रो कोई खास कारण होया करै। उण कारण सूं ऊभणियै री भाव-भंगिमा देखण आळै नै अपरोगी नीं लागै। पण उणरो ऊभणो कीं अपरोगो लाग सकै, क्यूंकै अैड़ो भाव उणरै उणियारै आ ईज नीं रैयो है। वा तो फगत अठीनै-बठीनै बेकाम, बिना कारण उण दुकानां रा उणियारां माथै आपरी उडती निजरां रा अेंकर न्हाखै अर खांचै। हाथ आवै बोरियत रो अेक बोदो टुकड़ो।

हरेक दुकान रै बारलै छेड़ै टंगी चीजां नै यूं तो केई बार अर आज फेर केई अेंगल सूं दसूं बार जोयनै बोर होयगी ही। औ सोधणो बिना काम ईज हो, क्यूंकै कोई कारण नीं हो अठै ऊभो रैवण रो पण जोरांमरजी ऊभनै खुद नै कोई काम मांय लगावणो जरूरी हो जिण सूं दूजां नै लागै कै कोई जरूरी काम सूं अठै मझ बाजार मांय ऊभी है। बिना कारण यूं अठै कोई ऊभ्या करै है कांई ? इयां भली लुगाई रो ऊभणो कैड़ो लागै ? केई विचार इण बाबत आवै अर जावै। वा उणां विचारां नै पकड़णी नीं चावै। सोचण नै कीं ई सोच्यो जाय सकै। चोखो अर भूंडो। सोच नै छूटी छोड दी बिना डोर री पतंग दांई...

...पण दुकानां नै अजै ई लगोलग देखती जावै। सोचो भलांई कीं, पण निजरां देखै वो ईज निजारो, वो ईज सामान, वै ईज चीजां, वै ईज उणियारा, वो ईज दुकानां रो खाको जको इत्ती बार देख्यो जा चुक्यो कै उण माथै निजरां ई घसीजनै जूनी होयगी। ....अर निजारो जूनै-पुराणै फ्रेम दांई मगसो अर साव मंदो। सगळै दुकानदारां रा अेकसा उणियारा। ठाण सूं लैणसर बंध्या जिनावर लागै अर कदैई जीवण रै संचा सूं काढ्योड़ा अेक सरीखा रमेकड़ा।

यूं तो दुकानआळा ठाला ऊभा ग्राहकां नै अडीकता रैवै, पण थळी आया ग्राहक नै देखतां ई यूं अभिनय करण लागै, जाणै पैलड़ो ग्राहक आयो, वो जको पातरणो-बिखेरा करायग्यो है उण चीजां नै सांवटै है। दुकान में खूब बिक्री होवै, नवै ग्राहक में औ भरम पैदा करै। आयोड़ो ग्राहक उणनै ठालो नीं समझलै, इण कारण घणकरा दुकानदारां नै औ

बरंगो : *चांदा अर कणी सूं त्यार होया जाळ मांय लकड़ा रा कीं और पतळा गर्डर ऊभा राखीजै इण सूं जाळ सांघणो व्है जावै जिण मांय सिणीया अर मुरड़-गारो भरनै छात नै मजबूत बणाईजै।*

नाटक करणो पड़ै। अेकर नवै ग्राहक नै देखतां ई उछाह टपकै, पण चीज नै नीं खरीदण रो उणरो लुक देखनै अेकदम मायूस होता जावै। अक्खड़-सो सामान पाछो फिरोलण लागै। मन मांय उण खातर हजार कुणमुणाट उमटै जकी नीं चावतां थकां ग्राहक नै जावण रो इसारो कर ई देवै। ग्राहक जका भगवान है इण टेम औ सोचै कै दुकान आळै में चीज बेचणै रा गट्स कोनी। इण कारण दूजी चीज री मांग करै ई कोनी अर बारै नीसरतो निजर आवै। दुकान आळो जावता ग्राहक रै मौरां पर तीखी निजर रा बाण छोडै, पण उणसूं होवै कांई?

औ बाजार ई कांई पूरी दुनिया रो बाजार ई ग्राहकां नै अडीकै, लालच देवै पण मार्केट रो ग्राफ तो हेठै आयां ईज जावै ढबै ई कोनी। जरूरतां घणी है, पण ग्राहक जाणै बजारां सूं रूसग्यो होवै। बजारां में, मॉल में भीड़ पड़ै, पण फेर ई मुनाफो कोनी। हर धंधो घाटै मांय ईज जावै। घर अर बाजार कांई ठाह किण खंभै पर टिक्या ऊभा है? च्यारूंमेर मंदी री हाय-हाय मची है, पण लोगां कनै अणूतो पईसो वापरियो है। सिटी मांय तो दुकानां रै इंटीरियर सारू करोड़ां रुपिया घालै पण ग्राहक उण सूं मोहित नीं होवै। आदमी पइसो खरच करणी चावै, बढिया सूं बढिया चीज खरीदणी चावै, पण बाजार सूं का तो निरास बावड़ै अर का जको ठगीजनै आवै। उणनै अब भरोसो है कै जकी दुकान जितरी चोखी है वौ उत्तो ई प्रेम सूं उणरी जेब खाली कर न्हाखैला। मीठी छुरी दांई। चीज भलांई फूटरी होवै, पण ठगीजण रो खटको जावै ई नीं अर बजार सूं भरोसो उठतो जावै। ग्राहक कांई ठाह किसो अलौकिक तत्त्व बजार मांय सोधै है, ठाह नीं। पण बाजार बिना सरै ई कियां? घरै तो कोई सी चीज नीं निपजै। कोई दूजी दुकान जोवै, पछै तीजी... हर बार दुकान सोधतौ, ठगीजतो जावै। बाजार, ग्राहक रो भरोसो खोस लियो, पण अब बाजार ई खाली अर ग्राहक ही खाली।

तीसेक साल पैला नैनकी दुकान पर ऊभा खरीददार 'मिनख' नाम सूं अपणायत आळो दरजो पावतो, पण अब सुंदरता अर भरोसाहीण चासणी जैड़ी एयर इंडिया मुस्कान 'ग्राहक' नै झांसो देवण री खैचळ मांय ईज कूटनीति चालां चालता रैवै, मीटिंगां करै, नित नवा जाळ री रचना करै। जाळ में बाजार खुद भी तो फंसै ईज है... आखी दुनिया री चिंता दुकानदार रै उणियारै चिप जावै। तेज बाजतै डीजे सूं वौ खुद सूं बारै आवै। समष्टि सूं व्यष्टि पर आवतो माल पर बैठी रंजी नै कपड़ै सूं झाड़ण लागै।

...बोरियत री अेक लहर पाछी आई अर उणनै उठा सूं व्हीर कर दी। 'अर्बुदा' सूं चालनै पार्किंग रै नाकै पर बण्यै माताजी रै मिंदर नै हाथ जोड़ती धकै सांचरी। कोटी, ऊनी टोपी, हैंडीक्राफ्ट, फैंसी री दुकान रै कनै सूं झील आळै रस्तै चाली। जीमणै कानी मोटी भींत रै स्यारै लैणसर गंदगी अट्योड़ी ही, जिण लारै 'स्वच्छ भारत अभियान' फगत आधो दिख रैयो हो, बाकी सगळा स्लोगन लांबी अकूरड़ी लारै छिपग्या हा। जीमणै कनली हर

दुकान आळो आपरी दुकान सूं सामान लेवण रो इसरात करतो 'कांई लेणो है सा!' रो जाळ बगावतो। जेबां मांय हाथ घालनै आपरी दुकान री थळी ऊभा उठा सूं निकळतै हरेक टूरिस्ट रै कानां तांई औ स्लोगन पूगायां बिना नीं रैवै। हर दुकान सूं अै स्वर लहरियां आवती रैयी अर वा चालती रैयी । इत्ता बरसां सूं उणनै आदत है इण बाजार री अर दुकानआळां री इण टेव-टेर री। वा सुण्यो अणसुण्यो करती धकै बधती गई। पण इण दुकाना री मांयली रचना याद हुयगी है, रटीजगी है। आं दुकान मांयली चीजां रौ क्रम उणरै रट्योड़ो है। बिना देख्यां बता सकै कै कठीनै नैल पॉलिस पड़ी है अर कठीनै सफेद चूड़ो। कठै हैट पड़ी है अर कठै मोजा। कठै रामकां री बंदूक पड़ी है अर कठै रमेकड़ा री कार। कठै कसीदा आळी फराक टंगी है अर कठै सलवार कुरतो।

...ढाळ चढनै ऊपर झील कानी जावतो रस्तो ढाळ उतरनै खाडै मांय पड़तो अदीठ होय जावै। पण वौ रस्तो खाडा मांय नीं पड़ै। वा सांपड़तै उण पर चालती झील सूं जस्ट पैलां आळै बाजार पूगी। ऊभगी अेक जग्यां देखनै। ऊभणौ ईज हो। दूजो काम है तो कोनी। चीजां नै देखनै उणसूं जोरांमरजी बंतळ करता बोर होवण रै इतर और कीं काम कोनी।

...औ अेक आम बाजार जैड़ो सीन भी है। कपड़ा री, जूतां री, रमेकड़ां री , खाणा-पीण री, रेस्टोरेंट, मैगी-आमलेट रा ठेला, पर्स-बैग री दुकानां हर जगयां लाधै, पण औ हिल स्टेशन राजस्थान रो माउंट आबू है, तो बाजार मांय कीं ओर दुकानां जुड़ जावै। क्रोशिया री फराकां री, बंदूक-गन री, टैटू री, केई लारियां चूड़ी-कचकोळी री, सस्ता-महंगा रमेकड़ा, बोर-अनार दाणा, मैंदी रा छापा ,बंधेज रै दुपट्टा-साड़ियां री, जूती-मोजरी री, चाय री थड़ी, पाईनएपल-आंबां री फांक री , बोर-कैरूंदां री छाबां, लस्सी-जळजीरा री मटकियां, रबड़ी री गुल्फी, चावल दाणा पर नाम लिखण वाळो, चाबी-छल्ला अर नेमप्लेट बणावण वाळां री आद-आद। मैकडोलन सूं लेयनै पीजा हट री सीरिज अठै लाध जावै। खाली पड़्यो सीसीडी भी है, बॉलीवुड थीम बेस्ड रेस्टोरेंट भी। 'ओढणा' रो बडो शो रूम है तो ऊंधा पींपा पर झांबू, रानी मेवा अर रायणा री छाब लियां बैठी गमेतणियां भी। 'अर्बुदा भोजनालय' है तो कुईयाराम रो चना जोर गरम रो गळा मांय घाल्यो रास सूं बंध्योड़ो ओडो भी है। इंग्लैंड रिटर्न निशांत अर प्रेमिका (लवमैरिज) रो 'कैफे शिकीबो इंग्लिश' कॉफी हाउस भी है तो हैवमोर रो खाली पड़्यो नाना भांत री आइसक्रीम री चमचमाट करती दुकान भी। शिकीबो में कॉफी रै सागै उठा सूं किताबां लेय पढणै अर घंटां गप-चर्चा वाळो इंग्लिश ट्रेंड भी है अर उणरी घरवाळी री सलवार सूट-कुरतां री डिस्प्ले दुकान भी है। पंजाबी ढाबा है तो छुकनी री अमरीकन मकिया उबाळती हांडी भी, मारवाड़ी भोजनालय रो हद चमकीलो बोर्ड है तो कुर्सी-टेबल ढाळ्यां 'कस्तूरा हेयर सलून' रो पैन सूं लिखनै लटकायो ठप्पो ई पूरी जीजीविसा सूं ऊभो है।

मनीस भाई अर अनवर चाचा री किराये पर बाईक-स्कूटर देवण वाळी 'बास बाइक्स' भी है अर टाबरां री रमेकड़ा वाळी कारां किराये देवण री दुकान भी। पचास लाख री गाडी जिण फर्राटे सूं नीसरै उठै ई फैंसी देवासण री हाथलॉरी भी...

हाथलॉरी नैना-मोटा री दोय सीट वाळी गाडी सी होवै अर धक्को देयनै चलाईजै। घणकरा नैना टाबर उणमें बैठनै राजी होवै। टाबर नै हाथलॉरी में बैठायनै टाबर री मां जद मोबाइल सूं फोटो-वीडिया बणावती सागै चालती रीझती जावै, बळिहारी जावै तद फैंसी आपरै टाबरां नै रोटी री तिरसणा में चिंताबासी लॉरी नै धकेलती जावै। फैंसी सोचै कै हाथलॉरी में टाबर नीं, उणरी रोटी बैठी है। लॉरीवाळी मजदूरी पर पैला उणरो धणी आया करतो, पण आजकालै वा ईज आया करै। धणी ओबाराम नै ग्राहक आपरा टाबर देंवता दोरा होवै । साढी छव फुट रा आदमी रै हाथां में लॉरी ऊंट रै मूंडा मांय जीरो लागै अर डील-डौळ सूं वौ लुटेरो लागै । टाबर चिमक जावै अर लुगायां घोरका करती जोवै। अर उणनै खुदरा टाबर ई सांभणा को आवै नीं तो दूजां रा टाबरां नै कांई केवटै ?

वौ तो सदा टोरडा-घेटा चारया है। समै री मार रै कारण अठै आय पड़्या, नींतर आपरी ढाणियां मांय राजी-बाजी हा। घेटा रां बाल बेचता, ऊधड़ी खेती करता। परसेवा री मीठी कमाई आदर्स कोपरेटिव बैंक मांय जमा करायनै चैन सूं सूत्या रैया। जाण्यौ कै पइसा भेळा होवतां ई ढाणी मांय दस छींणा रो पक्को कमरो चिणवाय लेयसी। पण अेक दिन बरबाद होयनै ताळै लाग्योड़ै ऑफिस साम्हीं दूजां दांई खून रा आंसू बैवाय रैया हा। ऑफिस पर भाटा ई फेंक्या... पण कांई होवणो हो ? उण जैड़ा हजारूं बरबाद होया। उणरी अेकला री कुण सुणतो ? केई दिन आपरी बरबादी नै रोया-धोया अर रोटी रै फेर में पड़्या अठै आय पूगा। वौ टोरडा-घेटा नै सांभतो अब मिनखां नै कियां सांभै ? टोरडा अेक टिचकारी सूं समझै। अेक बुचकार रो दोगुणो असर होवै। घेटा सैकड़ूं अेकै सागै रैवै, पण आपरी सींव नीं डाकै। अठै वौ मानखै बिचाळै डरपै। कांकड़ मांय अैवड़ सागै केई मील नाप आवतो, पण माउंट आबू रै मेन बाजार मांय ऊभतां उणरो काळजो धूजै। अैवड़ री सौ जोड़ी आंख्यां नै सांवट लेवतो, पण अठै पचास जोड़ी आंख्यां उणनै डाम चेपती लागै। मरतो-पड़तो सिंझ्या झुग्गी आयनै कीं बिसांयत लेवतो, पण जक नीं पड़ती। कमाई साव ओछी होती। छेवट वा ईज काम पर आवणो चालू करयो अर वौ झूंपड़ी मांय दौरा-सौरा दिन भर टाबर सांभै। रोटी-बाटी सारू आटो होवै तो रोटी बणायनै बाजार आवै, नींतर पाणी पीयनै निसर जावै। टाबरां नै रात री ठाडी बाटी पर मीठो या लूण चोपड़नै वैळावती जीमाय देवै। सिंझ्या रा अदोळी भरयो तेल अर पाव-अधेर आटो ले जावै अर पोय खावै। वा झुग्गी नैड़ै पूगै जणै टाबर समेत वौ ई बेकली सूं अडीकै, जाणै दुनिया मांय अेकलौ है अर उणनै देखण सूं दुनिया मांय पाछो भरोसो वापरै।

...बाजार री अै कहाणियां अर वै निजारा केई बार देख लिया है। आज अणूती बोर होवै। उण रा साबजी अेसडीएम साब है, जिणां रो आबू मांय अक्सर ई दौरो होवै अर वा सागै आय जावै। सुणती आई है कै बोत चोखी जगै है आबू। अठै आयां मिनख नै सांयती मिळै। उणनै अठै आवतां नै केई बरस होया। सांयती किसै खूणै में मिळै? आज तांई सोधै है। ठेठ सूं ई साबजी री पोस्टिंग आबू रै नैड़ी-तैड़ी रैयी। कोई न कोई कारण सूं उणां रो आवणो होवै अर वा ई हर बार अेक नवी भांत सूं बोर होवण खातर सागै चली आवै। सांयती नीं सोधै अब। फगत घर री बोरियत सूं आखती होयनै अठै री बोरियत मांय आय पड़ै। बोरियत री टेव पड़गी है—नसो-सो। इण बिना रैईजै ई नीं अर रैवणी चावै ई नीं। इण बिन ठौड़ नीं... इण बिन और नीं! बोरियत उणरी जिनगाणी रो खास हिस्सो है।

अेकली घरै करै तो कांई करै? किणनै रुखाळै अर किणरो काम करै? साबजी रै तो प्रशासन वाळा हजारूं काम। सांस लेवण नै ई फुरसत नीं। तनाव अर काम—बस अै दो सबद ईज उणां री जबान पर रैवै। और कोई बात नीं। बोर होयगी है सुण सुणनै। दूजो कीं बोलै भी कांई? घर में है कांई जिण पर बात करी जा सकै? सूना भूतखाना सूं कांई बात पैदा होवै? उणरी खुद री दिनचर्या महा बोरिंग है। घरै नौकर-चाकर है। उण सारू करण नै कोई काम नीं। कारीगरी रो कोई भी हुनर नीं। कोई दोस्त-साथण नीं अर कोई आण नीं, कोई जाण नीं। फगत सांसां री पूतळी है। कांई करै? समै नै कियां बितावै? उणरी जिंदगी में घणै सुख अर घणै दुख रै अलावा कीं कोनी। घणै सुख सूं वा धापनै बोर होयगी है। दुख उणरो सास्वत है। उण पर सोचै ई कोनी। अेक कानी साबजी महा बिजी अर बीजै कानी वा महा फालतू। मॉल-दुकानां मांय कित्ती शॉपिंग करै? काठी धापगी है। अर करै भी किण खातर? अैड़ो कुण है जिण खातर हेत सूं कीं खरीदै अर वा लेयनै राजी होवै! इण कारण शॉपिंग सूं औकगी है। उठा री चका-चौंधवाळी दुनिया भांय-भांय करै। जीव रो खालीपणो उठै जायनै खदबद सीजण लागै जद गदबदिया जैड़ा फूटरा टाबर उणां री मांवां री गोद्या मांय दिखै तद उणरी नसां खिंच जावै अर वा अणजाणी रीस मांय बळन लागै। अैड़ी रचनावां देखनै उणरो मगज चळपळाटी मचावै। कीं-न-कीं करण नै बेताब होवण लागै। इण कारण इणसूं परे रैवै।

खुद वा दुनिया पर अेक तरै रो भार है। जिणनै भगवान पईसो तो घणो ई दियो पण... औलाद रो सुख नीं, जको हर जिनावर अर जिनावर जैड़ा मिनखां नै सौरै-सांस मिल जावै। पण उण सारू तो अलभ्य चीज। इणी कारण हर बार साबजी सागै ई टूर पर चली आवै। अठै आयां सूं तकदीरां नीं बदळै... अर ना ई मन बदळै! फगत आण-जाण री खैचळ सूं कीं टेम पास हो जावै, पण अठै आयनै ई कीं काम कोनी। निकामा हर जगयां

निकामा ईज रैवै। अर अब तो काम री टेव रैयी ई कोनी। कोई समै सासू कनै रैवती जद कीं बोछैड़ो करणो पड़तो, पण वो ई मन मारनै करती। जोरांमरजी ईज निभायो उणां सूं। सासरै सूं धापनै साबजी री पोस्टिंग वाळी जग्यां आयनै सांस ली। घरवाळा कीं नीं कैयो। इणी आस में कै स्यात औलाद रो कीं सुख पल्लै लाग जावै। पण हुयो औ कै रात-दिन सागै रैवण सूं उदासीनता वापरगी, पण पल्लै कीं नी लाग्यो। वा खाली ईज रैयी अर जिंदगी ई खाली। भांय-भायं करतो घर बिना राग रो साज बणनै रैयग्यो। साबजी री जिंदगी सरकारी नौकरी रै काम रै कारण कट जावै नींतर तो घरै अैड़ो कीं कोनी जिणनै घर कैयो जाय सकै। महंगी चीजां रो जमावड़ौ है फगत। पण वा कांई करै? कठै जी बिलमावै...

...अबै ई साबजी राजभवन मांय ऑफिस रै काम सूं गया है। होटल में अेकली कांई करती। उणां रै दोय घंटा रो काम है। सदा दांई वा होटल री बजाय अठै आयगी। इण भीड़ै मांय कीं तो बंतळ होयसी, भलांई बोरियत भरी ई होवो। मांयलै हाहाकार नै बारलै हाका-हो मांय घोळण री अेकर ओर कोसिस करसी...

''...आंटी चरखी, गुडिया रा बाल लेवो?'' आवाज री सफाई रै मांय पज्यो संकोच ध्यान खांच्यो।

इण छोरै नै पैली बार देख्यो है। नवो है कांई? हिल स्टेशन रो चतुर खिलाड़ी तो नीं लागै। नयो हो स्यात इण फील्ड मांय, इण कारण मोळो-सो इसरार पण हो। सवाल रै लारै आंख्यां अरज सूं भरी ही। खयालां सूं बारै आयनै उण पर निजर जमाई। बारह-तेरह साल रो छोरो। कुचो होयोड़ा कपड़ा पण साफ-सुथरा। बाल बिखर्‌योड़ा, पण दिनूगै संवार्‌या हा, अैड़ो लाग्यो। गेहूंओ रंग। स्वर मांय अरज ही, पण दयनीयता कोनी। जी-सौरो होयो। हिल स्टेशनां माथै दयनीय मंगता टाबरां री जमात सूं वा यूं ई घणी चिंतित रैवै। उणनै इण बात सूं सख्त अफसोस है कै और तो सो-कीं सावळ, पण हिल स्टेशन वाळा गरीब छोरां मांय मंगतपणौ अर लपकागिरी वापर जावै। निसरमा अर ठग बणता जावै। पूरी पीढी अर पछै पूरी नसल री चिंता होवै। पण इण री सरलता दाय आई।

हाथां मांय दस-बारह गुड़िया रा बाल री थैलियां अर कीं रंग-बिरंगी चरखियां अर दूजा रमेकड़ा। सगळी टाबरां वाळी चीजां!... दरद री रीळ-सी चाली काळजा मांय। दुनिया री हर चीज उण कनै है, पण दुनिया री हर बात उण चीज री याद दिरावण री होड मांय लागी रैवे जकी उण कनै नीं है। दुखियै नै और दुखी करणो। किताब मांय देख्या पोस्टर बेबी जैड़ा फूटरा रूं रै फूंबा जैड़ा टाबरिया खयाल में निजर आया अर वा फेरूं गैरी उसांस न्हाखी। खुद रै सागै ई उण छोरा पर भी तरस आयो। उणरै ई कोई चीज री कमी है! गोळ रोटी री! निजरां उठा सूं अळघी नीं होई। उणनै जोवणो भलो लागै है। उण दोनां

नै कोई-न-कोई चीज री अणूती दरकार है। जरूरतां न्यारी है, पण वै अटल है। इण बिना गुजारो नीं। पण छोरो समझणो लागै है। मांगनै नीं खावै बल्कै कमायनै खावै। इण सूं कांई कमाई होवती होवैला? घर कियां चालै? टाबर री स्कूल री उमर है अर अठै मैणत करै! कांई होयो अैड़ो? धिक है मां-बापां नै!

''थारौ बाप कमावै कोनी कांई रे? दारूड़ियो है कांई?''

नीं चावतां थकां ई पैली बात पर ईज तीर चढग्यो। क्यूं? नीं समझ सकी। इतरी जेज चुप रैवण रो प्रभाव तो कोनी!

''आंटी... चरखी लेयलो... दिन ढळण वाळो है।'' उणरी बात पर कीं कैयो कोनी। विलखो-सो आपरी गांगरत गावतो रैयो।

अैड़ां लोगां री गत वा घणी ई जाणै। आं टाबरां रा दारूड़िया बाप हर हालत में पीवै। लुगाई-टाबर भलांई भूखां मरो, पण रोज रात पीयां बिना नीं रैवै। स्कूल जैड़ी चीज रो तो दारूड़ियां नै सोच होवै ईज कोनी। टाबर भलांई रुळो, पण दारू पैली चाईजै।

''बता तो? थारी तो स्कूल जावण री उमर है। कमाई तो थारै बाप नै करणी चाईजै नीं। थनै मजदूरी सारू मेल्यो है अर खुद दारू पीयनै घरै पड़्यो होयसी... क्यूं...?'' उणनै कुरेदण री कुबद होयी।

अजेस ई कीं नीं बोल्यो। टगमग जोवै फगत अर कदैई अठी-उठी जोवतो कीं सोधै... स्यात इण बकवास बंतळ सूं बत्ता ग्राहक प्यारा है जका रोटी रा देवाळ है। दूजो दिख जावै तो ठीक रैवै। नीं दिखै जित्तै इणसूं ईज आस है...

''बता तो सही... चुप क्यूं है? भूख लागी है? जीमसी?''

बात में उणरी दर ई रुचि नीं जाणनै छेवट उणरै खास मतलब री बात ईज बूझी।

''चरखी लेयलो... रामका लेयलो... कीं तो लेयलो। पछै जीम लेसूं... अर... म्हारो... बापू... तो...'' कैवतो अटकग्यो।

''कांई बापू?... सो समझूं म्हैं। थारो मूंडो थारै बाप री करणी बोलै है?''

तरस खावतां थकां ई बात खतम करणी चाही अर पर्स में चर्रर्रर करतै मोबाइल नै संभाळण लागी।

''बापू खिलाड़ी हो... अेक्सीडेंट में पग कटग्यो... घरै है...''

सन्न-सी सीटी बाजी मगज में।

पर्स में उछळती निजर पाछी उठै आय जमीं। हाथ पर्स में रैयो अर मन सरम सूं भरीजग्यो। उणनै अफसोस होयो। खुद री बोरियत री सूळ काढनै उणरै हिवड़ै खुबोय न्हाखी ही। उफ!!

दूजै पल काचै मन री खिंवता पर अचरज उमड़्यो। केई ग्राहक उणरी गरीबी पर दया जतावै। उणनै इणसूं मतलब कोनी। लूखा भावां सूं रोटी नीं बणै। उणनै फगत चरखी लेवण वाळा ग्राहक चाईजै, रोटी चाईजै आज री। फगत गोळ रोटी। अठीनै-उठीनै देखतो अळगळाई करतो बिक्री सारू टाबर वाळा माईत सोधण लाग्यो, जका अै चीजां लेय सकै। आपरै बाप रै दुख री होणी नै तो मान ली है। स्वीकार है। अब कोई मतलब कोनी चिंता अर सोच सूं। होयी जकी भुगतै है। अब बस गुजर-बसर रो सवाल है।

केई बार अैड़ा सवाल बूझण वाळा ग्राहकां सूं फेटो पड़ै। कद तांई दुखी सूरत बणावै अर दया सारु पल्लो मांडै? अै आंटी तो कीं नीं लेवै! दूजा ग्राहक मिळै तो कीं पल्लै पड़ै। इयां कोरी बातां सूं कांई होवै। रोटी इयां हाथ नीं आवै।

...छोरो अेक ईज लैण में सारो लेखो उणनै झिलाय दियो अर पड्ूत्तरहीण कर दी। किण मूंडा सूं मां अर भाई-बैन रो बूझै। है जका घरै होवैला अर इणरी कमाई री बाट जोवता होवैला। अब तो सौ बात री अेक बात रोटी है, बाकी सगळी बात थूक-उछाळ।

''थूं अठै ईज ऊभो रैइजै। म्है आऊं पाछी... ढबजै, हो कै? आऊं बस पांच मिनट में...''

कनै वाळी दुकान पर जायनै कीं कैयो अर पाछी आयी।

''थूं यूं कर... थारी ग्राहकी कर... निजरां साम्हीं ईज रैईजै... म्हैं इसारो करूं जद बावड़जै।''

अणसमझ-सो, अभरोसो करतो बात सुण्या बिना वौ दूजै कानी लपक्यो। साव ई खोटी कर्‌यो! लियो कीं कोनी, फगत बातां रा फदका करिया। उंह! अैड़ा ग्राहकां सूं भगवान बचावै।

सांझ साम्हीं दिन भागतो जावै हो। वौ टूरिस्ट री भीड़ कानी भाज्यो।

वा उण ठौड़ ऊभी जोवती रैयी। अब उणरो सगळो बाजार बस अेक वौ छोरो हो, जिण पर निजरां रा अंकोड़िया अटकाय दिया। कठैई अेकला ऊभा टूरिस्ट या अेक टाबर वाळै जोड़ै नै आपरो सामान दिखावतो अर अरज करतौ। दो-तीन बार सूं बत्तौ कोई नै नीं कैवतो। आ बात नोट करी। अर जको अेकर में थोड़ी ई गिनार नीं करै तो मन मसोसनै दूजै कानी चाल पड़ै। ...अेक जणो लारै सूं हेला पाड़नै गुड़िया रा बाल रा चार पैकेट लिया। उणरो जीव सौरो होयो। कठैई हाथां सूं रमेकड़ा नीं लेवण रो ना रो इसारो आवतो अर कठैई माथो धूणनै अर कठैई पुकार पर ध्यान दियां बिना ही नकार आवती। पण दो-तीन ग्राहकां पछै कोई-न-कोई टाबरां वाळा माईत कीं-न-कीं लेय ई लेवता। देखती दाण उणमें सौराई वापरती।

''मैडम! पार्सल...।''

पार्सल लेयनै उणनै हेलो करणो चायौ, पण वौ व्यापार में बिजी हो। कीं ताळ पछै थाकनै अठीनै जोयो तो वा झट झालो दियो।

उछळतौ कनै आयो जद कीं खुस हो। स्यात रोज सूं आज कीं चोखी कमाई होवैली। उणरै उणियारा निजर गडावतां वौ पार्सल उण आगी करयो।

''लै, औ खाणो है। थे सगळा घर रा औ जीम लेईजो।'' उणनै हाथ में थमावतां कैयो।

अचाणचक ई झेलीजग्यो। अेक ठैरी निजर पार्सल पर न्हाखी। स्यात घरै बैठा मां-बापू भाई-बैनां नै याद करयो होवैला या स्यात दिनूगै सूं अब तांई कांई खायो... या पछै बापू री हालत नै... मां नै रोटी सारू खटकरम करती नै... नैनी बहन नै जकी बारणा पर ऊभी बच्योड़ी फरियां अर गुड़िया रा बालां नै अडीकै... या और कीं दूजो?

मोबाइल बाज्यो। काढनै जोयो... साबजी रो कॉल आवै हो। वा मुड़गी जावण सारू।

''आं...टी!...''

पुकार सूं मुड़नो पड़्यो। ''आं...'' इत्तो लांबो करनै कैयो कै 'मां' सुणीज्यो। मुड़्यां पछै '...टी' रो भचीड़ लाग्यो।

''...चरखी रमेकड़ा कीं तो लेयलो... गुड़िया रा बाल... आपरै टाबरां खातर...''

अेकर फेरूं तीखी ल्हैर काळजो चीरती पार होई। हजारूं अणभव है अैड़ै तीरां रा। घाव है काळजै मांय ऊंडा-ऊंडा। फेर भी जीवै है... अस्सी घावां सूं बत्तो दरद हर घड़ी जीवै।

''...किण खातर लेवूं?... गैलो है थूं! टाबरां नै अठै सागै थोड़ी ल्याई हूं... वै तो घरै पढायां करै। यूं टाबरां नै सागै लियां थोड़ी फिरीजै। ...औ खाणो थे सगळा भाई-बैन जीम लेईजो। ठीक है?'' कैवतां मुड़गी। खुल्ली आंख्यां आपरै कैया आं सबदां रै सुख नै देखण लागी। मन री हजार किरचां सांवटी।

''टाबरां नै अठै सागै थोड़ी ल्याई हूं। वै तो घरै पढायां करै...'' खुद रै मूंडै कैयोड़ी बात उणनै मां बणाय दी! ठंडी चंदण सोरम सूं मन रो सूखो आळो पांगरयो। उणमें मगन सुधबुध गमावती चालती रैयी।

''आं...टी।''

आखर रो धोखो पाछो लारै आयग्यो। सपना सूं जगाय दी। हे राम! अब कांई चाईजै? छोरा रो लालच बधग्यो दिखै। भोजन सूं बत्तो कांई देवूं उणनै।

''आंटी कीं तो खरीद लो... गुड़िया रा बाल...'' पार्सल अेक हाथ सूं अर दूजै सूं सामान सांभतो बोल्यो।

''...सुण्यो कोनी तू?... म्हनै रमेकड़ा नीं चाईजै। चकरी भी नीं अर... दूजा कीं नीं चाईजै...।'' आखती होयनै कैवणो पड़्यो। उण रा टाबर होवता तो वा इणसूं खूब सारा रमेकड़ा लेवती।

दुमणो-सो वौ अेकर पार्सल नै देख्यो अर अेकर उणनै। अठीनै-बठीनै देखतो कीं अणबूझ रैयो।

ओ लारो छोडै तो वा जावै। अेक घड़ी... दो घड़ी नीसरी...

दूजै छिण फलांगतो-सो दिख्यो। दसेक मीटर सड़क रै उण छैड़ै नीमड़ै रै कनै पूग्यो। उठै दूबळी-सी भिखारण बैठी ही। तीन नैना टाबर उणरै औळै-दोळै रमता हा। फाट्योड़ा गाभा... अर मैल सूं भर्‌या। पार्सल हेठै रखनै तीन फर्रियां, दो रमेकड़ा अर दोय गुड़िया रा बाल पकड़ाया उणां नै। वै टाबर समझ नीं सक्या कै जिण रमेकड़ां नै फगत देखनै राजी होवै, गुड़िया बाल नै देखनै सोच्यो कै आ कांई चीज होयसी...? वै चीजां आज बिना मांग्या ई हाथ मांय आय ढबी। टाबरां री मां स्यात इण भांत मेहरबानी रै हेवा ही। लेयनै चट-देणी टाबरां नै खुवावण लागी। टाबर बल्लियां उछळनै ताळी बजाई।

टाबरां रा भाव जोवण नै उणनै वेळा नीं ही। ऊंधै पगां बावड़्यो। भाजतो-हांफीजतो आंख्यां मिचमिची करतो बोल्यो—

''...अेक्सीडेंट में... म्हैं अर बापू ईज बच्या... मां अर बैनां... कोई नीं बची ...खाई सूं बारै ई नीं काढीज्यो।''

❖❖

खिरता लेव

वो भाजतो सो बस-स्टैंड पूग्यो, पण आंख्यां साम्हीं बस नै जावती देख मनोमन रीस खायनै रैयग्यो।

आज तो सुगन ईज खोटा हुया है!

हांफीजतो-थंबतो गोडै माथै अेक हाथ राख नीगरो होयो अर अेक हाथ सूं लिलाड़ माथलो पसीनो झाटकतो लारै जोयो तो नीमा माथौ पकड़्यां उठै ईज बैठी दीसी जठै छोडनै आयो हो। तावड़ै रै चिलकै सूं आंख्यां पैली ई मिचमिची ही अर औ देखनै तो जीव ई मिचमिचो सो हुयग्यो।

बस नै स्टैंड पूगतां देख नीमा नै हवळै-हवळै पूगण री ताकीद करनै आप बस रोकण तांई धकै भागतो-सो पूगणो चावै हो, पण... पण... बस तो ठिंगो बतावती, उणरी हंसी उडावती लांबै काळै नाग री छाती माथै पों-पों रो घोस करती रेत रै गुबार मांय अदीठ होयगी। छिण भर ढबनै वो आपरी विवसता नै चितारी। बस रै लारली धूड़ नै उडतां देख रीस रो ल्हैरको पाछो आयो अर अेक गाळी होठां माथै नाचती उणरै कानां नै अड़ती वायरा में रळगी। फगत अेक गाळी सूं रीस अर खीज री ताब कम नीं व्ही।

उडती धूड़ रै नरतन नै जोवतो रैयो। ओळबा अर दुख सूं भरग्यो जियां कै करसा आकासै मेघां नै घणकरा जोवै अर बादळा जद उणां री आस नै लीरा-लीर करता टुंगावता टुर व्हीर व्है जावै। किसान फगत ओळबा अर दुख सूं भर्‌या किरपा री कामना करता... आंख्यां मांय ई अरदास भर्‌या रैय जावै।

कीं बरसां पैला औ मानतौ कै भगवान करसां नै तरसावै तो उणसूं ऊंचला भगवान उणनै ई पाप देवता होयसी, पण अैड़ो कीं दिख्यो कोनी तो अरदास अर अरज सूं अब भरोसो ईज उठग्यो है।

मोड़ा पूगण री बात सूं उणनै रैय-रैयनै रीस रा भभकारा चढै है, पण कांई जोर करै! अै भभकारा कांई ठाह मौड़ै पूगण रा है कै कांई ठाह कित्ती कोई दूजी बातां रा भेळा। अेक बात सूं कोई नै इत्ती रीस री ताब थोड़ी चढ जाया करै! आ रीस जलम भर री भेळी हुयोड़ी है।

लेव : *जूनी भींतां माथै आयोड़ी गारा या चूना रै पलस्तर री पपड़ियां।*

...पाप-पुण्य रा विचार पाछा मगज माथै चुळपुळाट करण लाग्या।

उणनै लागै पाप-पुण्य सगळा खुद री सांयती अर विश्वास देवण नै व्है। औ खुणखुणियो झालनै कोई जूण भर दुख देख सकै, पण दुनिया माथै असल मांय इणसूं कीं फरक नी पड़ै। क्यूंकै औ जगत झूठ-साच अर पाप-धोखा सूं भर्‌यो है, पण कदैई इण सारू किणी नै सजा मिलतां नीं देखी, ना ई कोई झूठै अर अन्यायी आदमी नै दुखी व्हैतां देख्यो। वै आपरै करमां सूं कदैई नाखुश नीं, बल्कै सदा खुश दीखै। धनपतियां नै क्यांरो दुख ? सगळा दुखां पर धन री चादर छाय जावै। लाख चमचा अर हजार खिदमतिया पगां ऊभा रैवै अर मतलबिया लोग उणां री हाजरियां भरै। नित आळा कस्ट तो पईसा हाथ मांय नीं होवण रै कारण ईज तो सरू होवै। पईसा हाथ आवै तो पेट भर रोटी पावै। पछै क्यांरा दुख! पईसा हाथ आवै तो आधी बाधावां छिण मांय न्हाठ जावै। हां... दुखी देख्या तो फगत ईमानदारां अर साचा लोगां नै जका उमर भर इण आस पर दुख देखता रैवै कै कदैई तो पापियां नै दंड जरूर मिलसी। भगवान रै घरै देर है, पण अंधेर कोनी। इण आस मांय दुखी ई मर खपै, पण पाप-पुण्य रो खातो कुण राखै औ ठाह नीं। भगवान तो हरगिज नीं राखै, इत्तो तो ठाह पड़ग्यो है उणनै। जीवन रा लाख ज्हैर अनुभव बालपणै री केई भोळी सोचां नै, सीखां नै हियै री पाटी सूं साव सफा कर न्हाखी है। वो हेंप करतो सूखै गळै सूं थूक गिट्यो... जूण रो अेक घूंट उतार्‌यो ।

...दिन रा दस बज्या है, पण सूरज भगवान रीस मांय लाय रा हपीड़ा बरसावै है। कांई ठाह कितरा जुगां रो किरोध भर्‌यो है। धरती माथै बिछ्यो तावड़ो रीसां बळतो ऊभा मिनखां नै औरूं झाळ सूं बाळै, जाणै दूजै भौ रो बदळो इण भव में साजै है अर लागै है कै सिंझ्या तांई तो जीवतां मिनखां नै खीरा बणाय देयसी। पण आज खीरा बणै या लाय बरसै। कीकर ई होवो उणनै स्हैर तो जावणो ईज है।

नीमा रो ताव ई तो तीन दिनां सूं लाय बरसावै है। हाडजुर में उकाळी अर काढा रा कूड़ा थ्यावस लेवतां-देवतां तीन दिन काढ दिया। फरक नीं पड़तो दीस्यो तो छेकड़ स्हैर साम्हीं मूंढो करणो पड़्यो। मां अर बूढी धा तो काढा-उकाळी पीवण सूं सावळ हो जाया करती, पण नीमा! ...उणनै आपरी सोच माथै लाज आई अर जमानै माथै ई। धा रौ समै दूजो हो अर औ दूजो... पण समै तो हमेस सूं गरीबां रो दुस्मी ईज रैयो है। इण मूंघीवाड़ै में दवायां-दारू करावणी मतलब तंगाई मांय और तंगाई। यूं ई तो नीठ पेट भराई करै अर जमारो पूरो करै। स्हैर सारू किराया-भाड़ा ई को पौसावै नीं अर अैड़ै मांय कोई हारी-बीमारी आय पड़ै तो घर री कमर सफा ई टूट जावै। कंजूसाई बरततां कीं जमा-पूंजी भेळी करै, पण अेक बीमारी आवै अर सैंग उडाय लेय जावै। बीमारियां अणगिण है। वो तो गांव मांय बुखार, खांसी, निकाळो ईज सुणी बिमारी रै नांव माथै। पण अब अखबार पढै जका बतावै कै जित्ता लोग है उत्ती ई बिमारियां। बल्कै उण सूं ई बत्ती है। पण लाखूं बातां री

अेक बात आ है कै मांदगी कोई तरै री होवो, इलाज अर अणइलाज आळी पण लोग मरै तो फगत अेक ईज बिमारी सूं, वा है—मौत। मौत री बीमारी केई रस्तां सूं आवै अर उण रै रस्तै मांय कोई आडी नीं घाल सकै।

...लारै मुड़नै जोयो तो नीमा थाकती अधगावळी हुयोड़ी दोरी-सोरी पूगण आळी ही। दोय पांवडा धकै जायनै थांबी तो बास्यां मांय ढह पड़ी। थांबणो अर ढहणो दोनूं सागै हुया। वो अठीनै-बठीनै जोयो... स्टैंड खाली हो। दोय राहगीर अळघै सूं आवता दीसै हा। ...नीमा नै आपरी छाती मांय भींच लियो। नीमा रै साव कलमीज्योड़ै मूंढै माथै मुळक री अेक मुड़दी रेख खिंचगी। फगत बीमारी ईज नीं, उण मुरझापण मांय भविस री केई चिंतावां ही। अेक बीमारी सूं इत्ती हारण व्है जैड़ी नीमा कोनी है। जूण भरया दुखां मांय फगत नीमा अर नीमा री मुळक ईज उणनै झालनै राखै। नीमा नचींती होयगी। बींद रो यूं दोय कदम धकै आयनै हेठै पड़ती नै थांबणो उणरी पीड़ नै हर लियो व्है ज्यूं।

गांव बस-स्टैंड सूं कीं मांयलै छैड़ै पड़ै। आधीक कोस भर भौं जित्तो। मोटरसाइकल या पैदल ईज आवणो पड़ै। का पछै कोई सागो मिल जावै तो भलो। स्टैंड माथै अेक चाय रो ढाबो। टूट्योड़ी बेंचां पड़ी है। ढाबा आळौ राहगीरां नै अडीकै, अठीनै-बठीनै ख्यांततो रैवै। ढाबा माथै सुपारी, चिप्स अर बिस्कुटां रो ढिगलो पड़्यो है अर कनै दो-चार माड़ा नीमड़ा, अेक निसंग खेजड़ी ऊभा आपरी जूण पूरी करै है। कनै ईज सरकारी मुसाफिरखानै री ओरकी बण्योड़ी है जिण मांय गायां बैठी वागोलै अर पोठां सूं आंगणो भरती रैवै। सूखा-आला पोठां अर पेसाब रै रेलां सूं आंगणै पर केई तरै रा गैरा-हळका निकेवळा आकार उभरनै आया है। पूरब दिस रै मूंढै रै कारण तावड़ो बेगो ई मुसाफिरखानै रै मांय घुसनै आतंक मचावै। जातरू मुसाफिरखानै मांय कद बैठ्या, औ कैवणो मुस्कल है। पण गायां नै कीं छियां मिळ जावै। औ ईज इणरो उपयोग है। बोहळी बेपार अठै निरांत सूं बैठी बंतळ-जुगाली करती रैवै। स्टैंड माथै कुण आवै, कुण जावै, आ ओरकी किण खातर है। इण सूं उणां नै सरोकार कदैई रैयो ई कोनी।

कश्यप जी रा पूत रीसां बळतां तावड़ै रो टोकरो अबै ईज उंधाय न्हाख्यो। मुसाफिरखानै नै हरमेस दांई भूलनै कनै ऊभी अेक जुझारू खेजड़ी री नैनीक छियां हेठै दोनूं जणा बैठग्या। धकली बस आवण मांय अजेस घणी टेम है। नीमा सुस्त बैठी रैयी कीं ताळ अर छेवट रेत मांय आडी व्हैगी। वो छियां सारू ओट करनै बैठ्यो। नीमा ई कम जुझारू नीं है। रेत रै धरा री बेटी है, पण भाटां दांई मजबूत। उण छिण लाग्यो कै वो दुनिया मांय सगळां सूं भागधारी है... वै दोनूं अेक-दूजै रै घणघोर प्रेम में है, अेक-दूजै रै तन-मन सूं सागै है। बिना बोल्यां ई उत्तो प्रेम पूगै जित्ती जीव नै जरूरत। इण नैनी-सी बात सूं घणी हीमत सांचरी।

...बस आयगी ही। थरु बस तो छूटगी ही। लोकल है आ। पण पूगावैला उठै ईज जठै उणां नै जावणो है। अस्पताळां रै खरचां सूं डर लागै । कितरा ई टेस्ट अर जांचां। इंसान

माथै बिमारियां रा खतरा ई बध्या है अर बचाव रा तरीका ई, पण कोई तरीकै सूं पईसां री खपत कम नीं व्ही। हर बिमारी घर री जमा-पूंजी गिटकनै जावै। रोवणो पईसां रो ईज तो है। चोखो खावण नै व्है तो मांदो ई क्यूं पड़ै मिनख? दो पईसा हाथ आवै तो चोखो खायनै सेहत सुधारण री खेचल कर सकै, पण जद वड़िया-मजूरी गियां ई रोटी रो पार नीं पड़ै तो सेहत रो कांई सोचै।

भारत किरसाणी देस गिणीजै, पण किसान ईज चोखो कमा-खाय नीं सकै। हर जुग मांय जका अन्नदाता कैवीजै, वै ईज हर जुग मांय भूखां मरै। सरकार री मैरबानी सूं इयां दसकां मांय आतमहत्या मांय बधापो हुयो। रियासत काल मांय किसान गरीब हुवतो, पण अैड़ो करजदार नीं कै आतमघात करणो पड़ै। सरकार योजनावां चलावै, सब्सिडी देवै पण अै सगळा जावै किणरै पेट मांय है? जित्ती योजनावां उत्ती ई आतमघात री खबरां। विकास रा दावा भासणा मांय फुदकै, पण जमीनी तौर माथै तो मरणै री खबरां पूगै। तंतर मांय कितरी कठै पोल है कुण काढ सकै? कुण निवारण कर सकै। निवारण करै ई क्यूं? जिणरो पेट भर्‌यो रैवै उणां नै पीड़ कोनी अर जकां रै पीड़ है उणां नै कोई बूझै कोनी। आंधी पीसै, कुत्ता खावै। सरकार देवै अर उणरा लाडला डकार जावै। वै ईज नीति बणावण आळा अर वै ईज पईसो खावण आळा। इण बिचाळै किसान फगत एडवरटाईज मांय नांव रूपी अवस आवै। योजना में सगळां सूं पैला नाम किसानां रो आवै अर किसान ईज सबसूं पैलां बारै फेंकीजै। इणसूं धकै कीं पांती नीं आवै।

जयपुर आळा रतन भाईजी आवै तद नवी बातां बतावै। सगळी सरकारी योजनावां मंत्री आपरा लोगां रै फायदै सारू बणावै अर आंकड़ां अर भासणां में कीं दूजी ई तस्वीर बतावै। किसानां रो फायदो कुण देखै अर कुण परवाह करै। आ हालत तो हर जुग मांय अैड़ी ईज रैवण आळी है अर यूं ई अब खेती बाड़ी मांय ई मल्टीनेशनल कंपनियां आयगी है जकी आपणै पाणी अर जमीन रा आपां सूं ईज पईसा वसूलै अर सस्ती मजूरी करायनै साव दबोच लेवै। जीवता जीवां नै गटक लेवै। अंग्रेजी राज दांई जमीं रै मालकां नै पाछा गुलाम मजदूर बणा छोड्या। समै रै सागै आतम अभिमान ई मर जावै। पेट री दाझ बुझै तो धकै कीं सूझै। नींतर तो पसली बिचाळै खाली खाडा नै भरण खातर फगत गुलामी ईज कर सकै।

...अणूती गरमी मांय इण बातां सूं मगज और तातो होयग्यो। वो आपरी जेब टंटोळी... रुमाल मांय बंध्योड़ा कीं सौ रा नोट है। नीमा रा अंवेर्‌या रुपिया। निम्मी रै पायजेब अर दीपू रै साइकल सारू भेळा कर्‌या हा। औ ताव आयनै दोनां रै सपनां माथै बुहारी फेर दी। इणी कारण नीमा बिमारी नै सुपनै री आरी कैवै। छव महीनां सूं दीपू नै साइकल री आस सूं टिल्लावै है। निम्मी नै पायजेब पैर्‌यां देखणो उणरो सपनो है। दीपू री ढूंढ रै उच्छब मांय भुआ झांझरिया ल्याई ही। पैलां भाई अर पछै बैन पैर्‌या। छम-छम

बाजता जाणै घर मांय सुख बरसावता। दोनूं भाई-बैनां नै खासा मोटा होया जित्तै पैरायनै सुख लियो है। पण अब हाथां मांय माठियां अर चौड़ी पायजेब री आस पाळी ही, इण कारण दोय पईसा हाथ मांय आवतां ई जमीं मांय री हांडी मांय न्हाख देवती। पण कठैई दाबो अर खाडै में लुकोवो, बिमारी कढाय ईज लेवै। निम्मी रो उणियारो याद आवतां ई नीमा औरूं दुमणी व्हैगी। नीमा सांम्हीं जोवतां उणरै मन मांय औ विचार आयो कै उणरी नीमा कितरी स्याणी अर अंवेरू है। कमती कमाई मांय ई घर नै सुघड़ रूप सूं चलावै। गरीबी रो तांतो नीं करै। व्है जिण मांय अर उणरै प्रेम सागै राजी रैवै। ...वो मन-ई-मन मांय वादो करयो ...नीमां अर टाबरां माथै कदैई दुख री छियां नीं पड़ण देवै। मन मांय कीं ठंड वापरी, पण विचारां सूं बारै आवतां ई पसेवा री खाटी बास सूं गिजगिजी आयगी। तपत री ल्हैर मांयनै सूं उठी अर अेकर फेरूं वो पसेवै सूं हबाबोळ व्हैगो।

दोय घड़ी री ठंड मुसलसल गरमी मांय बदळगी। आसै-पासै बैठ्या जातरुआं रै साम्हीं जोयो। सगळां रा उणियारा चिंत्या अर सोच मांय पाकी फ्रेम करयोड़ी तस्वीर लाग्या। आंनै लागै कै गांव सूं सगळी चिंत्या रो झोळो भरनै स्हैर मांय लेजायनै झाटक देयसी अर बदळै मांय सुख भर लावैला। पण अैड़ो कदैई होयो कांई ? अळघै सूं इयां लागै कै स्हैर जादू री पुड़ाकी है जकी उणां री दुख-पीड़ सगळी हर लेवैला अर वै नचींता हो जावैला। उणियारै री उदासी स्हैर री दिस मांय जोवती आस सूं भरीजै अर पाछी रीती व्है जावै। पण आ भटकण है जको भुतहा हवेली जैड़ै स्हैर मांय लेजायनै न्हाख देवै। उठै सुख री रोटी मिळै या नीं औ तो ठाह नीं, पण उठै सूं छूटनै पाछो आवणो बोत ई अबखौ काम। स्यात असंभव। गयो मिनख पांवणा रूपी वापरै। स्हैर राकस रो मोटो पेट है जिण मांय कित्ता-कित्ता गांव समायग्या। रोटी अर आ भटकण कठै लेजायनै छोडै ठाह नीं। स्हैर कच्छ रो रन है, जठै गरीब-गुरबा जितरा हाथ पग मारै उतरा ई कळीजता जावै। न घर रा न दर रा। पाछा आवण जोग ई रैवै नीं अर उठै रैयां ई पार पड़ै नीं। अधरझूल रै विचारां उमर गळ जावै। गांव सूं, जड़ सूं टूट्यां मिनख पईसा कमायलै, पण चित्त खाली होय जावै। मजबूर है, करै कांई ? काळ-दुकाळ लात मारै अर वै स्हैर जाय पड़ै।

भटकण री केई दिसावां व्है, जठै पैलां आस री पगडांडियां खांचै अर जकी चौरायै ले जायनै छोड देवै। चौरायो ऑक्टोपस दांई घेरो कस लै। फंस जावै किसान। खतम होवती किरसाणी विकास रो सूचक है या पांगळी योजनावां रो नतीजो... इणरो न्याव कुण करै। सरकार योजनावां गिणावै अर वाहवाही लूटै, वोट पावै, सरकार बणावै, विरोधियां पर तंज कसै, पण साच तो औ है कै किसानी देस में, गाय नै माता मानण आळै देस मांय गाय रै चारै-बांटै सारू किसान भटकता लाधै। जमीनी स्तर पर किसानां नै सरकारी योजना सूं फायदो कित्तो होवै इणरी पड़ताल करणियो कोई कोनी। पण हां, जे अफसरां नै योजना सूं फायदो है तो वा योजना सफळ गिणीजै। किसान नै पूछै कुण है!

किसान अेक तरै री मूरत है जिणरै नांव सूं परसाद चढै, पण खावै तो पुजारी है। उणां री साची अबखायां रो हल कुण देवै। योजना चालू होवै अर कुणसै किसानां नै फायदो होवै, औ ठाह नीं। पण किसान तो आतमघात करै है...। सरकार इत्तो कर रैयी है तो किसान आतमघात क्यूं करै? दरबार रै समै अकाळ पड़ता, पण छोडा खायनै जीव बचाय राखता। पण अब खेती प्रधान देस में हळधरिया गळै मांय कांटो फसाय मरै। मैणती किसान इतरो निरबळ हो सकै? भरोसो नीं होवै। अेक साखिया गांव री छूटी खेती सूं ई दोरा-सोरा सदियां पार पटकी, पण सरकारी योजनावां री अणूती आस मांय उळझनै टूंपीजतो जावै।

...झुरझुरी हुवण लागी सोचतां-सोचतां। उणरी घाण-मथाण नै नीमा पढ ली स्यात... वा अेकाअेक उमकनै सवालिया निजरां सूं उण साम्हीं जोयो। फीकी-सी मुळक खांचतो 'कीं नीं' रौ संदेस पूगायो अर... मन मांय कैयो—नीमा! थूं सागै है नीं। सगळी अबखायां सूं लड़ लेवूंला। पड्डूत्तर मांय मोटी मुळक तिरगी उण प्रेम भरयै उणियारै माथै। वो जोवतो रैयो... आ भोळी ढाळी बेकार ई दुखी हुवैला, जे दुनिया री साची बात साम्हीं राख दूं तो। चोखो ई है, घणो नीं जाणै-समझै तो। घणी समझ बधसी तो घणो सोचसी अर घणी दुखी होयसी। दोय बगत री रोटी री चिंता में डूब्यां रैवणो चोखो है। बाकी दुनिया सूं कांई लेणो! जमानै रो साचो साच जाण्यां कांई होयसी? अजाण्यां रा दिन कीं तो सोरा नीसरै। जाण्यां कांई खांगा करलै? कोरी रीस अर बळत रा भभका आवै उणसूं कीं थाग को लागै नीं। उणसूं तो पेट री आग नीं बुझै। पण दो बेळा री गोळ रोटी ईज तो सगळा खटकरम करण सारू मजबूर कर देवै। गोळ रोटी रै च्यारूंमेर गोळ दुनिया भंवै।

स्हैर रै इण छैड़ै अस्पताळ है। मांदगी मांय अठीनै कानी आळा गांव रा मिनख सगळा इण अस्पताळ ईज ढूकै। बस सूं उतरनै भीड़ री नदी सूं नीमा नै जियां-तियां झालनै बारै लायो तो ठाह पड़्यो कै ताव बधग्यो है। भीड़ मांय उणनै थाम्यां राखण खातर काठो हाथ झाल्यो अर वा इसारै सूं कैयो कै ''दुखै है... थोड़ी अलणी झालो'' तो उण कंवळापणै सूं थामी उणनै ।

नीमा मांदी हुवै तो उणरी जिनगाणी री गाडी साव धीमी व्है जावै। उणरै पाण ईज वो ताकड़ो व्हियो बैहवै। नीमा री चाल साव होळै व्हैगी है। चालणो मुस्कल होयो... बात पूरी सोचतां ई लुळनै डाळी सूं फूल तोड़ै ज्यूं लपकनै बास्यां मांय उठायली। नीमा नै अेक पल ठाह ई नीं पड़ियो अर दूजै छिण ठाह पड़तां ई गळै मांय हाथ घालती थकी चैन सूं उणरी छाती माथै माथो राख दियो। उणनै ई औ सुहायो। जूण रा अै पल सुखदायी है।

अस्पताळ में अणूतो भीड़ो है। मानखो मावै नीं। सगळा गांव आज ईज मांदा होय अठै आय पड़्या कांई? महंगो-सस्तो जैड़ो ई है, नैड़ै रै कारण उखळ मांय माथो घालणो ईज पड़ै अर पछै चोट सूं कोई डरो या नीं, चोट तो खावणी ईज पड़ै। चोट अैड़ी धमकादार व्है कै धकलै केई महीनां जिनगाणी री गाडी धूजती चालती रैवै। बिमारी री मार घर री

जड़ां सूं पईसा खांच काढै अर कदै-कदैई जमीं-घर नै ई बिकवाय न्हाखै। बिमारी गरीब-गुरबां रै मसीन री खराबी है। मैणत सूं गरीब नीं हारै, पण भूख अर बिमारी सूं टूट जावै। कद तांई लड़ै, दोय जूण री रोटी मिळ जावै तौ पछै चाईजै ई कांई? अर रोटी ईज दोरी घणी मिळै। खून-पसीनौ बैवायनै। सगळां नै इण सूं ईज जूझणो पड़ै। जको अनाज उगावै वो ईज लूटीजै अर भूखो सोवै अर बिचौळिया बिच्चै बैठां-बैठां अमीर होवता जावै। वो इण चक्कर नै समझण री नाकाम खेचल करतो औरूं उण भम्मळ में पजतो गियो। औ सवाल तो जुगां रो अणबूझ्यो है। चाणक्य री नीत ई इणनै नीं बूझ सकी। बेईमानी अर गरीबी ईज हर जुगां रो साच है।

...और कीं दिमाग सूं उपजतौ जे कोई हिलाय-हिलायनै उणनै जगायो नीं व्हैतो। मैसूस्यो के केई जेज सूं कोई उणनै हेला पाड़ै है, पण वो पड्डूत्तर नीं दे सकै है। कैवणी चावै पण कैवीजै कोनी। आंख खोलनै देखणी चावै, पण आंख भारी-सी होई उपड़ै ई कोनी। बोलनै जबाब देवणो चावै, पण जीभ फगत हालनै रैय जावै। बोल नीं फूटै। जीव नै खांचनै पूरो जोर लगायो अर कीं जेज सूं चेतन होयो अर अचकायनै उठियो अर अठी-उठी जोयो तो सगळा जणा उण साम्हीं ईज देखै हा। नीं समझ सक्यो कै सगळा यूं क्यूं ऊभा है? हाथ रै इसारै सूं नीमा नै पूछ्यो कै कांई व्हियो?

''इत्ती कित्ती गैरी नींद आई आज थांनै? सगळा जणा हेला पाड़्या, पण उठो ई कोनी। ...म्हैं मांय जावूं... तपास सारू म्हारो नंबर आयग्यो...''

औ सुणीज्यो अर हाथ सूं जावण रो इसारो करयो। हवळै-हवळै निबळी-सी नीमा जावती दीसी। जावतां देख वो दूजी गतागम मांय पजग्यो... दुनिया री छोड खुद पर आयग्यो। अैड़ी काठी नींद कियां आई? नींद ही का बेहोसी?

सोच-विचार इतरा गैराय जावै कै मिनख आपो ई पांतर जावै?

काळजै कीं बळत-सी लागी अर वो खुद सूं नीमा पर आयग्यो। कांई ठाह कांई कैयसी नीमा रै बुखार रो! अंतस सूं अरज करी कै इण ताप सूं कोई बडी बीमारी नीं निकळ आवै। नान्या टाबर है, काची गिरस्थी है। तीन दिन री मांदगी सूं ई घर री गत बेगत होयगी है। ताव बेगो-सो ठीक नीं हुयो तो गिरस्थी री गाडी सपा ई रुळ जावैला। मजूरी रो ठिकाणो ई कोनी। मैणती है, पण वड़ी-मजूरी मिळै तो सही। चिंत्या अर विचार कर-करनै उणरो माथो भम्मळ खावण लाग्यो। आंख्यां भारी होवण लागी अर वो गरीबी सूं लड़ै ज्यूं भारी होवती आंख्यां सूं लड़णै री जोरांमरजी खेचल करतौ पलकां पाछी उघाड़णी चावै पण... बोलणो चावै पण... बोलीजै नीं। मूंढै सूं बोल नीं फूटै। मण-मण री पलकां नै उघाड़ण री आफळ करै, पण दोरी उपड़ै।

आंख कीं खुली... नीमा जैड़ो कोई नैड़ो आवतो दीस्यो... उणरो मन उदास हुयो है... मन री भावनावां रो जाणै विरेचन होय रैयो है... निर्विकार-सो... नीमा सावळ तो है?

...नीमा रै धकै धुंओ कीकर है? धुंओ गैरो व्हैतो जावै है। ...अर ...अर नीमा दिखै क्यूं कोनी... धुंओ गैरो हुयो...

...पूरो दम लगायनै आंख्यां खोलण री कोसिस करी। केई आफळ पछै खोल सक्यो। धुंधळी दीसी, पण दीसी तो सही... मुळक खांचणी चाही... दुसालो ओढ्यां नीमा साव नैड़ी बैठी है... डरूं-फरूं हुयोड़ी है... आंख्यां पाणी सूं भरी है... क्यूं? ...हे राम! नीमा सावळ तो है?

आ ईज बात पूछणी चाही, पण उठीज्यो कोनी... माथो फोरनै सवालिया निजरां सूं च्यारूंमेर निजर न्हाखी... अचूंभै सूं आंख्यां फाटी रैयगी...

वो अस्पताळ रै पलंग माथै सूतो है...!

घोर दुखती निजर नीमा साम्हीं फेंकी अर पूछ्यो—

''... ...''

''थे बेचेतै होयग्या हा... तेज ताव है... सूई लगाई है अर कंपोडरसा कैवै कै थांनै भरती करणा पड़सी...''

❖❖

सरकती व्हैल

आज फेर दिनूगै-दिनूगै ई झौड़ होयगी। इण रा ऊंचा-नीचा सुर सूं घर रो स्वाद खारो होयग्यो। सुधा घणी खेचल करै कै अैड़ो कीं नीं होवण देवै, पण चायै-अणचायै रोळो होयां बिना रैवै ईज कोनी। घणी ई काठी रैवै, गम खावै अर कीं बोलै कोनी। छानी-मानी रैयनै उण बात नै बीतण देवै। बिना बोल्यां काम दोरो-सोरो चलावणी चावै, पण घणकरां उणीज टेम अैड़ो कीं होय जावै अर रोकतां-रोकतां ई उणनै दखल देवणी पड़ै, क्यूंकै काम नै बिगड़तै देखनै उणरो पारो चढ ईज जावै अर उणनै राती आंख करयां दखल देवणी पड़ै। कितरो ई दरकिनार करै, इग्नोर करै, पण छेवट नीं रैवीजै अर विस्फोट होवै। घर री हवा ई मनहूस-सी होय जावै।

उणरो ई कांई दोस? बिगड़तो काम तो कियां देख सकै। घर रो भलो सोचण आळी वा ईज है नीं। दूजां नै किणनै टेम है घर रै काम री? अर घर सूं मतलब भी कोनी। मुखिया जी नै आपरी नौकरी रो काम सगळां सूं मोटो लागै। औ कैयनै वै हर फरज सूं फारग व्है जावै। अर वा है कै जिम्मेदारी सूं लार छोडावण सारू अैड़ो कीं कैय नीं सकै। टाबर अजै टाबर ईज है अर इणां रै बरताव सूं लागै कोनी कै नैड़ै समै मांय जिम्मेदारी समझण रो विचार है।

टाबर इत्ता नैना कोनी कै घर रै नैनै-मोटै काम री जिम्मेवारी नीं लेय सकै। आप-आपरी उमर अर समझ रै मुजब घर सावळ सारू सोच राख सकै, छोटा-मोटा कामकाज रो स्हारो देय सकै पण घर रै कामां मांय मदद करणै री नीयत ईज कोनी। स्यात अैड़ी नसल ईज खतम व्हैगी है। स्यात पीढियां पल्टो खायगी। मां सारू पेट बाळणो अै टाबर समझै कोनी। इणीज कारणै सो-कीं उणरै कांधै भार है। वा ईज अेक फगत अैड़ी ठाली-फालतू है जिणरै आखो दिन काम रैवै। दिन भर पचती रैवै, पण कोई नै कीं नीं दीसै। दिनूगै सूं लेयनै आधी रात तांई ऊभां पग रैवै। घर ई संभाळै अर नौकरी भी करै। इण उपरांत भी सगळा औ मानै कै बत्ता काम उणनै ईज करणा चाईजै, क्यूंकै वा लुगाई है अर फ्री है। आपरै काम री गांगरत जको गावै वो हर फरज सूं बच निकळै अर जको इयां नीं कर जाणै

व्हैल : *बळदगाड़ी पर सजावटी कमरानुमा संरचना जिण मांय लुगायां बैठ्या करती।*

वो फंसै अर फंसतो ईज जावै। जद सगळो काम सावळसर चाल जावै तद कोई क्यूं सोचै कै कुण करै है? उणां नै लागै कै सो-कीं आपीआप ई होय जावै है।

लुगाई इण आधुनिक समानता रै जुग मांय बत्तै जंजाळ में झिलगी है। सदी पैलां घर-बार री बातां आदमी-लुगाई रै जिम्मे आधी-अवळी ही। संस्कारां मांय ईज काम री घुट्टी पाय दी जावती। काम रै इण सरल-स्हैज बंटवार सूं केई लड़ायां टळ जावती। कम सूं कम काम री तो टळ ई जावती, पण आजकल वै जूना संस्कार अर आधुनिकता रो भेळ अणदीखता जंजाळ बधाय दिया है। लुगाई बारलै छेत्र मांय पग धर दिया, पण घर मांयलै छेत्र रा फरज अजै उणरै कांधै ईज है। भणी-पढी रै कारण केई काम सांभनै आदमी रो काम तो हळको कर दियो, पण खुद रो काम अणूतो बधाय लियो। आदमी उण हिसाब सूं घर सांभणै रो हुनर सीख्यो कोनी।

इणी कारण आदमी ऑफिस सूं आवतां ई सोफा मांय धंस जावै अर लुगाई घर मांय बड़तां ई दस काम अेकै सागै करणै री जुगत मांय रैवै।

कान, आंख, नाक आजकालै अणूता सावचेत रैवै। लागै कै कानां रै आंख्यां निकळगी है अर आंख्यां रै कान ऊग आया। रूं-रूं सजग रैवे। उणरो दिमाग एंटेना टेंटेकल दांई अठीनै-उठीनै कीं सोधतो रैवै कै कोई गड़बड़ तो नीं है? औ जीव धूड़ सूं लोह रा तुस सोधण आळो चुंबक बणग्यो है। मगज में केई फितूर आवता-जावता रैवै। केई सीन मत्तैई बणायनै फिलम चलाय न्हाखै। अैड़ो करणी नीं चावै, पण कोई अबखी बात मगज रो किंवाड़ खड़काय देवै अर वा हिल जावै। पछै तो घर इण धूजण सूं हिल्यां बिना नीं रैवै। विचारां री आवाजाही आजकालै बधगी है। हजार जंजाळ चालै हिवड़ै मांय। केई अंदेसा ऊग जावै नैनी-सी बात नै लेयनै। टाबरां नै साव नैनी बात पर रीस करतां देखनै सोचै कै चांदी रै चमचै सूं जीमतां टाबरां रा आज ई अै तेवर है, अै मिजाज है तो काल रै जीवण-जुद्ध मांय अै कियां पार पड़सी? अबखायां सूं कियां बाथेड़ा लेसी?

देविना रै कॉलेज रो अर नीलेस रै ऑफिस रो टेम अेक ईज है। पण हां! संयोग बेगो सात बज्यां स्कूल जावै तो वो इण माहौल सूं बच जावै। अजकी बातां रो उण पर असर कम पड़ै। दोपार रा आवतां ई उधम मचावणो चालू करै। घर माथै लेय न्हाखै। तद घर री नीरसता कीं ओछी होवै अर घर डग-डग हंसण लागै। सुधा कीं सांयती री सांस लेवै। बधती उमर रै टाबर नै यूं मस्त रमता देख वा चैन सूं बैठनै जोवै अर कीं सोचती जावै। उणनै खुद रो बालपणो याद आवै। अैड़ो लागै कै आजकालै विचारां सागै बचपन री याद कीं बेसी आवण लागी है। आंख्यां साम्हीं बदळाव होवता दीसै जणै मन पैलड़ै दौर मांय ऊब-चूब करण लागै।

...लुगाई री जिनगाणी मांय केई बार बदळाव री बयार आवै। हर बार जीव बालपणै रै सरणै जाय पूगै। बालपणै री बातां पीड़ नै कीं कम करै । पण बदळाव मोड़ो-

बेगो साम्हीं आय ऊभै तद झेलणो ईज पड़ै। औ बदळाव दोरप तासीर रो व्है। हाथ छुडाय-छुडाय हवळै-सी छूटणो अर नवै जीवण मांय पग धरणो सुधा नै सांप री कांचळी उतरै जैड़ो भान हुवै। उणरै सगाई री बातां चालण लागी तद वा ऊंडै तांई धैलगी ही। ओह! अब इण घर सूं विदाई नैड़ी आवै है। हाथां सूं आ मस्ती, बेफिकरी, आणंद बेकळू रेत दांई तिसळती जावै है। डबडब आंख्यां लियां बचपन री रीलां फ्लैस-बैक में जाय-जाय घणी देखी। इणी घाण-मथाण मांय नवै घर मांय कंकू पगल्या मांड्या। आवतां ई सासूजी केई जिम्मेवार्‌यां री छाबां माथै धर दी ही अर वा दोरी-सोरी चाल पड़ी ही।

देविना री पैली धड़क मैसूस करतां ई पाछी उण बालपणै में जाय पूगी जद वा आपरै नैना भाई-बैनां नै रमाया हा। देविना-संयोग नव-दस बरस रा होया वो टेम उणां च्यारां खातर अणमोल हो। सुधा, नीलेस अर दोनूं टाबर। माईत आपरै बालपणै नै रिन्यूल हुयोड़ो देखण लागै। टाबर पैली बार दुनिया देखण लागै। टाबरां रो जीव नवी चीजां मांय डोलै अर माईत विगत मांय गोत लगावै। औ समै ई हवळै-सै नीसर जावै देखतां-देखतां। झालतां-झालतां ई चीकणी मछली जियां तिसळ जावै अर हाथ रैय जावै चिपचिपी-सी याद जकी कदै मधुर याद सूं हियो भरै अर कदैई उण यादां सूं हियो भरीजै। अब जद टाबर बालपणै सूं बारै नीसरग्या है तद ई गाहे-बेगाहे वै दिन ठक-ठक करनै हियै नै झकझोळता रैवै।

आजकालै सुधा चतराई सूं समै माथै मींट राखै। टाबर सूं बच्ची अर बच्ची सूं बडी होवती देविना मांय केई देख्या अर केई अणदेख्या बदळाव आवै है। स्कूल यूनिफॉर्म में लाल रिबन सूं बेवड़ी दोय चोट्यां रै नेम माथै अेक दिन झुंझळाई अर चौथै-पांचवैं दिन चोटी सारू भूंडै ढाळै बिफरी। उणरै इण रुप सूं चौंकगी। स्कूल मांय खुला बाल री आग्या कोनी अर वा बाळ छुट्टा राखणी चावै। लहरावणी चावै। दोय चोटी नै रिबन सूं बांधणै रै नियम सारू स्कूल मैनेजमेंट नै इंग्लिश मांय अेक जबरी गाळी दी। वा तो हकबकायगी—काची कंवळी कन्या रो अेकदम औ रूप देखनै। कद होया इतरा बदळाव? अेक साव सैणी लड़की री जीभ गाळी देवण सारू कियां लुळगी? मां साम्हीं ऊभी है ओ ई याद कोनी रैयो उणनै! जीभ गाळी सारू चिन्नीक नीं अटकी, नीं धूजी बल्कै गाळी साव सोरैसांस दिरीजती लागी, जाणै उणनै गाळी देवण री जूनी टेव है।

नैनी-सी टींगरी स्हैर रै सगळा सूं चोखै स्कूल मांय पढती औ कांई रूप लेय रैयी है? टाबरां रै कोई कमी नीं रैय जावै, आज रै समै मुजब हुसियार बणै, इण कारण तो पेट काटनै टाबरां नै चोखी स्कूल मांय पढावै। महीनै-तीन महीनै लाख नैड़ी फीसां भरीजै। भविस सारू जमा पूंजी नीं करनै, टाबरां नै मंहगी स्कूल में पढायनै इण तरीकै सूं भविस सारू इनवैस्ट करै। संस्कारी अर भण्या-पढ्या टाबरां नै ईज साचो धन मानै। सगळी आस अर उमेद री पौध टाबरां री पढाई मांय रोपी है, पण... ? औ कांई होय रैयो है? आंख्यां रै साम्हीं अैड़ा बदळाव होयग्या अर उणनै ठाह ईज नीं पड़ी! इतरी पोल कद आयगी? सुधा

तो इण गुमेज मांय है कै टाबरां नै चोखी सीख दे रैयी है, आपरो फरज पूरो कर रैयी है अर असल मांय तो हाल कीं बीजो ईज है...

देविना उण पछै केई बार बाल कटावण री जिद कर ली है। उणरी इण बात नै सरुपैल में यूं ईज खबत जाणनै अणदेखी करती रैयी, पण अब केई बदळावां सूं भय लागै है। कठैई साच्याणी बालां पर कतरणी नीं मार लै ? इण छोरी री हीमत माथै अबै बैम कोनी रैयो। ठाह नीं किसी धुन मांय जीवै आं नामी स्कूलां रा टाबर।

गज लांबी केश रासि है कै अेकर तो हर कोई पाछो मुड़नै जोयां बिना नीं रैवै। लांबी कद री देविना रा कड़ियां सूंणी जाडा लचका खावता लांबा बाल है। टीवी रै विग्यापन मांय नामी सैम्पू री मॉडल रै होवै उणसूं चोखा। लोग इणरो राज पूछै जद वा पोमीजै अर गुमेज करै खुद री पाळ-पोख री मैणत माथै। जैड़ो बेटी रो रूप चावती, बेटी वैड़ो ईज फूटरो रूप काढ्यो। दब्यो भींनो-सांवळो रंग, नैनी मुंहफाड़, गैरी आंख्यां, जाडा भंवारा, नैनोक नाक अर सगळा सूं मोवणी उणरी केळू रै काम जैड़ी लचकीली काया। उण पर आ सांघणी केशराशि नागण-सी। केईयां री निजरां थंब जावै। जिणसूं ब्यांव होयसी वो तो तकदीरां आळो होवैला... वा केई बातां सोच लेवै। मां रो जीव झट पोमीजै अर निजर लागण रै डर सूं थुथकारो घाल देवै। बडेरियां कैवै कै मां रो जीव सोरो होयां उणरी निजर बेगी लागै अर मां री थुथकारी ई असरकारी होवै।

...आजकालै जीव मांय अणजाण्यो भौ पसरतो जावै है। नैनी सूं नैनी बात उणनै डरपाय देवै अर विचार बेलगाम घोड़ै दांई कठै रा कठै पूग जावै।

''अबै ईज औ हाल है तो धकै कांई होयसी ?''

औ अेक विचार केई आसंकावां मांय डुबोय न्हाखै। स्कूल सूं आवतां ई देविना टूट्योड़ै रूंख दांई पिलंग पर पड़ जावै। उठ नै पाणी पीवै जितरी सरधा नीं बचै तो घर-वस्त काम री कांई आस राखै! टाबरपणै मांय बाई रा अै हाल है तो धकै कियां पार पड़सी ? ट्यूशन जावतै बेटै नै कोई काम भळावै तो उणरा मिजाज घड़ी मांय बिगड़ जावै।

''पैलां कैवणो हो, अब जावतां वगत ईज आपनै काम याद आवै। कैवो तो आपरो काम ईज पैला कर लूं, ट्यूशन रैवण दूं ?'' अैड़ी भाटा बगावती बात कैवतो पग पटकतो टुर जावै या कदैई साफ ईज भाटो फेंक देवै, ''मम्मा! घर रा अै फालतू काम आप खुद ईज कर लिया करौ।''

वा बाको फाड़्यां औ रूप जोवती रैय जावै। जरूरतां सगळां री है, घर सगळां रो है अर जिम्मेदारी री भाजा-दौड़ करै फगत वा अेकली ? अेक नैनै-सै काम री इतरी दोराई ? औ सुणनै उणनै आपरो भविस अंधारै मांय निजर आवै अर मत्तैई खुद रै समै री बातां चितार आवण लागै।

...नैना हा जणै सगळा भाई-बैन घर रो काम ई करता अर टेम मिल्यां भणता-पढता। गांव सूं पांवणो-पई आयो ईज रैवतो। मां अेकला काम करनै थाक जावता। बैन-

भाई उणां री चिंत्या करता अर कीं-न-कीं स्हारो देवता, पण पढाई भी चोखी करता। पैल घर रै काम री ईज अर दूज पढाई री रैयी। काम सूं पढाई मांय कीं आंच नीं आई बल्कै वै हर काम में हुंसियार होया अर जिनगाणी सोराई सूं निभावै। पण वा आज रै अैड़ै सरवण बेटां सूं कांई आस राखै? जवान होवती आ पीढी अधखड़ होवता मां-बापां री भावनावां अर जरूरतां नै कांई समझैला?

दिनूगै बेगा उठनै काम निवेड़नै बस-स्टैंड पूगणो अर बस मांय धक्का खावतां थकां बैंक। बैंक उणनै काठो निचोड़ लेवै। सिंझ्या घरै पूगतां ई घर बाको फाड़्यां डाचा भरण नै त्यार रैवै। छोटा टाबर हा जद सगळो काम सांभ लेवती इण आस माथै कै टाबर मोटा हुयां काम कीं कम होय जावैला अर टाबर ई स्हारो देवै जैड़ा होय जावैला। टाबर मोटा होयां काम ई मोटा होयग्या। अैड़ै में टाबर कीं नैनो-मोटो काम कर लेवै तो स्हारो मिळै। पर उणां नै घर रै कोई काम सूं ई सरोकार कोनी। किरायैदार जियां घरै वापरै। घर खिंडायनै टुर जावै, पाछा आवै जितरै घर ठांणै लाधै। उणां नै कांई दोराई! कुण करयो? आ बात उणां रो जूतराज ई कीं को समझै नीं। जको करै उणरो जीव जाणै, पण वै क्यूं बूझै?

घर अंवेरण सारू कीं नैनो-मोटो काम भोळाय देवै तो माथै में हजार सळ पड़ जावै। जाणै सांप री पूंछ माथै पग दियो होवै। पण औ नीं सोचै कै औ नैनोक काम थांनै इतरो दोरो लागै तो कोई दूजो ई तो हजार कामां सागै औ काम करतो होयसी, जणै ईज तो पाछा बावड़ै जितरै घर जम्यो-जमायो लाधै। उणरै ई तो दोराई होवती ईज होवैला, पण आ बात कैय नीं सकै। किणनै कैवै? सुणण नै बैठो कुण है? कद तांई अेकली खपती रैवैला? घर रा मुखिया आदमीपण रै कारण कीं करणी नीं चावै अर टाबरां रा अै हाल! कैवणी चावै मूंढै माथै, पण कांई ठाह क्यूं रुक जावै। अै बातां सोचतां मगज तप जावै। उफ! कियां इण टाबरां नै चोखी संतान आळा संस्कार देवै। आं रै वैवार सूं कांई आस राखै। आज रो वैवार देखनै आ पीढी ई माईतां पर जीव देवैला, अैड़ी आस राखणी ठीक है कांई?

''देविना बेटा, चार फुलका पोय दै। आज वरत है। कपड़ा धोयसूं जितरै वेळा होय जावैला। फुलका बण्योड़ा होवैला तो झट जीम लेसूं।'' न्हावणघर मांय बड़तां कैयो।

''मम्मा... आप ई अजब बात करी... म्हैं होमवर्क करण नै बैठी हूं अर आपनै औ काम याद आयो। फिजिक्स री फाईल काल री काल सबमिट करणी है अर आपनै फुलका सूझै... हुंह...'' रीसां बळती पग पटकती उठी अर रसोड़ै जायनै ठांव-ठीकर पटकती बेमन सूं तवो चढायो।

वा तो अचंभै मांय रैयगी। मां री रोटी सारू इतरा तेवर! उणां रै खातर मां दिन-रात खटै अर उणरै अेक काम सारू इत्तो कोप? अेक तो इयां दिनां बडै होवतै संयोग रो वैवार अर ऊपर सूं बाई रा अैड़ा करड़ा बोल! मां री गिनार अंगैई कोनी। बिना कैयां मां री मदद करणै री इण बेटी सूं आस ई नीं राखै। वै बातां तो लारै रैई, पण मूंढै सूं कैयां पछै ई बेटी रो औ सुर! कोई बेटी आपरी मां नै इयां कैय सकै?

अब तांई तो औ सुणती आई ही अर खुद ई आपरी मां सारू मैसूस करती आई है कै मां री नैनीक पीड़ बेटियां नै दुखी कर देवै। पण आ उणरी बेटी काळा लोही री कियां? सोचतां-सोचतां अैडी-चोटी रीस रो भभकारो उठ्यो अर सोच्यौ कै आज तो अेक लपीड़ देयनै दिमाग सही कर ईज दूं इणरो। घणा दिनां सूं गम खावै है, खम राखै है अर उत्ती ईज सुधार रै बजाय माथै चढती जावै। मां री हिया-दया है ईज कोनी। निरमम, दयाहीण टाबरां री कैड़ी खेप त्यार होई है।

मावड़ी सूं टाबरां रो इत्तो ईज स्वारथ है कै फगत खुद रो काम टेमसर हुय जावणो चाईजै। उणां रै आपरै काम मांय छेटी पड़तां ई चिड़ता बटकौ भरै ज्यूं दोळा व्है जावै। अेक सूं अेक फैसन आळा कपड़ा, मनभावण खाणो, घूमणो-फिरणो, मोबाइल, लैपटॉप अर दूजा केई खिलका मांय तुस भर कमती रैय जावै तो दोनूं भाई-बेन केई लैक्चर झाड़ न्हाखै। मां-बाप नै केई-केई बातां सुणाय देवै। उणां रा फरज तकात गिणाय देवै। पण मां-बाप कियां इण रुपियां रो इंतजाम करै, कीकर कमावीजै, काम कीकर होवै, कांई अबखायां आवै, कुण करै, कित्तो दोरो होवै, इण बात सूं वै कोई सरोकार नीं राखै। इण बातां रो विचार मन मांय आवै ईज कोनी। अै टाबर फगत खुद-खुद री सोचै। स्वारथी अर आप मतलबी पीढी!

...अैड़ा विचार करतां-करतां काळजै अर हियै मांय लाय बधती जावै है। उण ठौड़ ऊभी ही केई बातां रै सागै ई अखबारां, पत्रिकावां रा केई लेख याद आयग्या जिण मांय 'मां -बाप नै धीजै, संयम री सीख दिरीजै... माईतां री रीस सूं टाबरां माथै सही असर नीं पड़ै...' री बात चितार आई अर वा खून रो घूंटियो पीयनै रैयगी। इण घटना नै स्हैन करनै टाबरां नै सुधरण रो अेक मौको औरूं देवणो चायो।

टीन-एज टाबरां नै केवटण री लाखूं सीख माईतां नै तो देवै, पण टीन-एज आळां रो घर मांय कांई फरज होवणो चाईजै, औ कुण बतावै? अर दूजै कानी ग्यानी लोग आ बात कैवै कै घर रै बडेरां नै मोटा होवता टाबरां माथै पक्की निजर राखणी, नीतर काची उमर मांय तिसळतां टेम नीं लागै। कियां पक्की निजर राखै ? आज रै समै रै माईतां नै कांई करणौ चाईजै अर कांई नीं, औ ईज तो ठाह नीं पड़ै। चोखी पैरेंटिंग री हजार बातां। कानी -कानी कोरा उपदेसां रा घूंट। बडेरां री सीख रो तरीको हटक-औकन, लपीड़-झपीड़ सूं सरू होवै अर बडै लिखारां रा लेख कैवै कै उणां नै मत्तैई पांगरण द्यो। दबाव मत राखो।

पण खुरपी बिना पौध नीं पनपै अर थाप बिना चोखो माटो नीं बणै!

इण कारण सुधा नै लागै कै आज री इण बेहयाई माथै नकचढी नै अेक झपीड़ देयनै अेकर डर सूं धूजायनै अकल ठांणै लावणी ईज चाईजै। वैवार रो अेक पाठ तो आज पढाय ईज न्हाखणो सावळ रैयसी।

कपड़ा धोवती रै अैड़ा विचार तो चालता रैया, पण हाथां सूं अैड़ो कीं नीं हुयो... चमगूंगी हुवै जियां आंख्यां फाड़्यां रैयी। आज छुट्टी रै दिन मोकळा कपड़ा धोवण नै न्हाख दिया अर साफ-सफायां निवेड़ती नै दोपार होयगी। भूख अर अब इण परसंग सूं उणरो माथो भंवळ खावण लाग्यो। अंतस में खळबळी मचगी। जीवड़ो निरासा में डूबण लाग्यो।

...अजै बासण-भांडा री खटर-पटर सुणीज रैयी है। कीं पल नीसर्‌या... दिमाग रो ताप कम होयो... सपना सूं जागी...। हैप अर दया-सी आवण लागी टाबरी पर। इत्ती रीस नीं करणी चाईजै उणनै। टाबर है अजै। निसफिकर है। पढाई में ध्यान राखण आळा टाबर अैड़ा ईज होय जाया करै। लांण रै फाईल भी सबमिट करणी है, पैलां ईज काम रो बोझो होवैला अर वा फेरूं फुलका रो कैय दियो।

जीव दुख्यो बेटी सारू। अणूतै लाड सूं पाळी है बेटी नै। घणो काम कर्‌योड़ी कोनी, इण कारण सोरैसांस रुचि नीं लेवै कामां मांय। टेम आयां माथै पड़सी जद मत्तैई करसी। क्यूं अबार ई झमेला मांय झोंकै! गाभा धोयनै वा खुद ई फुलका पोय काढैला। अेक लुगाई नै चार फुलका पोवतां कांई जेज लागै! भींज्योड़ा गाभा हाथां सूं हेठा न्हाखिया अर रसोड़ै जाय पूगी।

''आघा होवो बेटा! आप फाईल पूरी करलो। रोटियां म्हैं बणाय देयसूं।'' लारली बातां बिसारनै वाणी मांय भरपूर मिठास लायनै कैवतां लाड सूं उणरै माथै हाथ फेरणो चायो, पण वा खाथाई सूं हाथ झाटकती, फुंफकारा मारती बोली, ''मम्मा! अेक बात बतावो! काम ईज करावणो हो तो अैड़ी स्कूल में भरती ईज क्यूं कराई म्हनै? सरकारी स्कूल में ईज राख देवणी ही नीं... पैलां तो आप रोटी रो कैयो अर अब जद रोटी बणाय रैयी हूं तो ना क्यूं देवो? आपरी गत ठाह ईज नीं पड़ै...!'' बच्या सबद मूंढै मांय ईज राखनै भाभड़ा रो भूत होवती, पग पटकती रसोड़ै सूं नीसरी अर कमरै पूगती दीसी।

अेकर पाछी उणरै चमगूंगै हुवण री बारी ही। उणरा तेवर अर अै बोल अर औ रूप आंख्यां फाड़्यां देखती रैयगी। आज औ कांई सुण्यो उणरा कान? बेटी री निरममता सूं उणरी आंख्यां भींजगी। निरुपाय-सी ऊभी ईज रैयगी। कीं हरकत नीं सूझी। अैड़ै वैवार री आस नीं ही। ...उणरै ना देवतां थकां ई मां री चिंत्या राखनै माडाणी रोटी बणायनै जिमावती तो लागतो कै बेटी नै साच्याणी मां सूं प्रेम है। आ उणरै पेट री जाई है। पण अठै तो कीं दूजो ईज निजारो है। अेक बेटी आपरी मां खातर इयां कीकर होय सकै? वा सोच में है कै बेटी मां सूं ऊंधी कियां जाय सकै?

कैवत है कै बेटी मां री छियां होवै, मां रा आधा प्राण बेटी में अर बेटी रा मां में बसै। साच है? इत्तो खारो जबाब नीं देवती तो उणरो जीव कीं ठैहरतो, पण वा सगळा दोख उण माथै न्हाखती कमरै रो आडो भचेड़ती मांय बड़गी। लारै मुड़नै नीं जोयो कै मां

भूखी है! कांई जाणसी? थाकी-पची है, कणै जीमसी? तचकायोड़ी ऊभी रैयगी है मूरत दांई। अपमान री झाळ उठै डील मांय। झींटा पकड़नै अेक थाप री दरकार है, पण...

औ कांई होय रैयो है? कियां सांभै? उणरा टाबर इत्ता संवदेणहीण कियां होवता जावै है? चोखी स्कूल रा अै नतीजा है या समै री बयार अैड़ी ईज है या...। स्कूल रै कुणसै माहौल मांय पळै है? कोई संगत रो असर है या सगळी जमात ईज अैड़ी?

इण पीढी री हर मां रो औ अनुभव है?

केई बातां मगज में बड़ै अर नीसरै। पण सूत्र हाथ मांय नीं आवै।

सुधा हैरान है समै रै अैड़ै बदळाव सूं।

...जिण समै भेळप रै मोटा परिवार मांय दस-पंदरै टाबर पळता तद घर आळां नै घणो ठाह ई नीं पड़तो कै कुण किसै लेवल मांय पूग्यो। भणिया-पढियां री चार आंख्यां होवै, सो मामा-काका मांय सूं अेक दिन टेम काढनै कोई स्कूल मांय दाखिलो कराय आवता। उमर अर नाम रो कोई मुद्दो कोनी। घणकरा री जनम दिनांक जुलाई महीनै री होवती, क्यूंकै कोई नै याद ई कोनी होवतो कै कुण कद जलम्यो। आठ-दसेक टाबरां मांय किण-किणरो बर्थडे याद राखै। नांव या तो घर रो चालतो या जको याद आवतो लिखा दियो जावतो। आधार कार्ड, जलम प्रमाण-पत्र आद हा कोनी। कद स्कूल गिया कद नीं, इण पर विचार करै जितरी वेळा नीं ही। गोरख धंधो अर अग्यानता रै कारण पढाई री कीमत नीं आंक सक्या। विचार तो ध्राव-ढांढा अर खेती-बाड़ी रो करीजतो। कीमती गोधन अर खेती होवती। जीवण उण सूं चालै। पढाई तो पछै री बात ही। इणरै बावजूद जिणनै चोखी लगन ही वो धकै पढतो रैयो अर जिणनै चाव नीं हो वो बेगो ई घर रै कामां मांय हाथ राखण लाग्यो। दोनूं नै ठौड़ ही। असफळता जैड़ौ सबद ई नीं हो।

नां बेजां भाजा-दौड़ अर ना ई बेरुजगारी। टाबरां नै लाड-लडावण री दरकान नीं ही। धान-चून चोखो निपजतो अर जरूरतां अणूती ही कोनी। देसी ठाठ सूं सगळा बडा होया अर चोखा संस्कार लेयनै उण पीढी मांय सूं डॉक्टर, मास्टर, इंजीनियर सगळा बणनै साम्हीं आय ऊभा तद बाबोसा नै ठाह पड़्यो कै पढाई कांई चीज है। दसवीं मैरिट मांय गोपाल भाईसा रो नंबर आयो तद हैडमाडसा घरै आयनै बधाई दी ही। बाबोसा कुत्तर करता हा। दातली हाथां सूं हेठै रखवायनै सावळ मतलब समझायो हो जणै राजी होया अर मौर थपेड़िया। भविस ऊजळो है, इण पर वै केई जेज तांई विचार करता रैया कै खेती रै काम बिना भविस कीकर ऊजळो होय सकै? पछै तो अेक-अेक करनै कड़ूंबै रा केई टाबर नौकरी चढग्या, परणीज्या। बाबोसा नै चोखै भविस री बात घणी पछै समझ में आई ही।

भणी-गुणी वा पीढी अबै आपरै टाबरां पर सो-कीं निसार करै है। आ पीढी आपरै माईतां रै कामां मांय छेटी राखनै आपरै टाबरां पर सगळो ध्यान देवै। उणां रो भविस संवारणै सारू आपरी सकल जिनगाणी खरच करै है। चोखी स्कूल, ट्यूशन, कोचिंग री

पूरी गिनार राखै। बाल मनोविग्यान रा लेख पढतां केई मंथन करै, आपरी सोच अर वैवार मांय केई बदळाव करै, बत्ती सूं बत्ती चीज देवण सारू इंटरनेट रो स्हारो लेवै, पण जका नतीजा साम्हीं आया है, वै अचूंभै सूं भरै जैड़ा है, चिंत्या मांय डुबोवै जैड़ा है।

टाबरां नै लाड-कोड सागै कुम्हार आळी थाप देवण री दरकार तो हर जुग में रैवैला। सुधा नै लागै, घणा अछन-अछन रैयोड़ा टाबर माईतां सारू आपरै फरज री बात पर विचार ईज नीं करै। पढाई में डिस्टर्ब नीं व्है जावै, मार्क्स कम नीं आय जावै, अबार पढाई री उमर है, चिंत्या सारू आपां हा नीं! आ सोचनै अबखायां सूं अळगा राखै, पण वै संवेदना सूं ई अळगा होवता जावै। माईत फगत उणां री सोराई रै विचार मांय इतरा मगन व्है जावै कै टाबरां री नैनी-सी पीड़ नै हजार गुणा मैसूस करण री टेव रै कारण टाबरां नै आपरै दरद सूं अवगत करावणो ई बिसार देवै।

फूलां दांई पाळ पोख रै विचार में टाबरां नै अबखायां सूं अवगत करावणै री अणूती दरकार है...। रोटी बणावती सुधा चिंता-मगन है। मिनख बणावणा है तो अब सूं टाबरां नै नवो पाठ पढाणो पड़सी... जिंदगी सूं औ राज सीखणो पड़सी...

❖❖

हिरदै न्याळी राख

वा भाजती-भाजती अेक गैरा जंगळ कनै पूगगी ही। चाणचक ही जाणै भींत सूं भचीड़ो खावै ज्यूं भचीड़ीजती ऊभी रैयगी। सांस भरीजग्यो... गाभां रो ठाणो ई नीं रैयो... कीं पसेवै सूं लबोथब होयनै डील सूं चिपग्या हा अर कीं अठी-उठी सरकग्या हा। मौरां सूं पसेवो धारोधार बैवतो-सो लाग्यो। थाकैला सूं अमूंझतो जीव बारै नीसरतो लखायो, पण ऊभनै बिसांई लेवै जित्ती वेळा ई नीं ही। तपतै मरुथळ री रेत सूं पगतळियां चम-चम करण लागी ही। सांस इत्ती भरीजगी ही कै अेक ई सांस पूरी नी लिरीजै जित्तै जीव दूजी सारू झांपा घालै। पेट मांय कीं खदबदीजतो-सो गोळो उठ्यो। बळतै धोरै माथै अळगै सूं औ बियाबान नीं दीस्यो हो... लाग्यो अेकाअेक ई जमीं मांय सूं बारै परगट हुयो है। कठै सूं आयो औ... ? दोय छिण पैलां क्यूं नीं दीस्यो... ? डर अर पसेवै सूं हबाबोळ उणरो जीव इयां ई डरूं-फरूं हो अर अब आ लीला! कांई कयास नीं लगा सकी इण लीला रो। लारै जोयो औ देखण नै कै वो हाल ई चेजो करतो आवै है कांई ? कित्तै दिनां सूं वा भाजै उणसूं लार छुडावण खातर, पण लारो नीं छोडै। वो नीं दीस्यो नैड़ी-अळघी भांय तांई तो। औ विचार थंब्यो ई नीं हो कै अेक भळै निजारो दीस्यो। लांबी अथाग बरफ जैड़ी धवळी चादर बिछ्योड़ी ही। निजर जावै जठै तांई। बी आयो। उणनै लाग्यो वा अबै औरूं नीं चाल सकै, बेहोस होय जावैली। ...आगै जंगळ... लारै बरफ... पगां हेठै मरुथळ...अर वा अेकली... साव अेकली... हाको करणो चायो, पण जबान जाणै रुई रो गोळो बणनै मूंढै मांय ईज भमनै रैयगी।

उंआ... उंउंउंउआअआउ...।

ढबगी वा। औ कांई सुर इण जंगळ मांय... औ तो... औ तो नैनै टाबर रो रोवणो सुणीजै! आवाज हवळै ही अर पछै होवती-होवती ऊंची होवती गई। इत्ती नैड़ी सुणीजण लागी जाणै वो रोवण आळो टाबर उणरी खुद री बास्यां मांय है। जाणै गुलाबी-राता पुसपां सूं उणरी खोळ भरीजगी है। गौर करनै जोयो तो कीं नीं हो। खोळ साव रीती ही। ओह!

न्याळी : *सुंदर कारीगरी सूं बणायोड़ा माटी रा आळा-पछीत या टांड।*

अर दोय छिण पछै वो सुर जावतोड़ो कीं अळघो जावतो-सो लाग्यो। पण कोई दिस सूं हाल ई सुणीजै तो है... अठीनै? ना ना... उण दिस... हां। ...ना ...ना लारै सूं आवै। सुणीजतै रुदन रै लारै दो-चार, दो-चार पांवडा वा केई वार केई दिस मांय फिरगी, पण टाबर नीं दीस्यो। थाकनै बैठगी हेठै माथो पकड़ती अर माथो धूणती रैयी।

नैनो टाबर यूं क्यूं रोवै? ...इणरी मां इयां क्यूं छोडनै गई... कठै है वा? जीव मांय कळबळाट मचगी। टाबर सारू झांपा घालण लागी बावळी ज्यूं... उणनै लाग्यो, वो टाबर उणरो ईज तो नीं है? उणरी झील पाछी आयगी है... लारै देख्यो तो लांबो-चवड़ो मरुथळ दीस्यो। दूजी भांत रो भय बड़्यो अर भाजण खातर पांवडा भरया पण गोटिया-मोटियो हुयोड़ी कोई चीज सूं पग आखड़िया अर वा ऊधै मूंढै हेठै पड़ती-पड़ती रैयी अर उण चीज माथै पग पड़तो-पड़तो ई बचग्यो। जोयो तो गुलाबी ओढणियै मांय कीं चुळपुळाट दीसी।

वो नैनो टाबर हो! ओह म्हारी लाडल झील!

गुलाबी फराक मांय हाथ-पग पटकती अर मुळक तो चीन्ही-सी दीसी, पण उणियारो साफ निंगै नीं आयो। उणनै देखनै लाग्यो कोनी कै औ टाबर कीं ताळ पैलां रोयो हुवैला। गुलाबी फराक अर गुलाबी ई पुसप आसै-पासै पड़्या हा। सुखदैणी सौरम उणरी नाक तांई पूगी। आ सौरम झील रै डील जिसी ईज है... हां... साच्याणी। ...सागै न पागै वा इज जॉनसन एंड जॉनसन साबण आळी। झील रै बदन सूं ई इसी गंध आया करती। मीठी-गट साव सैंदी-मैंदी म्हैक री ल्हैर उणनै बेसुध करती-सी व्ही। पण ठाह नीं क्यूं छाती धपळक-धपळक करती रैयी। जीव धपळका क्यूं खावै? झील! म्हारी झील!! झट सूं बास्यां भरणी चाही पण उठै कीं नी हो। हाय-बाय रैयगी। च्यारूंमेर जोयो, पण उठै ई लांबै मरुथळ सूं इधक कीं नी हो अर साम्हीं बेकळू रेत रो ढिग हो। टाबरियै रो रोवणो हाल ई सुणीजै हो। वा बेचेतै-सी होवण लागी। आंख्यां नै माडै खोलनै देखणो चायो... कीं गुलाबी-सो दीसयो... हां गुलाबी रंग री छियां जैड़ी... लारै सरकती गई अर यूं लाग्यो जाणै हाथ सूं उणनै झालो करती कीं कैवणी चावै ही... नीं समझ सकी वो सांनो। आंख्यां बंद होवती जावै ही अर वा हाको करणो चायो, पण नाकाम रैयी। फेर प्रयास करयो, पण अेक अजब-सो अमूंझतो-सो सुर निकळनै रैयग्यो। झ...इ...झी...ल!

वो कोई गुलाबी रंग वायरै सूं रळतो लारै सिरकतो जावै हो अर आंख अदीठ हुयग्यो घड़ी छिणेक मांय। वा आपरो सगळो जोर लगायनै उणनै पकड़णो चायो... पण हेठै पड़ण लागी... कोई जमीं माथै पड़ती नै उणनै बाथां मांय झाल लियो। अहा! अब डर नीं लागै। दर ई डर नीं लागै। चैन आयग्यो दोय घड़ी मांय ई। अैड़ो कांई जादू है इण बास्यां मांय!

...कोई हिलावै-डुलावै है उणनै।

...कीर्ति ...कीर्ति! सुण... होस में आव... कीर्ति... उठ! ...कांई पाछो वो ईज सपनो देख्यो? वा टप करती आंख्यां खोली जाणै कोई सुथरै पुसप री पांखड़्यां हवा सूं हिलकी होवै। अेकदम सावचेत होयनै शिव साम्हीं जोयो, जाणै कीं हुयो नीं हो।

''झील... झील... म्हारी झील...'' वा सवालिया निजरां सूं शिव साम्हीं जोयो।

''...झील आपणी नीं ही... भगवान री लाडल ही... भगवान कनै है... भगवान बुलाय ली...'' कैवतां खुद ई रोवणका सा हुया। कीर्ति साम्हीं यूं कमजोर होवणो नीं है। गळा तांई आयोड़ै रोज नै डूंचो खातो थाम्यो। वा बात कीर्ति रै कानां सूं टकरायनै गमगी। हामळ मांय माथो हिलोरती कीं सोच-विचार मांय डूब्योड़ी-सी अेकदम स्हैज उठी अर छैड़ो-पल्लो सावळसर करती काम सारू रसोड़ै मांय बड़ी। शिव चिंताबासी-सो उणनै जावती नै जोवतो रैयो। आज फेर वो ईज सपनो देख लियो है। कित्ता दिनां सूं औ अेक ई अेक सपनो क्यूं देखै?

झट उठनै फोन सूं कोई नंबर डायल करया।

...अैड़ी ईज चिंत्या आळी मुदरा शिव री उण दिन ही। सुहाग सेज पर... आज ई वो ईज भाव पाछो दीस्यो। उण दिन साव सरल स्हैज सबदां री बातां सूं वा आपरै कुंवारै हियै री बात शिव नै झिलाय दी ही यूं ईज बिना कोई भूमिका रै टप-सी। वो मूंढो ईज जोवतो रैयग्यो हो।

अेकर अेक ज्हैर जैड़ो लीलोछम रंग पूरै ताब सूं आयो हो, पण कीं जेज पछै ईज तेज आभा आळी सुंदरम आळी छिब आई। अैड़ो साच सुणनै ईज शिव इत्ता पवित्तर निजरां सूं जोवै है ज्याणै वा गंगा है। वा हैरान रैयगी शिव नै देखती-सी। उणनै साम्हीं बैठायनै दुनियादारी रा पाठ पढाया अर खुद रै मुख सूं लरजतै विश्वास, हीमत नै खुद मांय उतारतो रैयो।

बिछगी ही वा उण देवता रै पगां मांय, उणनै इत्तो प्रेम दियो कै जिनगाणी हरी-भरी होयगी। भोळो-सो वो उणियारो हियै मांय आय बैठ्यो। मयंक नै वा सिर माथै सजायो हो, पण हियै रै मिंदर रै गरभ मांय शिव री मूरती थापित करी। ...अेक ऊंचो आसण ले लियो जिणरी बरोबरी दुनिया रो कोई मिनख नीं कर सकै। स्यात भगवान ई नीं। मयंक जूण भर यूं ईज नीर निरमळ बैवण लाग्यो हो दोनां रै सागै। अेक झीणी-सी चिलमन हवळै-हवळै ढळण लागी अर वा जिनगाणी री नाव खेवण लागी।

''कित्ता दिनां सूं औ हवाल है?'' डॉक्टर पूछ्यो। वा सवालूं निजर सूं शिव साम्हीं जोयो। कोई गैरी चिंत्या मांय मगन दीस्या। अैड़ी दुखियारी रंगत शिव नै ओपै कोनी। कित्ता खुशमिजाजू हा। अब गम्या-लुक्या-सा रैवै। ठाह नीं किणसूं भाजता फिरै।

झील री याद सूं... ? जीव दुख्यो। झील नै... लाडल बेटी नै इयां कियां बिसराईजै ? डेढ बरस रै टाबर मांय समूची दुनिया समाय जावै माईतां री। जूण री धुरी बण जावै अर वो आधार ई भगवान खोस लेवै तो पछै बाकी कांई रैवै ?

कीं पूछ्यो जिको सुणीज्यो उणनै, पण डॉक्टर नै कांई पड्डूत्तर मिल्यो, कुण दियो औ ठाह नीं। वा तो टगमग जोवती रैयी। सावचेती अर बेचेती रै बिचाळै हींडती रैयी तिरसंकु सुवर्ग रै दांई। केई बार वा और कठैई गम जावै साम्हीं जोवती-जोवती ही। कोई दूजो बिरमांड व्है इण दुनिया सूं परे स्यात। जठै कीं मनचावा, आधा-अधवीटा सुपना, कीं किरचां, उधेड़्योड़ा रिश्ता, जुड़्योड़ा हियै रा कपाट, लुकती-छिपती भींजती कामनावां अर घणोई कीं। साव निजू जीव सूं, विवेक सूं, साच-कूड़ सूं, धरम-अधरम सूं परै। अैड़ी दुनिया हियै मांय नीं बसै तो मिनख स्यात जीव ई नीं सकै या सत री कसौटी माथै उघाड़ो होय जावै। समाज साम्हीं सो-कीं खतम होय जावै। भरोसो, प्रेम, रिश्तो, फरज। अैड़ी दुनिया पाण ई तार-तार हुयोड़ै जीव रै थकां ई केई दुख-विपदावां, अबखायां दोरो ई सही, पण झाल तो चालै।

आ कोई गुलाबी रंगत आळी जग्यां ही। गुलाबी ई परदा.. गुलाबी गुलदस्तो... गुलाबी नरसां री वेसभूसा। सगळां री ही अेक जिसी। गुलाबी कमरै मांय ठाह नीं कित्ती जेज टळवळ होवती रैयी अर पछै उणनै बारै जावण रो इसारो हुयो। वा उणरो मूंढो जोवण लागी। गुलाबी गाभां मांय नर्स ही। अेकर फेर खारी मींट सूं जोवती बारै जावण रो कैयो। वा धब-सी उठी आग्याकारी नैनी टाबर दांई अर टपू-टपू बारै चाल पड़ी।

...वा दुनिया साच्याणी कीं और ही। सजीव दुनिया रै मांय दूजी रंगत बैवती ही सुरंग रै दांई। भगवान उणनै दोय रूपां मांय खुशियां दी। दोनूं रूप उत्ता ईज फूटरा, जित्ती वा अर जित्ती फूटरी उणरी जिंदगी ही। पण सोवणा दिनां रो जे हिसाब राखीजै तो सै सूं बत्ता खुशियां रा दिन हुवै। खुशियां रो कोई लेवल होवै कै आ खुशी अर औ दुख। दुखमय खुशी अर खुशीमय दुख ई तो ठीक ईज हुवै। सौ टका सुख अर सौ टका दुख रो कोई हिसाब नीं व्है। हर खुशी अर दुख सेळभेळ सूं आवै। कीं लावै तो कीं-न-कीं तो लेयनै जावै अर जावै तो कीं-न-कीं तो देयनै जावै। औ ईज तो जीवण नै रंग -बिरंगी, स्हैनसील बणावै।

कीर्ति रै जीवण मांय केई रंग रा छांटा है, वा चावै तो गिण सकै पण नानी कैवै कै खुशियां नीं गिणणी ज्यूं कै रोटियां नीं गिणणी, इणसूं खावण आळां री गिणती कम व्है जावै। ओह! साची वा रोटियां या खुशियां रो हिसाब कदैई नीं करणी चायो, पण उण आदत रो कांई करै जिणमें रोटियां बणावणी सरू करतां ई वा तो गिणणी चालू कर देवै। करणी पड़ै क्यूंकै सासूजी कैवै बत्ती रोटियां नीं बणावणी, अन्न देवता रो अपमान व्है। अब

वा कांई करै ? नानी री मानै या सासू री। मां कैवै सासू सबसूं बडा व्है तो वा सासू नै ऊंचै पायदान माथै बैठाया अर वा रोटियां गिणणी जारी राखी। चलो अन्न रो अपमान तो नीं हुयो अर खावण आळां री गिणती कांई कम व्है। दो जणा कोई गिणती में थोड़ी आवै दो तो फगत आंक व्है। गिणती तो अेक... दो... तीन... चार अर उणसूं लांबी व्है। वा इण गणितीय हिसाब मांय आपरी सगळी समझ उंडेल न्हाखी अर जिंदगाणी रै पानां मांय मांड दी। जिंदगी चाल पड़ी, पण अेक बात रैयगी।

मयंक कैवतो कै उडीक रा दिन नीं गिणणा चाईजै उडीक लांबी-दर-लांबी व्है जावै। गिणणो अर नीं गिणणै रो अजब घनचक्कर मामलो है। वा इण मांय ईज उळझगी ही।

उण समै कॉलेज सूं आवता-जावतां अेक कॉलोनी रै मांय कर निसरणो पड़तो अर इण आव-जाव मांय अेक जोध-जवान रोज ई दीसतो अर निजरां उळझ्यां बगर नीं रैवती। इण निजरां सूं निजरां मांय ही कीं दिरीज्यो-लिरीज्यो कै जद कदैई वा नीं जावती तो वो बेचैन होयनै उडीकतो। निजरां मांय ईज ओळबो देवतो अर वा घबराय जावती। खुद नै घणोई लुकोवती चालती, पण उणरी आंख्यां हियै सूं ईज जुड़्योड़ी ही, दिमाग सूं नीं अर घणकरी हिवड़ै सूं ई संचालित होवती अर निजरां मिळ-मिळ जावती। वा डरूं-फरूं हुयां बिना नीं रैवती, पण हवळै-हवळै संको कम हुयो अर बात-संवाद होवतां कद मेळ-मुलाकातां री जरूरत पड़ण लागी, ठाह ई नीं पड़्यो। दोय-चार मुलाकातां मांय ई फूटरा सुपना, झंकारतो सितार, संगीत री फुलवारी-सी फिल्मी दुनिया मांय विचरण करण लाग्या। बरबस ई जोड़ो बणण रो सुपनो सजाय लियो। ना कोई सूं पूछ्यो, ना ई इजाजत मांगी। न्यारै ईज लोक मांय सैंजोड़ै विचरण कर रैया हा।

अेकर केई दिनां खातर उणरा मां-पापा जयपुर गया हा अर वो आदेस दियो कै आज घरां ई मिलस्यां। घर री थळी मांय पग धरतां शहनाई अर मंगळ गीत कानां मांय गूंज उठ्या हा। बडेरियां रा गीत अर सखियां री मीठी रसभरी छौळां आसै -पासै बरसण लागी। मनोमन बनड़ी-बनड़ा आळै वेश मांय कल्पना करी ही अर मुगध होवतां केई छिण उण छिण नै धोबां मांय भरनै मैसूता रैया हा... जीवता रैया हा। रखड़ी-नथ, हार, पुणच लालचुट सुरंगी बरी साथै उणनै अर सुवरणी शेरवानी, केसरिया साफो, तुर्रा-मौड़ समेत मयंक नै जोवतां सौभाग री सरावणा करी ही। आपरै घर री थळी मांय मिजाजण दांई जीमणो पग पैलां धर्‌यो हो। जद मयंक कैयो कै बनड़ी रो घर मांय पैलमपोत जीमणो पग धरणो सुगनी हुवै। वा अेकटग जोवती रैयगी ही उण स्याणै छोरै नै जिको घड़ी भर मांय ई बनड़ो बणनै पति रै रूप मांय ऊभो हो। जोड़ाजोड़ भाखर-सो भरोसो दियां। केई जेज निरखता रैया अेक-बीजै नै। कित्ती सुहाणी सांझ ही वा।

घर री अेक-अेक चीज कित्तै चाव सूं बताई ही अर वा दूणै चाव अर प्रेम सूं सुणती मदहोस होवती रैयी ही। तस्वीर, गुलदस्तो, मां रो जूनो बगस, दादी-दादी रै समै री केई चीजां अर भळै केई पचासूं चीज-बस्त। अेक मखमली मुलायम गुलाबी रंग रो कपड़ो जिको मां रै ब्यांव सूं ई पैलां रो हो। दादी, मां नै दियो अर कैयो फूटरो सींवायनै पैरजो बींदणी! पण सींवणै रो जोग कदैई नीं आयो हो अर अब मां तेवड़ी ही कै मयंक री बींदणी रै बरी सारू फूटरो लैहंगो सींवाय लेसी। दादी रै हाथ रो है तो चढाव बरी इणनै ई राखसी। इण गुलाबी रंग मांय दोय पीढ़ियां री बडेरण्यां रा सुपना तीजी पीढी खातर सज रैया हा। उण लैहंगा मांय खुद री तस्वीर री कल्पना करती मुळक रैयी ही जित्तै मयंक उणनै ओढणी रूप मांय वो मखमली कपड़ो ओढायनै हवळै से बाथां मांय भरली ही। वा ई कठै मनै कर सकी ही। उण भाव मांय कठैई वासना री गंध नैड़ै-आगी ई नीं ही। बस, अेक पवित्तर अैसास जीव रैया हा अमोल छिणां रै नीसरतै थकां। फेर ई वा लाज सूं मयंक री चवड़ी छाती मांय खुद नै लुकोयली ही। अेक छिण सारू वा कमजोर हुयी अर कीं कामना करती मदभरती डूबती आंख्यां सूं उण साम्हीं जोयो। वो अेक बळतै खीरै-सो व्हालो माथै पर सजायो अर दोनूं हथेळ्यां नै धूजतां होठां सूं दोय घड़ी चूमतो-सो हथळेवा दांई थांब लियो हो अर वा खुद नै सुहागण मानली ही। सारी दुनिया री अबखायां सूं मैहफूज राखण आळी बै बलशाली बाथां चोखै भविस रो भरोसो दियो हो। बास्यां मांय हींडती-हींडती वा पूरो घर टगटग देखती गयी अर हियै मांय उतारती गयी। समचै घर नै बारूंबार फिर-फिरनै देख्यो हो। साळ, बरसाली, ओरा-कमरा नै केई न्यारा-न्यारा कोण सूं देखनै आपरो जीव सोरो करयो हो। आंख्यां मांय उण सपनै रै म्हैल री केई फोटुवां हियै मांय उतार ली ही। सुध-बुध बिसरायनै केई वेळा मयंक री बातां मांय कीं-न-कीं भविस टटोळती रैयी जिको अब साव साफ निंगै आवण लाग्यो हो।

अेकाअेक ई मयंक गळै मांय कीं पैरावण लाग्यो। वा सोने री चैन ही ओम आळै पेंडेंट सागै। अेक सरप्राइज-सो दियो हो अर वा डबडब नैणा सूं ईश्वर नै धिनवाद दियो। मयंक इणरो मतलब पूछ्यो हो। सैं सपाट ई कैय दियो कै मां-पापा अब सगाई-ब्यांव री उंतावळ करै है। पण वो पडूत्तर दियां बिना ई पूरै हक सूं चैन पैरावण री खेचल करतो रैयो। कोई कठैई शक-व्हैम नीं है अब उणनै। बस झटदेणी सो-कीं पक्को करण रो कैय देवैला दोनूं रै माईतां नै। औ ईज पड़ूत्तर हो उणरी बात रो, पण अंकोड़ियो टूटनै हाथ मांय आयग्यो। अेक दूजै नै हैरत सूं आंख्यां फाड़्यां देखता रैयग्या। औ फगत अंकोड़ियो ईज टूट्यो है या... मन? पण कांई ठाह कांई सुण-समझ लियो हो। धकलै ई छिण मयंक अेक मजबूत हांसी हंस्यो अर बोल्यो—

''चैन तो थारी है अर थूं ईज पैंरैला... इण लेख नै कोई नीं मेट सकै बावळी... क्यूं घबरावै... आज ईज सावळ करा देवूंला।''

वा उण चैन-पेंडेंट साम्हीं मोह भरी निजरां सूं जोवती रैयी खासी ताळ। काश! आ चैन पैरनै घरै जाय सकती! अेक मीठी-सी सुळझ भरी दीठ मयंक नै संभळाई अर झट सूं आपरै कान री बाळी खोलनै उणरै अेक कान मांय पैरावण लागी, जाणै वरमाळा पैरावै बींद बींदणी नै अर बींदणी बींद नै।

अबै ठीक! दोनूं जोर सूं अेकै सागै हंस पड़्या अर हंसता ई रैया। हंसी रो ल्हैरको ढब्यो ई नीं हो अर वा उण मुखड़ै नै दोनूं हाथां रै दूना मांय भरनै निरखती हर अक्स नै परस करनै पीवण लागी। अेक-बीजै री बाथां रो स्हारो लियां ईज वै बारणै आया अर वो कैयो कै अंधारा सूं पैलां थनै पूगाय दूं। वा हामळ सूं नस लुळाई।

धकला दोय दिन इसा ईज जिंदगी सूं भर्‌या नीसर्‌या अर पूरी जिंदगी रो खाको खांच्यो। गुलाबी रंग घुळतो उणां रै जीवण मांय कीं बेसी जग्यां लेवण लाग्यो। परी-सी अेक बेटी री कल्पना करी जिणनै गुलाबी रंग री फराक पैरांवाला! वा हंसी ही खिलखिल। गुलाबी ही क्यूं? क्यूंकै थारै गोरां गलबां री रंगत इण बगत गुलाबी ईज है। हंसतो-सो अेक प्रेम भर्‌यो व्हालो देय दियो हो गोरा गुलाबी गालां माथै। वा तो औरूं गुलाबी-राती होयगी ही।

...गुलाबी रंग री रंगत आळी जिनगाणी री अणुती उडीक ही अर उडीकतां-उडीकतां उडीक द्रौपदी रै चीर री भांत लांबी होवती गयी। वा भरसक खेचल करी कै उडीक रा दिन नीं गिणै, पण उणरो जीव उणसूं छानै ई दिन गिणतो रैयो हो। आ बात घणी पछै वा काळजै मांय देख सकी ही। बरजतां-बरजतां वा ई कद हिसाब राखण लागी खुद नै ई ठाह नीं पड़्यो। वै चार-पांच दिन अथाग सुख-सुपनै रा छांटा तो न्हाख्या हा झोळी मांय, पण सागै ई अेक न्यारी भूमिका लिख दी ही।

मयंक रा मां-पापा बैन रै साटै आम्हीं-साम्हीं उणरो सगपण कर आया हा। उणरी बैन जिण सूं प्रेम-ब्यांव करणो चावती ही, वो विदेस मांय चोखी नौकरी करतो हो। वै ब्यांव सारू रजामंद हा, पण आपरी बेटी रै ब्यांव री सरत आडी घालनै मौकै रो लाभ लियो हो। बैन इण बात सूं राजी नीं ही, पण मां-बाप बेटी रै भलै खातर औ मंजूर कर लियो अर करा लियो। बेटी-बेटै री जिम्मेवारी सूं मुगत होवणा चावता हा अर इत्तो चोखो छोरो यूं साव सोराई सूं छोडणौ अकलमंदी नीं लागी। परणीजणो तो मयंक नै है ईज पछै दोराई कांई है? औ तरक उण साम्हीं न्हाख दियो हो। मयंक सूं आ चूक होयगी कै वो समैसर आपरी बात नीं राख सक्यो। ना ई कीर्ति नै बताय सक्यो। ब्यांव री बातां इत्ती उंतावळी-सी हुयी कै वो सही समै नै उडीकण लाग्यो, पण कीं कैय सकै इतरी ना तो छाती व्ही अर ना मौको ई मिळ्यो।

...अर अेक दिन लालबम सुरंगी बरी अर गैणा-लत्ता रै भार सूं दब्योड़ी सुनयना घर री थळी मांय कुळवधू बणी ऊभी दीसी। वो बांगो-सो जोवतो ई रैयो पोसाक पैरण आळी नै अर अेकाअेक ई दरसाव अर यूं सुपनै रै बदळतै रूप नै देखनै। सांवळै अर साव सादै सै नैण-नक्स आळी अब उणरी जिनगाणी रै चकरियै नै नवै तरीकै सूं चलावण खातर साम्हीं ई ऊभी ही। यूं देखतां देखनै सुनयना शरम सूं गुलाबी होयगी, क्यूंकै वो समै मिनख जमारै रै गुलाबी होवण रो ईज तो व्है है। पण वो ऊंडै तांई झेंपग्यो। छि: उणरी निजरां नै सुनयना कांई समझ लियो। वो तो कीर्ति साम्हीं जोवै हो! लाल बरी आळी कीर्ति!

केई महीना लागग्या हा सावळसर सूं जिनगाणी नै खांचनै पटरी माथै लावतां नै। भरपूर खेचल करी ही, पण नकचढ़ी-लाडबावळी सागै निभावणो दोरो होवतो जा रैयो हो। स्याणा मां-बाप नै तो वा बेगो ई तीखो रूप दिखाय दियो हो। वै समैसर समझग्या हा कै बेटी रै ब्यांव सारू स्याणै बेटै री जिनगाणी डूबोय न्हाखी है। मिजाजण रा रंग आकरा ई हुवता जावै हा। ज्यूं-ज्यूं सैंग जणा परोटण री खेंचल करता, त्यूं-त्यूं वा माथै चढती जावै ही। बेटी रै जलम पछै तो अणूती पजावणी ई सरू कर दी। पछै ताबै आवणी मुस्कल होयगी। धीजा राखतां ही केई बारी राड़ होय ऊभी रैवती। किण-किण बात रो गम खावै वो? कीर्ति नै बिसरावणो पैलां ई दोरो हो या यूं कै सुनयना उणरी याद पर झीणो-सो परदो ई नीं न्हाख सकी ही बल्कै वो मानसिक रूप सूं कीर्ति साम्हीं और खांचीजतो गियो। दोय पाटां बिचाळै पजियो-सो कीर्ति नै झुरतो। उणरो माड़ो व्यौवार इत्तो बधग्यो हो कै अेक दिन बेसी कजियो करनै सगळां नै धुरकारती पीहर गई अर मेलियो अेक कागज—छूटकै रो कानूनी कागज। उणरो मगज सोच-सोचनै बीमार सो होवण लाग्यो कै उणसूं कठै-कांई गलती हुई है? पण घणो सोचण रो समै नीं दियो हो सुनयना।

सासरिया इत्ता बजा लगाया हा कै वो तलाक रै कागजां माथै साइन करणै में ईज सांयती समझी। सगळां नै अचूंभो हो कै बेटी सूं ई मोह नीं बापरियो? काळा लोही री लुगाई है कांई? कोर्ट मांय साव ई पल्लो झाटक दियो हो कै बेटी नै बाप ईज राखैलो। उणनै घणो अणेसो आयो, पण औ तो चोखो हुयो कै जूण रो कीं तो स्हारो रैयसी। नीतर तो अबै जिनगाणी मांय पड़्यो ई कांई है?

नैनी 'परी' उणरी जीव री जड़ी ही। इण मांय ई सुख रो भारो बांध लियो वो। अंतस सूं जूझतो सांयती रा दोय छिण खातर ठाह नीं किण सोच मांय बेटी रो नांव ई पछै कीर्ति राख लियो। इण मिस हिरदै री तपत कीं सांयत होय जावती। बेटी रा नाज-नखरा उणनै चैन देवता। घड़ी दोय सोराई रैवती, पण सरीर नै सूळो लागग्यो हो। अेक कीर्ति री ओळूं अर दूजी कीर्ति रै बालपणै सागै ई जूण पूरी कर लेवतो, पण विधि तो बेगी ही आपरै मांड्योड़ै खेल नै पूरण करणी चावती ही। विधना री आंख्यां ऊंची चढ्योड़ी ही, वा ना तो कीर्ति रै टाबरपणै री गिनार करी अर ना ई मयंक री। कीर्ति नै साव अेकली छोडण

रा दिन नैड़ा आवता लाग्या हा उणनै। विगत रै काळजै मांय सूं उण कीर्ति नै काढी, साम्हीं बैठाई अर इण कीर्ति सूं ओळख करावण लाग्यो।

...अब कीर्ति रो सपनै मांय न्हाठणो-भाजणो बंद हुयग्यो हो। बस, अेक कीं धुंबो-सो दीसतो। बिना उणियारै रो सपनो दिखतो। पण उणनै साफ लखायो कै 'वो' घणी पीड़ मांय है। वा ई बिना डरयां उण साम्हीं जोवती, थ्यावस देवती। उणरो दुख इत्तो हो कै वा उण अनाम नै इयां दुखी तो नीं देख सकी।

झील री ओळूं उणनै जीवण नीं देवै। शिव रो जीव ई बावळो-सो हुयोड़ो हो। सगळा सुख साधन हा घर मांय, पण अेकदम सूनियाड़ ही घर मांय। आखी जूण सूनी रिंधरोही दांई... भतूळिया दांई भंवर मांय पजती जावै ही। यादां रा धपळका अब च्यारूंमेर सूं बाळै है उणनै। शिव जैड़ै जीवण साथी रो स्हारो नीं व्है तो वा जीव ई नीं सकै।

किण कदर लीरा-लीर हुयोड़ै हिरदै नै लेयनै इण थळी मांय जीमणो पग धरयो हो। वै दिन कांई ठाह किण बदहाली मांय बेचेतै मांय नीसरया हा। होस आयो तो अेक समझणै इंसान री छियां हेठै ऊभी लाधी। हवळै-हवळै जिनगाणी नै सुख अर खुशियां रै इण पथ पर गुड़ाय ई न्हाखी ही। अेक झीणो पड़दो-सो आयग्यो हो। यादां री मींट मांय कीं ऊंघती सांयत जीवण जीय रैयी ही कै झील उणरी जिनगाणी सूं किनारो करनै उणरो जीव ई सुखोय दियो। फेर अेक अंकोड़ियो टूटग्यो हो। भगवान सूं कड़ियां रो हिसाब सही नीं बैठ्यो हो। हर बार हाथ मांय आयोड़ी कड़ी नै क्यूं तोड़ देवै?

''भगवान री आ कांई ऊंधी टेव पड़ी है जी!'' वा बूझती शिव नै। वो हवळै-सै उणनै कनै बैठायनै थपकियां देयनै सुवाणै री खेचल करतो। अठी-उठी बातां मांय बिलमावतो।

शिव गाडी नै गैलरी मांय पार्क करी अर सदा आळै मुरदै-सै घर साम्हीं जोयो, पण ठग्यो-सो ऊभग्यो।

आज घर री रंगत कीं सोवणी-सी लागी। घर सूं आवतो सुखदायी वायरो झुरझुरी सूं भर दियो।

इयां लागै कै दुखी जीव सुखी होवणो ईज नीं चावै। चीन्है-सै सुख रै लारै आवतै नवै डर नै स्हैन करणो घणो दोरो लागै, अेकर फेर मरणै जिसो। यूं बारूंबार नीं मरीजै। इणसूं चोखो है दुख रै सागै मरता-मरता जीवता जावै। सोराई सूं जीवियां पछै मरणै री अब सरधा खपगी है। पांवडा धकै धरतां ई जी लारै सिरकै हो।

पण मांय बड़्यो तो आडो खुल्लो ईज हो। चौक मांय पिलर सूं माथो भिड़ायोड़ी बैठी कीर्ति री आंख्यां सूं धारोधार बैवती दीसी। अेक कागज रो पानो हाथां मांय फर-फर करतो हेलो देवतो हो। ब्रीफकेस न्हाखनै वो डिगतो-पड़तो अनिष्ट रै भौ सूं भाजनै कनै

पूग्यो। कनै पूगतां निजर पड़ी कै कीर्ति रै खोळै मांय अेक गुलाबी फराक मांय टाबर सूतो है चैन सूं। दोय-ढाई बरसां री बाई ही। अेक कान मांय बाळी रौ झपको पड़्यो, पण इण माथै गिनार नीं करनै शिव उणरै हाथ सूं कागज झांप्यो। कागज सागै अेक चैन पेंडेंट आळी ई आयगी... पेंडेंट ॐ आकार रो हो। बांच्यो—

''अेक कीर्ति नै दूजी कीर्ति री बेसी जरूरत है। अेक वायदो आधो-अधवीटो ई निभायो पर सुख सूं चिर नींद मांय सो सकूंला अबै। पेंडेंट आळी चैन अर बाळी सही हाथां मांय है। ...इंसानियत रै नातै ई शिव नै कांई शुभकामनावां देवूं... सोचूं हूं कै शिव ईज गरल क्यूं पीवै? धकलै जलम मांय शिवकीर्ति रा सगळा गरल म्हारै पांती लिखजै आ विधना नै अरज है...''

❖❖